देश विदेश की लोक कथाऐं — जानवरों की भाषा ः

जानवरों की भाषा

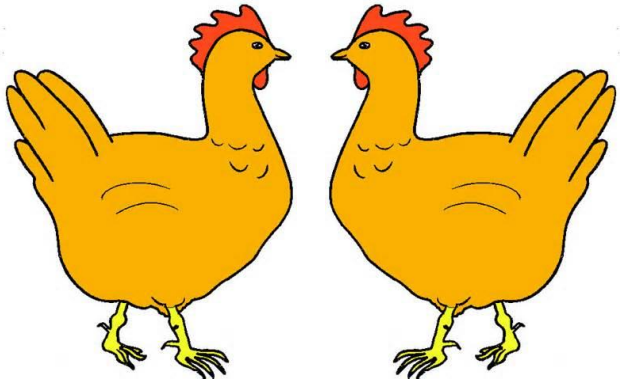

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Jaanvaron Ki Bhasha (Folktales of Animal Language)
Cover Page picture : Two Roosters Conversing
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

मार्च 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4
जानवरों की भाषा 5
1 कृतज्ञ सॉप 7
2 जानवरों की भाषा–1 16
3 जानवरों की बातें और उत्सुक पत्नी 39
4 एक बैल और एक गधा 49
5 जानवरों की भाषा–2 61
6 सॉप की भेंट जानवरों की भाषा 72
7 मारो लेकिन सुनो भी 82
8 चिड़ियों की भाषा 102
9 चार राजकुमार 112

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक 1200 से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से 400 से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब 95 प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई 2018

जानवरों की भाषा

प्रकृति के सभी प्राणी आपस में बात करते हैं और इसके लिये वे सब अपनी अपनी भाषा का इस्तेमाल करते हैं। एक दूसरे की भाषा समझना थोड़ा मुश्किल काम जरूर है पर नामुमकिन नहीं है। इसके लिये लोगों को उनकी भाषा सीखनी पड़ती है। क्या हो अगर दूसरों की भाषा किसी के वरदान से अपने आप ही आ जाये? यह तो कितने मजे की बात है। है न?

यहॉ ऐसी ही कुछ लोक कथाऐं दी जा रही हैं जिनमें या तो किसी के वरदान से या फिर ऐसे ही लोगों ने जानवरों की भाषा समझनी सीख ली है। पर सामान्यतया एक शर्त के साथ कि अगर वे यह बात किसी को बतायेंगे तो वे मर जायेंगे। पर करीब करीब सारी कथाओं में इस वरदान को पाने वाला जानवरों की बातें सुन कर हॅस पड़ता है जिससे उसके पास बैठने वाले आदमी को यह लगता है कि वह क्यों हॅसा क्योंकि उसको वहॉ हॅसने वाली कोई बात नजर ही आती। इससे उसके साथ वाले आदमी को गलतफहमी हो जाती है और वह परेशान हो जाता है। उस गलतफहमी को दूर करने के लिये उस वरदान पाने वाले आदमी को अपनी वरदान वाली बात बनानी पड़ती है कि वह क्यों हॅस रहा था क्योंकि वह उस आदमी को बार बार नहीं टाल सकता। और यह बता कर वह मर जाता है।

इन सब लोक कथाओं में एक बात बड़ी अजीब सी है कि यह समझ में नहीं आता कि वह आदमी मरने के डर से उस वरदान का भेद छिपा क्यों नहीं सका या वह हॅसा ही क्यों। इन कथाओं में सारे ही आदमी इतने बेवकूफ क्यों हैं। लेकिन फिर उनके साथ होता क्या क्या है यह देखने वाली बात है।

इन लोक कथाओं में आखिरी पॉच लोक कथाऐं पहली लोक कथाओं से बिल्कुल अलग है। इनमें से एक लोक कथा में एक लड़के ने जानवरों की भाषा सीखी है यानी कि वह शक्ति उसको वरदान में नहीं मिली। इस कथा में वह मरता भी नहीं है। दूसरी दो लोक कथाओं में भी एक स्त्री को जानवरों की भाषा आती है पर उसका यह गुण किसी को पता नहीं है इसलिये वह उससे अपना फायदा तो कर लेती है पर गलतफहमी की वजह से मारी जाती है।

ये कथाऐं बहुत शिक्षाप्रद हैं। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को सीख देने के अलावा तुम लोगों का भरपूर मनोरंजन भी करेंगी।

1 कृतज्ञ सॉप[1]

जानवरों की भाषा समझने वाली यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के सूडान देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक आदमी कहीं जा रहा था कि रास्ते में उसको दो सॉप लड़ते हुए मिले। वह उनके पास गया तो उसने देखा कि उनमें से एक सॉप की लड़ते लड़ते बहुत ही बुरी हालत हो गयी थी।

उस आदमी को उस घायल सॉप पर बहुत दया आयी सो उसने एक डंडी उठायी और उन दोनों लड़ते हुए सॉपों को अलग अलग कर दिया।

उसने बड़े वाले सॉप को धमकी दी तो वह वहॉ से बड़ी तेज़ी से भाग गया। फिर उसने दूसरे सॉप को डंडी से छू कर देखा कि वह अभी भी ज़िन्दा था कि नहीं। भगवान का लाख लाख धन्यवाद कि वह अभी भी ज़िन्दा था।

सॉप बोला — "बहुत बहुत धन्यवाद आदमी। अगर तुम यहॉ न आते तो अब तक तो मैं मर ही गया होता। तुम्हारे इस उपकार के बदले मैं तुमको एक ताकत देता हूँ कि तुम सारे जानवरों की भाषा समझ सको कि वे क्या कह रहे हैं।"

आदमी ने पूछा — "क्या तुम सच कह रहे हो?"

---

[1] The Grateful Serpent – a folktale from Nuer Tribe, Sudan, Eastern Africa.
Adapted from the book "African Folktales" by A Ceni. English Edition in 1998.

"हॉ बिल्कुल। तुम वह सब जान जाओगे जो मच्छर, चूहा और गाय आदि जानवर बात करेंगे। पर ध्यान रखना कि यह बात तुम किसी से कहना नहीं नहीं तो तुम मर जाओगे।"

यह भेंट पा कर वह आदमी बहुत खुश हो गया। दोनों ने एक दूसरे को प्यार से विदा कहा और अपने अपने रास्ते चले गये।

उस शाम सोने से पहले उस आदमी ने अपने सारे दरवाजे और खिड़कियॉ बन्द कर लिये और सोने के लिये बिस्तर पर लेट गया।

कुछ देर बाद एक मच्छर दरवाजे से अन्दर आने की कोशिश करने लगा। जब वहॉ से उसको अन्दर आने का रास्ता नहीं मिला तो वह खिड़की पर गया। पर वहॉ भी उसको अन्दर आने की कोई जगह नहीं मिली तो गुस्से में आ कर वह बहुत ज़ोर से भिनभिनाने लगा।

"सत्यानाश हो इस जगह का। यह घर तो ताबूत[2] की तरह से कस कर बन्द है। अब मैं इसके अन्दर कैसे घुसूँ?"

घर के अन्दर आदमी ने जब मच्छर की यह बात सुनी तो उसको हॅसी आ गयी। उसकी पत्नी ने उसकी तरफ देखते हुए पूछा — "अरे तुम क्यों हॅस रहे हो?"

[2] Translated for the word "Coffin" – see its picture above.

अपनी दूसरी हॅसी को रोकते हुए आदमी बोला — "कुछ नहीं कुछ नहीं।" और फिर वे सो गये।

कुछ देर बाद एक चूहे ने उसके घर में घुसने की कोशिश की। उसने भी घर का दरवाजा और खिड़कियॉ देखीं पर उसको भी वे घुसने के लिये नामुमकिन लगीं।

चूहे ने थोड़ी देर तो सोचा फिर वह सीधा छत की तरफ भाग गया। वहॉ उसको तख्तों के बीच में घर में घुसने की एक छोटी सी जगह मिल गयी सो वह वहॉ से घर में घुस गया।

उसने खाने वाली चीज़[3] के लिये उस आदमी के घर के सारे कमरे छान मारे। उसके लिये उसने इधर चीज़ें गिरायीं उधर चीज़ें गिरायीं पर उसको खाने वाली चीज़ कहीं नहीं मिली।

यह देख कर वह गुस्से में चिल्लाया — "हॅुह। सत्यानाश हो इस घर का। यह किस तरह का घर है कि मुझे यहॉ चीज़ का एक ज़रा सा टुकड़ा भी नहीं मिल रहा।"

बिस्तर में लेटे लेटे उस आदमी ने भी यह सुना तो वह फिर बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा। उसको हॅसता सुन कर उसकी पत्नी ने फिर पूछा — "अब क्या हुआ? अब क्यों हॅस रहे हो?"

आदमी ने अपने आपको बड़ी मुश्किल से रोकते हुए कहा — "ओह कुछ नहीं, कुछ नहीं। सचमुच में कुछ नहीं।"

[3] Cheese is the prcessed Indian Paneer. It is very commom ingredient of most European and American dishes.

रात गुजर गयी और सुबह हो गयी। जैसे वह रोज करता था उसी तरह उस सुबह को भी वह गायों के बाड़े में गया और उनको हरे हरे घास के मैदान में चराने के लिये ले गया।

रास्ते में सब गायें आपस में बात करती जा रही थीं और वह आदमी बड़े आराम से उनकी बातें सुनता हुआ चला जा रहा था। उसके बाद उनके दूध दुहने का समय आया तो उसकी पत्नी बैठने के लिये एक स्टूल और दूध दुहने के लिये एक बालटी ले आयी।

उसको देख कर सबसे बड़ी गाय रँभायी और बोली — "ओ गायों देखो ज़रा, यह स्त्री हमारा दूध चुराने आ गयी।"

यह सुन कर वह आदमी फिर ज़ोर से हँस पड़ा।

इस बार उसकी पत्नी को गुस्सा आ गया — "तुम फिर हँस रहे हो? क्या बात है कल से तुम हँसे ही जा रहे हो।"

"नहीं नहीं कोई खास बात नहीं, बस ज़रा यूँ ही।" पर उसके पास ऐसा कोई बहाना नहीं था जिस पर कोई दूसरा उस पर विश्वास कर लेता।

उसी समय गाय ने फिर से रँभाना शुरू कर दिया — "नहीं नहीं, आज नहीं। आज मैं अपना दूध अपने बछड़े के लिये रखना चाहती हूँ।" और वह उसकी पत्नी से दूर हट गयी।

आदमी ने उसकी बात फिर से समझ ली तो वह फिर हँस पड़ा।

इस बार पत्नी से रहा नहीं गया तो वह बोली — "तुम क्या सोचते हो कि तुम किसका मजाक उड़ा रहे हो?"

उसने फिर से उसको यह कर शान्त किया — "ओह मेरी प्यारी पत्नी, किसी का नहीं, किसी का नहीं। तुम तो यूँ ही बस ज़रा ज़रा सी बात पर नाराज हो जाती हो...।"

वह बोली — "मैं देख रही हूँ कि कल से तुम एक बेवकूफ की तरह से बरताव कर रहे हो और मुझे बताते नहीं कि क्या बात है।" और अपना स्टूल और बालटी ले कर घर के अन्दर चली गयी।

शाम को वह स्त्री फिर से गायों को दुहने के लिये आयी तो वह बहुत थोड़ा दूध ही दुह पायी सो वह अपने पति से बोली — "देखना ये गायें मुझे दूध ही नहीं दुहने दे रहीं।"

गाय बोली — "क्या तुम यह दूध मेरे बछड़े को पिलाने के लिये ले जा रही हो?"

यह सुन कर तो वह आदमी हँसते हँसते दोहरा ही हो गया।

पत्नी बोली — "यह क्या कोई हँसने की बात है जो तुम इतनी ज़ोर से हँस रहे हो? तुम मेरा मजाक बना रहे हो। तुम मेरी बिल्कुल भी परवाह नहीं करते।"

एक बार फिर गाय रँभायी — "हो सकता है कि उसके पास इसकी कोई वजह हो।"

पति फिर हँस पड़ा। इस बार तो उससे अपनी हँसी रोकी ही नहीं गयी।

पत्नी बोली — "अगर तुम्हारा यही ढंग रहेगा तो मैं गॉव के अक्लमन्द लोगों के पास जाती हूॅ और उनसे कहती हूॅ कि वे रात को हमारे घर आयें। तब मैं उनको अपनी समस्या बताऊॅगी और उनसे तलाक की प्रार्थना करूॅगी।

अब पति के पास कहने को कुछ नहीं था। वह फिर से बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा कि शायद हॅस कर वह अपनी पत्नी को शान्त कर सके पर ऐसा नहीं हुआ। वह शान्त नहीं हुई।

शाम को गॉव के बड़े लोग आये और आग के चारों तरफ बैठ कर उस स्त्री से बोले — "तुमने हमें यहॉ क्यों बुलाया है। बताओ तुम्हें क्या परेशानी है।"

"मेरा पति मेरे ऊपर बिना किसी वजह के हॅसता रहता है। हम सोने जाते हैं तभी भी यह हॅसता है। जब यह जानवर चराने ले जाता है तभी भी हॅसता है जब मैं दूध दुहती हूॅ यह तभी भी हॅसता है। मुझे अच्छा नहीं लगता कि इस तरह से कोई मेरा मजाक बनाये।"

बड़े लोगों ने एक दूसरे की तरफ देखा और हॉ में सिर हिलाया कि हॉ यह स्त्री कह तो ठीक रही है। उन्होंने उसके पति से पूछा — "क्यों भाई क्या बात है? हमें बताओ कि तुम अपनी पत्नी पर हर समय क्यों हॅसते रहते हो?"

पति बोला — "नहीं मैं उस पर नहीं हॅसता।"

"तो फिर तुम किस पर हॅसते हो?"

"मुझे यह बताने की इजाज़त नहीं है।"

"तुम हमारा बेवकूफ नहीं बना सकते। यह क्या बात हुई कि मुझे यह बताने की इजाज़त नहीं है। और इसमें न बताने की इजाज़त की क्या बात है। बताओ तुम किस पर हॅसते हो।"

"अगर मैं थोड़े में कहॅू तो मैं जानवरों पर हॅसता हॅू अपनी पत्नी पर नहीं।"

इस पर उन बड़े आदमियों ने फिर एक दूसरे की तरफ देखा और ना में सिर हिलाया। मामला बिल्कुल साफ था कि यह आदमी पागल हो गया था। इसके बाद वे सब वहॉ से एक दूसरे कमरे में चले गये और एक नतीजे पर पहुॅचे।

उसके बाद वे सब वापस लौटे और बोले — "ओ स्त्री, आज से तुम आजाद हो। तुमको आज से इस आदमी से तलाक दिया जाता है क्योंकि तुम्हारा पति पागल हो गया है।"

पत्नी ने यह सुन कर रोना शुरू कर दिया और पति ने उसे फिर से टालमटोल करके समझाना शुरू किया कि यह सब क्या था। पर बड़े लोगों का फैसला किसी तरह से टाला नहीं जा सका। और अब उनका दिमाग भी बदला नहीं जा सकता था।

इस तरह से उनकी यह शादी खत्म हो गयी। गॉव के लोगों ने उस दुखी जोड़े से सहानुभूति प्रगट की और पति अपनी पत्नी से बचने के लिये वह गॉव छोड़ कर एक अकेली जगह चला गया।

वह वहॉ कुछ दिन रहता रहा कि उसको वही सॉप फिर से मिल गया जिसको उसने बचाया था।

सॉप बोला — "हलो आदमी, तुमसे फिर से मिल कर बहुत खुशी हुई। पर तुम यहॉ इस जगह क्या कर रहे हो?"

आदमी बोला — "काश तुम जानते कि मेरे साथ क्या हुआ है। मुझे तुम्हारी दी हुई भेंट अपने गॉव वालों को बतानी पड़ी और उन सबने सोचा कि मैं पागल हो गया हूँ।

मेरी पत्नी मुझे छोड़ कर चली गयी, मुझे अपना गॉव भी छोड़ना पड़ा। इस बात को कोई नहीं मान सकता कि तुम मेरे लिये कितनी खुशकिस्मती ले कर आये।"

सॉप बोला — "तुम आदमी लोग भी कितने बेवकूफ होते हो। तुम लोग यह तो देखते नहीं कि क्या सच है। तुम लोगों को तो बस जो कुछ ऊपर से दिखायी देता है तुम लोग उसी को सच समझ लेते हो।

सुनो। जो लोग तुमको पागल कह रहे है वे खुद ही सबसे बड़े पागल हैं। उनके बारे में सोचना छोड़ो। तुम एक ऐसी पत्नी से बच गये जो तुमको समझ ही नहीं सकी। अच्छा हुआ कि तुम अपने बेवकूफ साथियों से भी बच गये।

तुमसे ज़्यादा किस्मत वाला और कौन होगा। खुश रहो और देवता तुम्हारी रक्षा करें।"

आदमी ने सोचा "यह तो ठीक है। यह सॉप ठीक कह रहा है। अब मैं एक आजाद और खुशकिस्मत आदमी हूॅ।"

और खुशी से सीटी बजाते हुए वह आजाद चिड़ियों की बातचीत सुनने के लिये एक मक्का के खेत की तरफ चल दिया।

2 जानवरों की भाषा–1[4]

जानवरों की भाषा समझने वाली यह दूसरी लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के घाना देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

बहुत समय पहले की बात है कि एक बार एक आदमी अपनी पत्नी के साथ अकेला रहता था। वे दोनों इतने गरीब थे कि न तो उनके पास खाने के लिये काफी था न पहनने के लिये।

वे केवल गरीब ही नहीं थे बल्कि वे बेचारे किस्मत के भी मारे थे। वे इतने ज़्यादा बदकिस्मत थे कि वे कितनी भी कोशिश करें उनका कोई भी काम ठीक नहीं होता था।

अगर वे कभी कोई बकरी या कोई जानवर या सूअर अपने खाने या पैसे कमाने के लिये खरीदते तो वह मर जाता। और अगर वे खेती करते तो या तो उनकी खेती नष्ट हो जाती या फिर जानवर आ कर उसको खोद कर खा जाते।

एक दिन जब वे अपने टूटे फूटे घर में बैठे हुए थे जिसमें बारिश के मौसम में पानी टपकता रहता था और जब सूरज निकलता था तो धूप आती रहती थी तो पति अपनी पत्नी से बोला — "शायद मेरे पास मेरी गरीबी का जवाब है।"

[4] Animal Language – a folktale from Ghana, West Africa, Africa. Adapted from the Book : "The Orphan Girl and the Other Stories".

उसकी पत्नी बोली — "कोफ़ी[5], मुझे चिढ़ाओ मत। कोई भी हमें हमारी इस गरीबी से बाहर नहीं निकाल सकता। हम लोगों ने सब कुछ तो करके देख लिया। हमें किसी से भी कुछ नहीं मिलता। अब तो मैंने इस बारे में सोचना भी छोड़ दिया है।"

पति बोला — "हमें इस तरह से हाथ पर हाथ रख कर नहीं बैठना चाहिये अरबा[6]। तुम्हीं ने तो मुझसे कहा था कि उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिये और अब तुम ही ऐसी बात कर रही हो?"

पत्नी बोली — "ठीक है ठीक है। तो अब बताओ तुम्हारे पास इस गरीबी का क्या जवाब है?"

पति बोला — "मैं सोचता हूँ, हालाँकि मुझे पता नहीं कि यह मेरा सोचना कुछ काम करेगा या नहीं पर फिर भी।

मैं सोच रहा हूँ कि मैं सरदार कूमा[7] के पास जाऊँ और उससे उन पाम[8] के पेड़ों में से उनका रस निकालने का काम माँग लूँ जिनसे उसके यहाँ शराब निकलती है। और तुम मेरी पत्नी उस शराब को बेचने के लिये बाजार ले जाओ।"

[5] Kofi – a very common name of a Ghanaian man
[6] Araba – a name of a Ghanaian woman
[7] Chief Kumah
[8] Palm trees – its sap is used to make palm wine which is known as Taadee in India.

अरबा बोली — "यह तो बहुत ही अच्छा विचार है पर क्या वह तुमको यह काम देगा?"

पति बोला — "पता नहीं वह देगा भी या नहीं पर इसको भी मालूम करने का एक ही तरीका है कि वहॉ जाया जाये और कोशिश की जाये। और इसमें मेरा कुछ जाता भी नहीं है।

इसके अलावा उसके खेत में तो इतने सारे पाम के पेड़ हैं कि मुझे नहीं लगता कि वह मुझे थोड़े से पाम के पेड़ का रस भी नहीं निकालने देगा।

लोगों का कहना है कि वह बड़ा अमीर और दयालु है और इसी लिये लोग उसको "पैसों का सरदार"[9] कहते हैं।"

इस बीच अरबा अपनी मुर्गियों के उन अंडों को गिन रही थी जिनमें से बच्चे निकलने वाले थे। उसने अपनी ऑखें बन्द की और सोचने लगी कि वह उस शराब से मिले पैसे को कैसे खर्च करेगी।

वह नये कपड़े खरीदेगी और अपने घर की टपकती हुई छत ठीक करायेगी। उसने सोचा कि कल मिसेज नैटी[10] जो पोशाक पहने हुई थी वह नीले रंग में बहुत अच्छी लगेगी। हॉ, नीला रंग। यही रंग तो उसको चाहिये।

अगले दिन बहुत सुबह ही कोफ़ी अपने उस पैसों वाले सरदार के पास उसके कुछ पाम के पेड़ मॉगने चल दिया।

[9] Money Chief
[10] Mrs Natie

जब वह वहॉ पहुँचा तो सरदार बोला — "मेरे बेटे, यह तो बताओ कि मेरे लिये उसमें क्या है? मैं तो एक व्यापारी हूँ और मैंने इतना सारा पैसा केवल अपना पैसा दे कर ही नहीं कमाया है। तो इसमें तुम मुझे यह बताओ कि मेरा हिस्सा कितना है।

जैसा कि हमारे लोग कहते हैं कि कोई मुर्गी अपने पड़ोसी के खाने पर नहीं जीती सो हमको आपस में एक व्यापार करना चाहिये। मैं तुम्हारे हाथ धोता हूँ और तुम मेरे हाथ धोओ।"

कोफ़ी बोला — "मै जानता हूँ कि आप एक न्याय प्रिय आदमी हैं इसलिये जो भी आप कहेंगे मुझे मंजूर है।"

सरदार कूमा बोला — "तो ऐसा करो कि तुम मेरे **10** पाम के पेड़ ले लो और उनका रस निकाल लो। फिर जितना भी पैसा तुम उसकी शराब बेच कर बनाओगे उसको हम लोग बराबर बराबर बॉट लेंगे।

मैं बल्कि तुमको रस इकट्ठा करने के लिये कैलेबाश[11] भी दूँगा जिनमें तुम शराब भर सकते हो। सो अब इन कैलेबाश में से जो कैलेबाश भी तुम्हें चाहिये तुम ले लो।"

इतना कह कर उसने अपने पास रखे सब कैलेबाश उसको दिखा दिये।

[11] Dry outer cover of a pumpkin-like fruit which can be used to keep both dry and wet things – mostly found in Africa – see its picture above.

कोफ़ी तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गया। उससे जितने भी कैलेबाश उठाये जा सकते थे उसने उठा लिये और अपने घर आ गया।

घर आ कर उसने अपनी पत्नी को सरदार से हुई इस बात के बारे में बताया तो वह भी बहुत खुश हुई। उसको लगा कि वह जो कुछ भी सोच रही थी वह बस अब सब सच होने वाला है।

अगले दिन कोफ़ी गॉव के हर आदमी से पहले उठ गया। वह अपने नये काम पर जाने के लिये बहुत बेचैन था। वहॉ जा कर उसने पाम के पेड़ गिराये और उनमें से उनका रस निकाला।

वह सारा दिन बहुत मेहनत से काम करता रहा। यहॉ तक कि शाम को भी देर तक वह अपने काम में लगा रहा जब तक कि उसके पेट में खाने के लिये चूहे नहीं कूदने लगे।

उसने सोचा, "एक बार शराब निकल आये और बिक जाये फिर मैं जितना खाना खाना चाहूँगा उतना खाऊँगा पर अभी तो मुझे काम करना चाहिये।"

सो उस रात कोफ़ी और उसकी पत्नी बहुत देर तक बात करते रहे। उन्होंने इतनी बातें की जितनी शायद उन्होंने पहले कभी नहीं की थीं। वे अचानक बहुत खुश थे और सुबह होने की राह देख रहे थे।

उन्होंने खेल खेले और अगले दिन की तैयारी की कि वह कितने कैलेबाश भर कर शराब निकालेंगे।

अगले दिन सुबह बहुत जल्दी ही कोफ़ी शराब इकट्ठी करने के लिये जंगल चल दिया।

जैसे ही वह अपने पहले पेड़ के पास पहुँचा वह चिल्लाया — "ओह नहीं।" उसने देखा कि उसका तो वहाँ कैलेबाश ही टूटा पड़ा था।

उसने पूछा — "किसने किया यह?"

पर उसको यकीन था कि दूसरे कैलेबाशों के साथ ऐसा नहीं हुआ होगा। ऐसा सोच कर उसने इस पहले पेड़ से निकाली शराब का ज़्यादा दुख नहीं मनाया।

फिर इस उम्मीद में कि दूसरे कैलेबाश तो ठीक ही होंगे वह दूसरे पेड़ की तरफ दौड़ा पर उसकी बदकिस्मती से वह कैलेबाश भी टूटा हुआ था।

इस तरह एक एक करके वह हर पाम के पेड़ के पास गया पर उसको हर कैलेबाश टूटा मिला और उसकी सब शराब जा चुकी थी। अब वहाँ जो कुछ भी बचा था वह थे टूटे हुए कैलेबाश के टुकड़े और उस बिखरी हुई शराब के ऊपर मँडराते हुए मक्खियों और मधुमक्खियों के झुंड।

यह सब देख कर कोफ़ी बहुत परेशान सा अपनी पत्नी के पास अपने घर दौड़ा गया। उसकी पत्नी ने उसको इतना परेशान देख कर पूछा — "क्या हुआ कोफ़ी?"

कोफ़ी बोला — "अरबा, हमारे ऊपर एक बार बिजली फिर गिर पड़ी है। मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि मैं जो कुछ भी करने की कोशिश करता हूँ वह सब बेकार हो जाता है। जब मैं वहाँ शराब इकट्ठी करने गया तो वहाँ सारे कैलेबाश टूटे पड़े थे और कोई शराब नहीं थी।"

अरबा ने आश्चर्य और दुख से कहा — "ऐसी बात न करो कोफ़ी। तुम तो बहुत मेहनती हो और हमारे भगवान को हमारे ऊपर कभी तो दया करनी पड़ेगी। तुमको अपनी कोशिश करते रहना चाहिये।

मुझे यकीन है कि वहाँ उन पेड़ों में शराब थी तो जरूर पर मुझे यह लगता है कि कोई उसको चुरा कर ले गया है और अपनी चाल को छिपाने के लिये वे बरतन तोड़ गया है।"

कोफ़ी धीरे से बोला — "तुम ठीक कहती हो शायद। मुझे ऐसे ही हाथ पर हाथ रख कर नहीं बैठ जाना चाहिये और अपनी कोशिश करते रहना चाहिये।"

अरबा मुस्कुरा कर बोली — "छोड़ देने की बात छोड़ो।"

कोफ़ी ने जब अरबा की मुस्कुराहट देखी तो अरबा फिर बोली — "यही तो वह आदमी है जिससे मैंने शादी की थी।"

इस तरह अपनी पत्नी के उत्साह भरे शब्द सुन कर कोफ़ी फिर से सरदार कूमा के पास और कैलेबाश उधार माँगने गया। उसने पाम के पेड़ों में से रस निकालने के लिये फिर से उनको काटा और उनके

नीचे रस को इकट्ठा करने के लिये उनमें कैलेबाश बॉधा और घर आ गया।

पर अगली सुबह जब वह फिर से रस इकट्ठा करने के लिये उन पेड़ों के पास गया तो वे सारे कैलेबाश फिर से टूटे पड़े थे और फिर से मक्खियॉ और मधुमक्खियॉ उनके रस के ऊपर लड़ रहीं थीं।

इस बार कोफ़ी को विश्वास हो गया कि यह काम किसी चोर का ही था उसकी बदकिस्मती का नहीं।

सो कोफी सरदार कूमा के पास फिर से कुछ और कैलेबाश उधार मॉगने के लिये गया। इस बार उसने शराब इकट्ठा करने के लिये उनको लगा कर यह देखने के लिये वहीं बैठने का फैसला किया कि वह यह देखे कि उसके साथ ऐसा कौन करता है।

कैलेबाश लगा कर वह एक ऐसी जगह छिप कर बैठ गया जहॉ से वह अपने पेड़ों को ठीक से देख सकता था।

वह बड़े धीरज से इन्तजार करता रहा। पर इन्तजार करते करते वह थक गया सो वह सोने ही वाला था कि मच्छरों के झुंड की भिनभिनाहट ने उसको जगा दिया।

अब बजाय इसके कि वह उनको अपनी ठोड़ी और कान पर हाथ मार कर मारता उसने उनको अपना हाथ हिला कर ही हटा दिया। उसको लगा कि अगर उसने मच्छरों को मारा तो शायद चोर को पता चल जाये कि वह वहॉ छिपा हुआ है।

फिर कई घंटों तक कोफ़ी फिर से इन्तजार करता रहा पर वे मच्छर उसको बहुत तंग कर रहे थे। तभी उसने अपने कुछ ही गज पीछे एक डंडी के टूटने की आवाज सुनी।

एक पल के लिये उसको यह सोच कर आश्चर्य हुआ कि वह वहॉ उस गहरे जंगल में था ही क्यों। क्या वे बरतन उसकी ज़िन्दगी से ज़्यादा कीमती थे? अगर वह चोर कोई जंगली जानवर हो जिससे वह नहीं लड़ सकता हो तो? या फिर... ?

तभी उसको एक बरतन के टूटने की आवाज सुनायी दी। उसने चॉद की बहुत ही धुँधली रोशनी में देखने की कोशिश की तो उसको लगा कि एक हिरन उसके एक कैलेबाश के पास खड़ा था।

वह उस हिरन की तरफ देख ही रहा था कि उस हिरन ने एक पेड़ के नीचे से कोफ़ी का एक बरतन खींच लिया और उस बरतन का सारा रस अपने बरतन में पलट लिया और कोफ़ी का बरतन तोड़ कर जमीन पर फेंक दिया।

कोफ़ी उस हिरन के पीछे उसके सींगों को निशाना बनाते हुए भागा। हालॉकि हिरन तुरन्त ही कूद कर वहॉ से भाग लिया पर कोफ़ी उसका पीछा करता ही रहा। उसने सोच रखा था कि आज वह इस हिरन को अपने हाथ से जाने नहीं देगा।

यह दौड़ सुबह तब तक चलती रही जब तक सूरज निकला और इस तरह वे एक ऊॅची पहाड़ी पर जा पहुॅचे।

कि तभी पहाड़ी से नीचे उतरते समय कोफ़ी को जानवरों का एक झुंड अपनी मीटिंग करता मिल गया। उस मीटिंग के बीच में एक शेर बैठा था और कोफ़ी को लगा कि वह उनका राजा था।

भागते भागते कोफ़ी रुक गया। वह बोला — "अब मुझे पता चल गया कि यह जंगली जानवरों का काम है।"

वह हिरन भागते भागते जानवरों के उस झुंड में घुस गया और जा कर शेर के सामने अपने दोनों आगे वाले पैर फैला कर और अपना सिर उनके बीच में रख कर बैठ गया जैसे वह उसको सिर झुका कर प्रणाम कर रहा हो।

शेर बोला — "क्या बात है हिरन? क्या यह तुम्हारे लिये काफी नहीं था कि हमने तुम्हारे ऊपर खुले जंगल में ध्यान देना बन्द कर दिया था? और अब तुमने हमारे घरों में भी हमारा पीछा करना शुरू कर दिया?"

इससे पहले कि शेर अपनी बात खत्म करता हिरन ने हॉफते हुए अपनी कहानी सुना दी। बन्दर जो शेर का सहायक लगता था उसने कोफ़ी से शेर को यह बताने के लिये कहा कि वह शेर को यह बताये कि वह उनके दोस्त का पीछा क्यों कर रहा था।

कोफ़ी ने उनको अपनी कहानी बताने में ज़रा सा भी समय बरबाद नहीं किया।

उसने उनको बताया कि किस तरह उसकी किस्मत उसका साथ नहीं दे रही थी और किस तरह फिर उसने यह सोचा कि ये पाम के पेड़ उसको अमीर बना देंगे। और फिर किस तरह उसको यह पता लगा कि वह हिरन उसकी शराब चुरा रहा था।

फिर उसने शेर से उसकी मीटिंग मे दखल देने के लिये माफी मॉगी और अपने घर अपनी पत्नी के पास वापस जाने की आज्ञा मॉगी।

शेर बोला — "मैं बहुत ही न्याय प्रिय जज हूॅ। और तुम्हारे कहानी कहने से मुझे लग रहा है कि यह हिरन की गलती है कि उसने तुम्हारा पाम का रस चुराया। उसको हमारे दरबार के लिये शराब खरीदने के लिये काफी पैसे दिये गये थे पर उसने उसे तुमसे चुराना ज़्यादा अच्छा समझा।

उसने उस पैसे का क्या किया यह तो मुझे नहीं पता। इसके लिये तो मैं उससे बाद में निपटूॅगा पर तुमको मैं एक बहुत ही खास भेंट देना चाहता हूॅ। यह भेंट तुम्हारी मुश्किलों को दस गुना आसान बना देगी।

और वह भेंट यह है आज के बाद तुम्हारे अन्दर सब जानवरों की भाषा समझने की ताकत आ जायेगी।"

कोफ़ी वहॉ इस इन्तजार में खड़ा रहा कि उसको वह भेंट कब मिलेगी जो उसकी मुश्किलों को दस गुना आसान बना देगी। क्योंकि

उसको ऐसा लग ही नहीं रहा था कि यह भेंट कोई ऐसी भेंट थी जो उसकी मुश्किल आसान कर सकती थी।

शेर बोला — "अब तुम जा सकते हो। अब हम अपने दोस्त के बारे में बात करेंगे कि उसका हमें क्या करना है।"

कोफ़ी ने जानवरों को अपना सिर झुका कर वहॉ से जाते हुए सोचा यह तो बड़ी अजीब सी बात है। यह क्या भेंट हुई पर कहीं शेर नाराज न हो जाये इसलिये उसने शेर को धन्यवाद दिया और वहॉ से जाने के लिये मुड़ा कि शेर बोला — "तुम्हारी भेंट के बारे एक और बात।"

"क्या?" कोफ़ी ने कुछ परेशान सा होते हुए पूछा।

"तुम यह बात किसी को नहीं बताओगे और अगर बताओगे तो तुम मर जाओगे।"

कोफ़ी ने शेर को एक बार फिर धन्यवाद दिया और वहॉ से लौट पड़ा। हालॉकि जब वह लौट रहा था तो वह बहुत ही नाउम्मीद सा लौट रहा था।

वह सोच रहा था — "यह क्या भेंट थी? जानवरों की भाषा समझ कर मैं अपने नुकसान को कैसे पूरा कर पाऊॅगा? यह तो बहुत बड़ा मजाक था मेरे साथ।

और इसके बारे में बात न करना तो और भी बड़ा मजाक है। इससे तो मैं मर जाना ज़्यादा पसन्द करूॅगा बजाय इसके कि मैं इसके बारे में चुप रहूॅ।"

इतनी लम्बी दौड़ से थका हुआ और नाउम्मीद कोफ़ी अपने घर चला गया। उसको डर था कि उसकी पत्नी तो पागल ही हो जायेगी जब उसको लगेगा कि वह इतनी देर तक घर से बाहर रहा।

पर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसने अपनी पत्नी को समझदार पाया कि उसने उससे उसके बाहर रहने को बारे में ज़्यादा कुछ खास नहीं पूछा। वह तो बस उसके वापस आने पर बहुत खुश थी।

वह बोली — "तुम इतनी देर तक थे कहाँ? तुम्हारा चेहरा तो बहुत ही खराब लग रहा है। तुम ठीक तो हो न? क्या तुम चोर को पकड़ सके?"

वह बोला — "वह चोर हिरन था जो हमारी बदकिस्मती बन कर आया था। मैं उसके पीछे भागा भी पर उसको पकड़ नहीं सका।"

उस रात कोफ़ी फिर से अपने पाम के पेड़ों को देखने के लिये गया कि हिरन कहीं फिर से तो उसकी पाम की शराब लेने के लिये न आया हो। पर अबकी बार हिरन वापस नहीं आया था। अगले दिन सुबह उसके सारे कैलेबाश पाम की शराब से भरे हुए थे।

यह देख कर कोफ़ी बहुत खुश हुआ और सारे कैलेबाश घर ले आया और उनको अपनी पत्नी के बाजार ले जाने के लिये तैयार कर दिये।

अब वह रोज सुबह पाम की शराब घर ले आता और उसकी पत्नी उनको अच्छे दाम पर बाजार में बेच देती।

उस रात के बाद यानी जबसे कोफ़ी ने उस हिरन का पीछा किया था उसकी किस्मत अब कुछ कुछ जाग गयी थी। अब उसके पास कुछ पैसे जमा हो गये थे जिनसे वह अपनी जरूरत की कुछ चीज़ें खरीद सकता था जैसे जानवर, बकरियॉ, घोड़े।

उसकी पत्नी भी अब पहले से बहुत खुश थी क्योंकि उसने भी कुछ नये कपड़े बनवा लिये थे ताकि वह अब लोगों में ठीक से दिखायी दे सके।

इस बीच कोफ़ी भी अब जानवरों की भाषा समझने लगा था कि वे क्या कह रहे थे। अक्सर वह उनकी बातें समझ कर मुस्कुरा देता या फिर ज़ोर से हॅस पड़ता लेकिन फिर उसको अजीब लगता क्योंकि कोई नहीं जान पाता कि वह क्यों हॅस रहा है।

एक गरम दिन को तीसरे पहर में अपने खेत को बोआई के लिये जोतने के बाद कोफ़ी नदी पर नहाने गया।

वहॉ उसने सुना कि एक मुर्गी अपने **10** बच्चों से कह रही थी — "यह आदमी इतना बेवकूफ कैसे हो सकता है कि केवल पानी अपने शरीर के ऊपर डालने के लिये ही अपने सारे कपड़े उतार दे।

कोई आश्चर्य नहीं कि उसको तो यह पता ही नहीं होगा कि सोने से भरा एक बक्सा तो इसके अपने मकान के पीछे की तरफ ही गड़ा है।

मैंने पिछली बार उसको वहॉ तब देखा था जब मैं वहॉ कीड़ों के लिये उस जगह को खुरच रही थी। पर फिर मैंने उसको मिट्टी से ढक दिया क्योंकि एक कुत्ते ने मुझे वहॉ से भगा दिया था।"

"हा हा हा हा"। कोफ़ी यह सुन कर हॅसा तो वह मुर्गी उसकी इस हॅसी से चौंक गयी सो वह जल्दी ही चुप हो गया। फिर यह यकीन करने के लिये कि वह कहीं सपना तो नहीं देख रहा उसने अपनी हथेली अपने चेहरे पर कई बार फेरी। उसको लगा कि नहीं वह कोई सपना नहीं देख रहा था यह सब वाकई उसने सुना था।

उसने अपनी छोटी उॅगली अपने कान में डाल कर कान भी साफ किये। उसने देखा कि उसके कान भी ठीक ही थे।

फिर उसने मुर्गी को अपने एक बच्चे को डॉटते हुए सुना — "उस कीड़े को अपने भाई के लिये छोड़ दे मैंने तुझे पहला कीड़ा दिया था न? तुझे बॉट कर खाना सीखना चाहिये।"

यह विश्वास करने के बाद कि उसने सब कुछ ठीक ही सुना था उसने अपना नहाना जारी रखा जैसे कुछ हुआ ही नहीं। नहा धो कर वह घर वापस आ गया।

रात हो जाने के बाद जब सब सो गये तो उसने अपना हल उठाया और अपने घर के पीछे गया और सोने से भरा बक्सा निकाल लिया।

अब क्या था अब तो उसके चारों तरफ सोना ही सोना हो गया था। और उस बक्से में तो इतना सारा सोना था कि वह और उसकी

पत्नी दोनों अपनी सारी ज़िन्दगी बिना कुछ किये धरे गुजार सकते थे।

पर यह सब बात वह अपनी पत्नी को तो नहीं बता सकता था न कि उसको यह कहॉ से पता चला कि वह सोना वहॉ था और फिर उसे कहॉ खोदना था।

उसने वह बक्सा एक सुरक्षित जगह छिपा दिया और जैसे जैसे उसको उसकी जरूरत पड़ती जाती थी वह उसमें से एक एक टुकड़ा घर लाने लगा।

अब क्या था कोफ़ी और अरबा गॉव के ही नहीं बल्कि अपने देश के सबसे अमीर आदमी हो गये। अरबा गरीबों पर बहुत दयालु थी वह उनको अपने पैरों पर खड़ा होने में बहुत सहायता करती थी।

कोफ़ी भी बहुत दयालु था पर वह अपना ध्यान और ज़्यादा पैसा बनाने पर और और ज़्यादा मशहूर होने पर लगा रहा था। उन दोनों की ज़िन्दगी इससे अच्छी हो ही नहीं सकती थी। वे दोनों बहुत खुश थे। जल्दी ही उनके एक बेटा हुआ जिसको वे बहुत प्यार करते थे।

एक रात जब कोफ़ी और अरबा सोने के लिये लेटे तो कोफ़ी ने एक चुहिया दरवाजे पर कराहती हुई सुनी।

एक चूहा उससे बोला — "ये लोग अब बहुत अमीर हो गये हैं। अब इन्होंने अपने सारे दरवाजे लोहे के लगवा लिये हैं।

हम लोगों के लिये पहले अच्छा था जब ये लोग गरीब थे क्योंकि तब इनके लकड़ी के दरवाजे थे और तब तुम्हारी कराहट इन के दरवाजे से हो कर अन्दर जा सकती थी पर अब नहीं जा सकती।"

"हा हा हा हा।" कोफ़ी यह सुन कर हॅस पड़ा। वह भूल गया था कि इस समय वह अपनी पत्नी के साथ था।

सो अरबा ने जैसे ही उसको हॅसते हुए सुना तो वह सोते से जागी और उससे पूछा — "हॅसने की क्या बात है कोफ़ी? क्या तुम फिर से मेरे खर्राटों पर हॅस रहे हो?"

कोफ़ी ने बात टाली — "नहीं नहीं। कुछ नहीं। मैं तो केवल सपना देख रहा था। तुम सो जाओ।" पर उसका हॅसना इतनी ज़ोर का था कि उसने बच्चे को भी जगा दिया।

और अरबा को यह अच्छा नहीं लगा क्योंकि बड़ी मुश्किल से तो उसने बच्चे को सुलाया था।

वह बोली — "यह तुम्हारा हॅसना तुमको किसी दिन किसी मुश्किल में डालेगा। मैंने इसको कई बार टालने की कोशिश की है पर आजकल तो तुम किसी मरे हुए शरीर पर भी हॅसते हो जो रोने वालों की भीड़ में होता है और फिर अपने आप ही बेवकूफ बनते हो।

अब मुझे इसे सुलाने के लिये फिर से दूध पिलाना पड़ेगा। काश तुम इसको दूध पिला सकते।"

"मुझे अफसोस है प्रिये कि मैं यह काम नहीं कर सकता। हा हा हा हा। पर तुम अब सो जाओ।"

जैसी कि एक बहुत पुरानी कहावत है कि जब कुत्ते की मौत आती है तो उसकी सूँघने की ताकत खत्म हो जाती है, खास करके मॉस की जो कि उसका सबसे प्यारा खाना है।

हालॉकि कोफ़ी अब एक बहुत ही अमीर आदमी था पर वह अपनी एक पत्नी से सन्तुष्ट था पर क्योंकि कोफ़ी के गॉव में एक से ज़्यादा पत्नी रखना अमीरी की एक निशानी थी सो उसने निश्चय किया कि वह एक और शादी करेगा।

कोफ़ी ने एक ऐसी सुन्दर लड़की से शादी की जिसको देख कर किसी को भी जलन हो सकती थी। वह लड़की कोफ़ी को अरबा के साथ बिल्कुल नहीं देख सकती थी।

जब वे साथ साथ हॅसते तो वह कहती कि वे उसके ऊपर हॅस रहे थे। जब वे आपस में बात करते तो वह कहती कि वे उसकी बुराई कर रहे थे। वह बस तभी खुश रहती जब वे आपस में लड़ रहे होते।

एक दिन जब वे अपने घर के पिछवाड़े खाना बना रहे थे तो कोफ़ी की दूसरी पत्नी वहॉ आयी तो कोफ़ी ने कुछ कुत्तों को उसके बारे में बात करते सुना।

एक कुत्ते ने दूसरे से कहा — "इसको देखो यह फिर यहाँ है। जबसे यह यहाँ आयी है तबसे हमारा तो खाने का हिस्सा ही कम हो गया है।"

दूसरा बोला — "वह सोचती है कि वह अगर हमारा हिस्सा खा लेती है तो वह बहुत बड़ी हो जायेगी।"

कोफ़ी फिर ज़ोर से हँस पड़ा। अरबा ने पूछा — "तुम किस बात पर हँस रहे हो? क्या तुम्हें पता नहीं कि अगर कोई आदमी अकेला हँसता है तो उसके जबड़े में दर्द हो जाता है?"

कोफ़ी की दूसरी पत्नी बोली — "बहाने मत बनाओ कि तुम जानती नहीं हो कि मैं यहाँ क्यों हूँ। मैं तुमको सारी रात अपने बारे में बात करते और हँसते सुनती हूँ और अब तुम मेरे सामने भी यह सब करने लगे हो। भगवान जानता है कि जब मैं यहाँ नहीं होती हूँ तब तुम क्या करते होगे।"

अरबा ने उसको समझाने की बहुत कोशिश की — "मैं सच कहती हूँ कि मुझे यह नहीं मालूम कि यह क्यों हँस रहा है।" पर कोफ़ी की दूसरी पत्नी कुछ सुनने को तैयार नहीं थी।

कोफ़ी ने अरबा को बचाने की कोशिश भी की पर इससे यह मामला और बिगड़ गया। उसकी दूसरी पत्नी ने यह सोच लिया था कि कोफ़ी अरबा को बहुत प्यार करता था और उसको किसी भी मुश्किल से बचाने के लिये कुछ भी कर सकता था।

इस तरह से कोफ़ी अपनी दो पत्नियों के साथ काफी समय तक रहता रहा और एक दिन उसकी यह हँसी उसके लिये बहुत मँहगी पड़ गयी।

एक बार जब कोफ़ी का बेटा बड़ा हो गया तो इस खुशी में उसने दो दिन की दावत का इन्तजाम किया। उसने दो गाय, दो बकरे और कुछ मुर्गे चुने और उनको मारने के लिये बँधवा दिया।

वह भीड़ में बैठा हुआ था और अपनी पत्नियों की सहेलियों को एक खास नाच नाचते देख रहा था।

उस समय उसने एक गाय को यह कहते सुना — "यहाँ तो कुछ मजा नहीं आ रहा है। यह कब खत्म होगा। मैं तो यहाँ से बहुत जल्दी चले जाना चाहती हूँ।"

तो कोफ़ी का एक कुत्ता बोला — "जब तक तुम इसका आनन्द ले सकती हो अच्छा है कि तुम उसे ले लो क्योंकि कल को तो तुम्हारी हड्डियाँ भी मेरी हो जायेंगी।"

बदकिस्मती से इसी समय कोफ़ी की दूसरी पत्नी अकेले नाच रही थी। कुत्ते की बात सुन कर कोफ़ी को फिर एक बार हँसी का दौरा पड़ गया — "हा हा हा हा।"

उसको हँसता देख कर उसकी दूसरी पत्नी ने नाचना बन्द कर दिया और बोली — "बस, अब मैं और नहीं नाच सकती। सब लोग मेरे गवाह हैं कि तुम मेरे नाच पर हँस रहे हो क्योंकि मुझे नाचना नहीं आता न।"

कोफ़ी ने कहा — "नहीं नहीं। ऐसा नहीं है मुझे तो बस ऐसे ही कुछ याद आ गया था और मैं हॅस पड़ा।"

उसने पूछा — "तो बताओ कि ऐसी कौन सी चीज़ तुमको इस समय याद आ गयी थी जो तुम इतनी ज़ोर से हॅस पड़े।"

पर कोफ़ी तो इस डर से कि वह मर जायेगा उसको यह बता भी नहीं सकता था कि वह क्यों हॅस रहा था। बिना किसी और अप्रिय घटना के यह सब खत्म हो जाये इसलिये कोफ़ी ने उसको वायदा किया कि वह अपनी उस याद के बारे में उसको बाद में बता देगा।

कई दिन तक कोफ़ी की दूसरी पत्नी उससे पूछती रही कि उस दिन दावत के दिन वह क्या सोच कर हॅसा था पर उसने हमेशा ही उसे टाल दिया।

जब उसकी पत्नी और नहीं सह सकी तो वह इस मामले को ले कर गॉव के सरदार के पास पहुॅची।

सरदार ने कोफ़ी से कहा — "कोफ़ी, अब यह मामला काफी दूर तक आ गया है मेरे दोस्त। अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो मैंने इस मामले को अब तक कब का खत्म कर दिया होता।"

कोफ़ी ने सरदार से कहा — "मुझे अफसोस है सरदार कि मैं यह नहीं बता सकता क्योंकि अगर मैंने बताया तो मैं मर जाऊॅगा।"

यह सुन कर सरदार बहुत ज़ोर से हॅसा और बोला — "यह तो एक और अजीब बात है कि तुम क्या सोच रहे हो यह बताने से तुम

मर जाओगे। लगता है कि तुम मजाक कर रहे हो। ऐसा भला कौन है जो यह बता कर मर जायेगा कि वह क्या सोच रहा था?"

कोफ़ी वहॉ चुपचाप खड़ा था उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। अगर उसने अपने हॅसने की वजह बता दी तो वह यकीनन मर जायेगा।

और अगर उसने नहीं बताया तो भी वह मर जायेगा, हालॉकि तब वह अपनी पत्नी की बातों से धीरे धीरे मरेगा।

सो उसने मरने का पहला तरीका चुना। उसने अगले दिन अपने सब दोस्तों को, परिवार वालों को और सरदार को अपने घर अपने मरने की दावत में बुलाया। उसने अब तक बहुत अच्छी ज़िन्दगी गुजारी थी सो वहॉ काफी लोग आये थे।

जब वे सब आ गये तो कोफ़ी बोला — "किसी को मेरे मरने पर रोने की जरूरत नहीं है क्योंकि मैं तुम सब लोगों की वजह से ही मर रहा हूॅ। अरबा, मैं तुमको अपना सारा सोना देता हूॅ। और मेरे बेटे, मैं तुमको अपनी सारी जायदाद देता हूॅ।"

फिर सरदार को सिर झुकाते हुए उसने अपनी हिरन और राजा शेर से मिलने की और शेर की उसके नुकसान भरने के बदले में भेंट देने की कहानी सुनायी।

तब उसने उनको बताया कि वह अपने बेटे की दावत वाले दिन क्यों हॅस रहा था। जैसे ही उसने अपनी बात खतम की वह मर कर जमीन पर गिर पड़ा।

वह दावत तो रोने में बदल गयी। गॉव वाले तो इतने ज़्यादा दुखी और गुस्सा थे कि उनको यह पता ही नहीं था कि वे कर क्या रहे थे जब उन्होंने कोफ़ी की दूसरी पत्नी को पकड़ा और उसको मार दिया।

उसको उन लोगों ने जला दिया और उसकी राख एक थैले में भर कर कौए को दे दी ताकि वह उसको नदी में फेंक दे।

पर कौआ शायद यह जानने के लिये बहुत इच्छुक था कि उस थैले में क्या था सो जब वह उसको ले कर उड़ा तो उसने उस थैले को बीच में ही खोल कर देखा कि उसमें क्या था।

थैले के खुलते ही उसमें से कोफ़ी की पत्नी की राख उड़ कर चारों तरफ बिखर गयी। वह जहॉ भी गिरी लोगों के दिलों में एक दूसरे के लिये जलन पैदा हो गयी।

यहीं से बुरे आदमियों और बुरी चीजों की शुरूआत हुई। इससे पहले यहॉ हर जगह दया और प्यार था।

3 जानवरों की बातें और उत्सुक पत्नी[12]

जानवरों की भाषा जानने वाली लोक कथाओं की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है। तो लो तुम भी पढ़ो इटली की यह लोक कथा अब हिन्दी में।

एक बार एक जवान किसान था जिसकी शादी हो गयी थी पर उसकी आमदनी इतनी कम थी कि वह बेचारा अपनी जरूरतें भी पूरी नहीं कर पाता था।

एक बार जब वह खेत में काम कर रहा था तो उसको एक बहुत बड़ा मशरूम[13] मिला। वह उसको अपने मालिक पादरी के पास ले गया।

पादरी ने उससे कहा — "तुम कल उसी जगह चले जाना जहाँ से यह मशरूम ले कर आये हो। वहाँ जा कर गड्ढा खोदना और उसमें से जो कुछ मिले उसे मुझे ला कर देना।"

अगले दिन वह जवान किसान फिर वहीं गया और गड्ढा खोदा तो उसको वहाँ दो ज़हरीले साँप मिले। उसने उनको मार दिया और अपने मालिक के पास ले गया और उन्हें पादरी को दे दिये।

---

[12] Animal Talk and the Nosy Wife (Story No 177) – a folktale from Italy from its Province of Agrigento. Adapted from the book "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

[13] Mushroom – a kind of vegetable – see its picture above.

उसी शाम को पादरी के पास कुछ ईल मछलियाँ[14] भी लायी गयी। तो उन्होंने अपनी नौकरानी से कहा — "ये ईल मछली उस नौजवान आदमी के खाने के लिये हैं। इनमें से दो पतली वाली ईल निकाल लो और उनको उसके लिये तल दो।"

नौकर ने गलती कर दी। उसने दो ईल मछली की बजाय उस किसान के लिये वे दो सॉप तल दिये जो वह नौजवान ले कर आया था और उनको उस नौजवान किसान को खाने में परस दिये।

जब किसान का खाना खत्म हो गया तो उसकी निगाह नीचे गयी तो उसने देखा तो वहॉ एक बिल्ली और एक कुत्ता बैठे थे। उसने उनको बात करते सुना।

कुत्ता बिल्ली से कह रहा था — "मुझे जितनी बड़ी तुम हो उससे भी ज़्यादा मॉस मिलने वाला है।"

बिल्ली बोली — "नहीं, मुझे सबसे ज़्यादा मॉस मिलेगा।"

कुत्ता बोला — "नहीं, मुझे मिलेगा क्योंकि मैं मालिक के साथ बाहर जाता हूँ और तुम तो केवल घर में ही रहती हो इसलिये मुझे तुमसे ज़्यादा मॉस मिलना चाहिये।"

बिल्ली बोली — "यह तो तुम्हारा काम है कि जहॉ मालिक जाये तुम उनके साथ साथ जाओ, जैसे कि मेरा यह काम है कि मैं घर में रहूँ। इसमें खास बात क्या है।"

[14] Eel fish – a kind of snake-like fish – see its picture above.

आश्चर्य किसान उनकी ये सब बातें समझ रहा था। किसान को विश्वास हो गया कि वे सॉप खा कर ही उसमें जानवरों की भाषा समझने की ताकत आ गयी है।

वहॉ से वह खच्चरों को जौ[15] खिलाने के लिये नीचे घुड़साल में चला गया तो वहॉ उसने उनको बात करते सुना।

उन खच्चरों में से एक खच्चर कह रहा था — "उसको मुझे तुम से ज़्यादा जौ देना चाहिये था क्योंकि मैं उसको अपनी पीठ पर बिठा कर ले जाता हूॅ।"

दूसरा खच्चर बोला — "पर उसको मुझे भी काफी जौ खिलाना चाहिये क्योंकि मैं उसका इतना सारा बोझा उठाता हूॅ।"

ये बातें सुनने के बाद किसान ने जौ को दो बराबर हिस्सों में बॉटा और उनको दे दिया। दूसरा खच्चर बोला — "देखा न मैंने तुमसे क्या कहा था। यह किसान हमको खाना खिलाने में कितना न्यायपूर्ण है।"

किसान उन खच्चरों को खाना खिला कर फिर ऊपर गया तो उसको वहॉ बिल्ली मिली। वह उससे बोली — "सुनो, मुझे पता चल गया है कि जो कुछ हम लोग बात करते हैं वह तुम सब समझते हो।

[15] Barley – a kind of grain – see its picture above.

मालिक ने जब उस नौकरानी से उन सॉपों को मॉगा तो उनकी नौकरानी ने उनको बताया कि वह उसने गलती से तुमको परस दिये थे। और अब मालिक यह जानना चाहते हैं कि तुमको जानवरों की भाषा समझने की ताकत आ गयी है या नहीं।

उन्होंने ऐसी चीज़ें एक जादू की किताब में पढ़ी थीं और अब वह तुम पर दबाव डालेंगे कि तुम यह मान लो कि तुम हमारी भाषा समझते हो।

पर याद रखना तुम इस बात को बिल्कुल साफ मना कर देना क्योंकि अगर तुमने यह मान लिया कि तुम जानवरों की भाषा समझते हो तो तुम तुरन्त ही मर जाओगे और फिर वह ताकत मालिक के पास पहुॅच जायेगी।"

बिल्ली की चेतावनी के बाद उस किसान ने उस पादरी के कई सवाल पूछने के बाद भी यह मान कर नहीं दिया कि उसको जानवरों की भाषा आ गयी थी। आखिर पादरी ने उससे यह जानने की कोशिश छोड़ दी और उसको वापस घर भेज दिया।

जब वह किसान घर जा रहा था तो उसको भेड़ों का एक झुंड मिला। उन भेड़ों के मालिक को यह चिन्ता थी कि हर रात उसकी कुछ भेड़ें गायब हो जाती थीं। उस किसान ने उन भेड़ों के मालिक से पूछा — "तुम मुझे क्या दोगे अगर मैं कुछ ऐसा कर दूॅ कि तुम्हारी भेड़ें फिर गायब न हों।"

भेड़ों के मालिक ने जवाब दिया — "जब मैं यह देखूँगा कि अब मेरी कोई भेड़ गायब नहीं हो रही है तो मैं तुमको एक नर और एक मादा खच्चर दे दूँगा।"

सो वह किसान उस रात उन भेड़ों के साथ रहा और बाहर भूसे पर सोया। आधी रात को उसने कुछ आवाजें सुनी। वे आवाजें भेड़ियों की थीं जो कुत्तों को बुला रहे थे।

एक भेड़िया चिल्लाया — "ओ भाई वाइटस[16]"

कुत्ते ने जवाब दिया — "हॉ भाई निक[17]।"

भेड़िया बोला — "चलो इन भेड़ों के पीछे चलते हैं।"

कुत्ता बोला — "नहीं, आज तुम इन भेड़ों के पास भी नहीं जा सकते क्योंकि आज वहॉ एक चरवाहा सो रहा है।"

इस तरह वह किसान वहॉ एक हफ्ते तक बाहर सोया। इससे वे भेड़िये उन भेड़ों के पास तक नहीं आ पाये। इस तरह उन भेड़ों के मालिक की भेड़ों में से एक भी भेड़ कम नहीं हुई।

नवें दिन उन भेड़ों के मालिक ने अपने बेवफा कुत्तों को मार डाला और दूसरे नये कुत्तों को ला कर रख लिया। उस रात भेड़िये फिर चिल्लाये — "ओ भाई वाइटस, क्या हम भेड़ों के पास आ जायें?"

[16] Vitus – the name of the dog

[17] Nick – the name of the wolf

नये कुत्तों ने जवाब दिया — "हॉ अब तुम लोग आ सकते हो। तुम्हारे दोस्तों को तो मार दिया गया है और अब हम तुमको पीस कर तुम्हारा मॉस खा लेंगे।"

अगली सुबह भेड़ों के मालिक ने किसान को एक नर और एक मादा खच्चर दे दिया। वह किसान उनको ले कर अपने घर चला गया।

जब वह उनको ले कर घर पहुँचा तो उसकी पत्नी ने पूछा कि वह किसके जानवर ले आया है। तो उसने जवाब दिया कि वे जानवर उसके अपने ही थे।"

"पर तुमको ये मिले कैसे?" इसके जवाब में किसान ने कुछ नहीं कहा और वह चुप ही रहा।

कुछ दिन बाद पड़ोस के शहर में एक मेला लगा तो किसान ने सोचा कि वह अपनी पत्नी को वह मेला दिखा कर लायेगा। सो उसने अपनी पत्नी कहा कि वह तैयार हो जाये और वे लोग मेला देखने जायेंगे।

पत्नी खुशी खुशी तैयार हो गयी और वे दोनों मादा खच्चर पर बैठ कर मेला देखने चले। उन्होंने नर खच्चर को भी साथ ले लिया था वह उनके साथ साथ चल रहा था।

नर खच्चर बोला — "मॉ, ज़रा धीरे चलो, मेरा इन्तजार तो करो।"

मादा खच्चर बोली — "आओ, तुम ज़रा तेज़ तेज़ आओ। तुम्हारे ऊपर तो कोई बोझा भी नहीं है जब कि मेरे ऊपर तो दो दो आदमी बैठे हैं।"

उन दोनों माँ बेटे की बातें सुन कर किसान हँस पड़ा। किसान को हँसता सुन कर उसकी पत्नी चौंक गयी क्योंकि उस समय वहाँ कुछ ऐसा था ही नहीं जिस पर हँसा जाता तो फिर उसका पति क्यों हँसा।

सो उसने पूछ ही लिया — "आप किस बात पर हँसे जी?"

किसान ने बात को टाला — "कुछ नहीं। किसी बात पर नहीं। बस मुझे कुछ ऐसे ही हँसी आ गयी।"

पत्नी बोली — "ऐसे ही तो कोई नहीं हँसता। मुझे अभी अभी बताइये कि आप क्यों हँस रहे थे नहीं तो मैं इस खच्चर पर से अभी उतर जाऊँगी और वापस घर चली जाऊँगी।"

किसान बोला — "ठीक है मैं तुमको घर पहुँच कर बताऊँगा। अभी तो तुम मेला देखने चलो।"

वे मेला देखने सैन्टो शहर[18] पहुँचे पर उसकी पत्नी ने उससे फिर पूछना शुरू कर दिया — "अब बताइये मुझे कि आप वहाँ क्यों हँसे थे? ऐसा क्या था वहाँ हँसने वाला?"

किसान ने फिर कहा — "मैंने कहा न जब हम घर वापस जायेंगे तब बताऊँगा।"

[18] Cento city is in Italy

इस पर पत्नी ने कहा — "मैं मेला तब तक नहीं घूमूँगी जब तक आप मुझे यह नहीं बतायेंगे कि आप वहाँ किस बात पर हँसे थे। नहीं तो पहले घर चलिये।"

पति ने उसको बहुत समझाया पर वह अपनी जिद पर अड़ी रही सो उसको अपनी पत्नी को ले कर मेला छोड़ कर घर जाना ही पड़ा। घर पहुँचते ही वह फिर अपने पति के पीछे पड़ गयी। तब वह बोला — "अच्छा पहले पादरी के पास चलो फिर मैं तुम्हें बताऊँगा।"

जल्दी से पत्नी ने अपने चेहरे का परदा हटाया और दोनों पादरी के पास गये। जब पति पादरी का इन्तजार कर रहा था तो उसने सोचा — "अब तो मुझे इसे बताना ही पड़ेगा और फिर मैं मर जाऊँगा। यह मेरी बदकिस्मती होगी पर क्या करूँ। पहले मैं अपने पाप स्वीकार कर लूँ और कम्यूनियन[19] ले लूँ तब मैं शान्ति से मर सकूँगा।

जब वह यह सोच रहा था तो उसने मुर्गियों को थोड़ा सा दाना फेंका। दाना फेंकते ही मुर्गियाँ उसके पास जमा हो गयीं पर उनसे पहले मुर्गा अपने पंख फड़फड़ाता वहाँ आ गया और उसने उन मुर्गियों को वहाँ से भगा दिया।

[19] First I should make confession and perform communion (see its picture above). Communion is a Christian ceremony in which bread is eaten and wine is drunk as a way of showing devotion to Jesus Christ.

किसान ने मुर्गे से पूछा — "तुमने मुर्गियों को दाना क्यों नहीं खाने दिया?"

मुर्गे ने कहा — "मुर्गियों को वही करना चाहिये जो मैं कहता हूँ चाहे वे कितनी भी सारी क्यों न हों। मैं तुम्हारी तरह नहीं हूँ जिसकी केवल एक पत्नी है और वह भी उससे सँभलती नहीं है। वह तुम्हारे ऊपर राज करती है और तुम उसको केवल यह बताने के बाद ही मर जाओगे कि तुम हमारी भाषा समझते हो।"

किसान ने इसके ऊपर विचार किया और फिर मुर्गे से बोला — "तुम तो मुझसे कहीं ज़्यादा होशियार हो।"

कह कर उसने अपनी कमर से अपनी पेटी निकाल ली, उसको पानी लगा कर थोड़ा सा गीला किया ताकि वह थोड़ी से मुलायम और लचीली हो जाये और फिर अपनी पत्नी का इन्तजार करता बैठ गया।

उसकी पत्नी वापस आयी और बोली — "पादरी जी आ रहे हैं। अब बताइये कि आप क्यों हँस रहे थे।"

पति ने अपनी पेटी उठायी और उस पेटी से उसे तड़ातड़ मारना शुरू कर दिया। पत्नी ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगी।

इतने में पादरी जी आ गये और पूछा — "कौन कनफैशन[20] करना चाहता है?"

[20] To confess – in Christianity people confess their sins at time to time before the priest. A confession is a statement made by a person or a group of people acknowledging some personal fact that the

पति तुरन्त बोला — "मेरी पत्नी!"

पादरी को इशारा मिल गया सो वह वहॉ से लौट गया। पत्नी उस पादरी के पीछे पीछे चली गयी। थोड़ी देर बाद पत्नी वापस आयी तो उसके पति ने कहा — "तुमने सुना कि मैं तुमसे क्या कहना चाहता था?"

पत्नी रोते हुए बोली — "मुझे आपसे कुछ नहीं पूछना। मैं कुछ नहीं जानना चाहती।"

और उसके बाद से उसने फिर पति के कामों में बेकार ही बीच में बोलना छोड़ दिया। इस तरह मुर्गे ने उस किसान की जान बचायी।

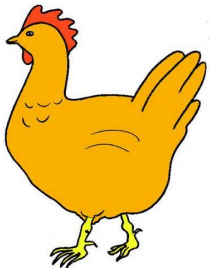

person (or the group) would ostensibly prefer to keep hidden. Normally it is done in a Church before some priest but hidden from the confessor, so both do not see each other.

4 एक बैल और एक गधा[21]

जानवरों की भाषा जानने की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये एशिया महाद्वीप के फारस देश की अरेबियन नाइट्स की कथाओं से ली है।

इस कथा में देखने वाली बात यह है कि जानवरों की भाषा जानने का भेद बताने पर मर जाने की जो शर्त है उससे हमारी कथा का हीरो कैसे बचता है।

एक बार एक सौदागर था जो बहुत अमीर था। उसके पास बहुत सारे नौकर चाकर और जानवर थे। उसकी एक पत्नी थी और परिवार था और वह अपने खाने पीने के लिये खेती करता था।

उसके पास जंगली जानवरों और हर तरह की चिड़िया की बोली समझने की ताकत थी। अपने मरने के समय वह अपनी इस ताकत को किसी को भी भेंट कर सकता था। इसलिये उसने इस बात को किसी को बताया नहीं था। सबसे छिपा कर रखा हुआ था।

एक दिन वह अपने नौकरों के साथ बैठा हुआ था और उसके बच्चे उसके आस पास खेल रहे थे। उसने बैल को गधे से कहते सुना — "तुम्हारे नीचे सब साफ और ताजा रहता है। लोग तुम्हारी

[21] The Tale of the Bull and the Ass – Adapted from the book "More Stories From the Arabian Nights" by Richard Burton. 1957. It may be read in English at http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/arabian-3/51-bull-ass.htm also.

नौकरी में लगे रहते हैं। वे तुमको साफ छना हुआ बाजरा खिलाते हैं, पीने के लिये साफ पानी देते हैं।

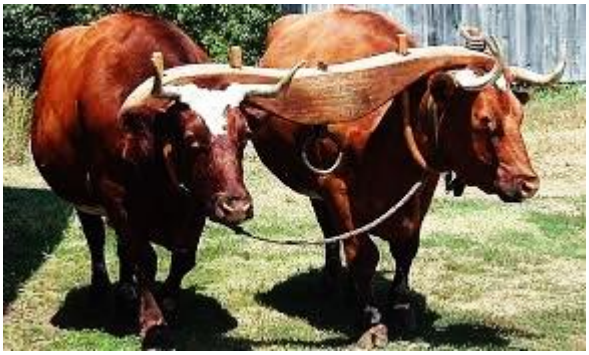

जबकि मेरे साथ ऐसा नहीं है। वे मुझे काम के लिये बीच रात में भी ले जाते हैं। मेरे गरदन पर जुआ[22] रखते हैं और मैं सुबह से शाम तक जमीन जोतते जोतते थक जाता हूँ।

उसके बाद भी वे मुझसे अच्छा बरताव नहीं करते। मुझे एक बाड़े में बन्द कर देते हैं और मेरे सामने वे मिट्टी मिला भूसा और दाना फेंक देते हैं।

फिर मैं तो धूल मिट्टी में पड़ा रहता हूँ जबकि तुम साफ जगह रहते हो। मैं अक्सर ही भूखा रहता हूँ जबकि तुमको भर पेट खाना मिलता है।"

गधा बोला — "ओ बैलों के पिता, पहली बात तो यह है कि तुम बहुत सीधे हो और दूसरे तुमको सलाह देने वाला भी कोई नहीं है। तुम ताकत और उत्साह से भरे हुए हो और तुम अपने मालिक के साथ नम्र भी बहुत हो। तुम दूसरों को सुख पहुँचाने के लिये बहुत ज़्यादा तकलीफ तक सह जाते हो।

[22] Translated for the word "Yoke". Yoke is wooden log kept on the necks of bulls to manouvre them to take work from the – see its picture above.

अब तुम मेरी बात सुनो और जैसा मैं कहता हूँ वैसा ही करो। जब वे तुमको गन्दी जगह में बाँधते हैं तब तुम अपने माथे से जमीन को खुरच कर उनको यह दिखाते हो कि तुम वहाँ बहुत सन्तुष्ट हो।

जब वे तुम्हारी तरफ सूखा खाना फेंकते हो तब तुम उसके ऊपर बहुत लालची हो कर गिरते हो और उसको बहुत जल्दी से खा जाते हो।

पर अगर तुम मेरी बात मानोगे तो तुम ज़्यादा अच्छे रहोगे और मुझसे भी ज़्यादा अच्छी ज़िन्दगी गुजारोगे।

तो अब तुम मेरी बात ध्यान से सुनो। जब वे तुमको खेत पर ले जायें तो तुम बस लेट जाना और जब तक न उठना जब तक कि वे तुमको बहुत ज़ोर ज़ोर से हिला कर न उठायें। और अगर तुम उठ भी जाओ तो फिर दोबारा लेट जाना।

जब वे तुमको खाना दें तो उसको केवल सूँघ कर छोड़ देना। उसको छूना भी नहीं। बस अपने भूसे और दाने से ही खुश रहना। तुम इसको **3–4** दिन करके देखो तब तुमको शायद थोड़ा आराम मिलेगा।"

बैल ने सोचा कि गधा उसका अच्छा दोस्त था सो उसने उसको धन्यवाद दिया और बोला — "तुम ठीक कहते हो गधे भाई।"

अगले दिन किसान उस बैल को उसकी गरदन पर जुआ रख कर खेत ले गया और उसको काम में लगा दिया। पर बार बार वह बैल उस हल को झटका देता था इस पर उस किसान ने उसको बहुत

मारा तो उसने अपनी गरदन पर रखा जुआ नीचे गिरा कर तोड़ दिया।

वह किसान तो यह सब देख कर हैरान रह गया। उसने बैल को खाने के लिये दाना और भूसा दिया पर बैल ने उसको केवल सूँघा और उसको वहीं छोड़ कर उससे जितनी दूर हो सकता था उतनी दूर जा कर लेट गया। सारी रात उसने बिना खाये ही निकाल दी।

अगले दिन जब किसान आया तो उसने सारा का सारा भूसा और दाना ऐसा का ऐसा ही पड़ा देखा और बैल को बिना खाना खाये अपनी पीठ के बल लेटा देखा तो वह उसके बारे में चिन्ता करने लगा।

उसने सोचा कि बैल बीमार लगता है इसी लिये यह कल खेत भी नहीं जोत सका और ठीक से खाना भी नहीं खा सका। उसने जा कर सौदागर से कहा कि लगता है बैल बीमार है उसने कल खेत पर भी काम नहीं किया और कल से खाना भी नहीं खाया।

सौदागर सब समझ गया कि ऐसा क्यों हो रहा था क्योंकि उसने कल बैल और गधे की बात सुन ली थी। सो वह बोला — "उस गधे को ले जाओ और हल का जुआ उसकी गरदन पर रख दो। बैल का काम उस गधे को करने दो।"

सो उस दिन सारे दिन बैल का काम गधे ने किया। जब शाम को गधा घर वापस आया तो मुश्किल से हिल डुल पा रहा था।

जबकि बैल सारा दिन आराम से रहा और अपना दाना और भूसा खाता रहा। उसने इस सबके लिये गधे को बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

जब गधा बाड़े में लौट कर आया तो बैल उसकी इज़्ज़त में उठ कर खड़ा हो गया और बोला — "धन्यवाद गधे भाई। आज केवल तुम्हारी वजह से ही मैं सारा दिन आराम कर सका और मैंने अपना खाना भी बड़ी शान्ति से खाया।"

पर गधे ने इस बात का उसे कोई जवाब नहीं दिया क्योंकि वह बहुत थका हुआ था और बैल को अपनी सलाह देने के लिये पछता रहा था कि केवल उसी की सलाह से आज उसको बैल का काम करना पड़ा। फिर उसने उसको अपनी जगह लौटाने का फैसला किया।

जब गधा अपनी जगह लौट आया तो सौदागर चॉदनी का आनन्द लेने के लिये अपनी छत पर आया। उसने गधे को बैल से कहते सुना — "कल तुम क्या करोगे?"

बैल बोला — "जैसा तुमने मुझे करने के लिये कल कहा था वैसा ही मैं कल भी करूँगा।"

गधा बोला — "नहीं, कल तुम वैसा नहीं करोगे।"

"क्यों?"

"अब मै तुमको एक और अच्छी सलाह देता हूँ। क्योंकि आज मैंने मालिक को यह कहते सुना है कि "अगर बैल काम करने के

लिये न उठे तो उसको कसाई को दे आना ताकि वह उसको काट सके और उसका मॉस गरीब लोगों को दे सके।"

इसलिये अब मुझे तुम्हारे लिये डर लगता है। इसलिये तुम्हारे लिये अच्छा तो यही होगा कि कल तुम काम पर चले जाओ।" बैल ने गधे को इस सलाह के लिये भी धन्यवाद दिया और ज़ोर से रॅभाया।

अगली सुबह वह सौदागर अपनी पत्नी के साथ उस जगह गया जहॉ वह बैल बॅधा हुआ था। तभी किसान उसको खेत पर ले जाने के लिये वहॉ आया तो उसका रोज का सा बरताव देख कर वह एक बार फिर आश्चर्य में पड़ गया।

यह देख कर सौदागर इतनी जोर से हॅसा कि वह तो लेट सा ही गया। उसकी पत्नी ने पूछा — "तुम इतना क्यों हॅस रहे हो जी?"

सौदागर बोला — "कोई खास बात नहीं। मैं एक ऐसी छिपी हुई बात पर हॅस रहा हूॅ जो मैंने सुनी है पर मैं तुमको तब तक नहीं बता सकता जब तक मैं मर न रहा होऊॅ।"

पत्नी बोली — "तुमको यह बात मुझे बतानी ही होगी चाहे तुम उसकी वजह से मर ही क्यों न जाओ।"

वह बोला — "क्या कह रही हो तुम? क्या तुम चाहती हो कि मैं मर जाऊॅ? मैं तुमको अपनी मौत के डर की वजह से जानवरों और चिड़ियों की भाषा नहीं बता सकता।"

पत्नी को पति की इस बात पर विश्वास ही नहीं हुआ कि वह जानवरों और चिड़ियों की भाषा जानता था और उसको बताने से वह मर भी सकता था।

इसलिये वह बोली — "अल्लाह कसम, लगता है कि तुम मुझ से झूठ बोल रहे हो। तुम मेरे ऊपर हॅस रहे हो। और क्योंकि तुम मुझे बता नहीं रहे हो इसलिये मैं अब तुम्हारे साथ नहीं रहने वाली। मैं जा रही हूॅ।" और उसने रोना शुरू कर दिया।

सौदागर बोला — "क्या हो गया है तुम्हें? कम से कम अल्लाह से तो डरो और मुझसे कोई और सवाल मत पूछो।"

"पर तब तुम मुझे यह तो बताओ कि तुम हॅस क्यों रहे थे?"

वह बोला — "जब मैंने अल्लाह से जानवरों और चिड़ियों की बोली समझने की प्रार्थना की उस समय मैंने कसम खायी थी कि मैं अपना यह भेद मरते दम तक किसी को नहीं बताऊॅगा।"

पर उसकी पत्नी तो कुछ सुनना ही नहीं चाहती थी। उसने उससे फिर उस बात को बताने की जिद की — "मुझे इस बात से कोई मतलब नहीं कि तुम्हारा क्या होता है। मुझे तो तुम बस इतना बता दो कि बैल और गधे के बीच में क्या भेद की बात हुई।"

जब उसकी पत्नी किसी तरह से नहीं मानी तो उसने उससे कहा कि वह अपने माता पिता को, दूसरे सगे रिश्तेदारों को और पड़ोसियों को वहॉ बुलवा ले ताकि सब लोग यह जान लें कि वह क्यों मरा।

उसके ऊपर इस बात का भी कोई असर नहीं पड़ा और उसने ऐसा ही किया। उसने अपने माता पिता और सभी सगे रिश्तेदारों को और पड़ोसियों को अपने घर बुलवा लिया।

फिर सौदागर ने काज़ी और अपने वकील को बुलवाया और अपनी वसीयत तैयार की क्योंकि वह एक भेद खोलने जा रहा था और उस भेद को खोलने के बाद वह मर जाता।

सौदागर अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता था क्योंकि वह उसकी चाची की बेटी थी और उसके बच्चों की मॉ थी। उसको उसके साथ रहते **20** साल हो गये थे।

जब सब लोग इकट्ठा हो गये तब वह बोला — "मेरे पास एक आश्चर्यजनक कहानी है अगर उसको मैं किसी को भी बताऊॅगा तो मैं मर जाऊॅगा।

इसलिये पहली बात तो यह है कि इस औरत को समझाओ कि यह अपनी जिद छोड़ दे क्योंकि इससे इसका पति और इसके बच्चों के पिता मर जायेगा।"

पर पत्नी बोली — "पर मैं अपनी बात से नहीं मुकरने वाली चाहे मेरा पति मर ही क्यों न जाये। मुझे तो यह जान कर ही रहना है कि उस बैल और गधे के बीच में क्या भेद की बात हुई।"

यह सुन कर सौदागर उठा, उसने वज़ू किया और अपनी नमाज[23] पढ़ी और अपना भेद बताने और मरने के लिये वापस लौटा।

अब हुआ यह कि उस सौदागर के पास **50** मुर्गियॉ और एक मुर्गा भी था। वह उनसे विदा लेने के लिये उनके बाड़े में गया। वहॉ उसने अपने कई कुत्तों में से एक कुत्ते को मुर्गे से बात करते हुए सुना। वह मुर्गा उस समय एक मुर्गी के ऊपर से दूसरी मुर्गी के ऊपर कूद रहा था।

कुत्ता कह रहा था — "तुम कितने नीच हो। जिसने भी तुमको पाला होगा वह तुमसे कितना नाउम्मीद होगा। क्या तुमको आज जैसे दिन भी, जैसा कि आज का दिन है, अपनी करनी पर शरम नहीं आती?"

मुर्गा बोला — "आज के दिन में क्या खास बात है। क्या हुआ आज?"

कुत्ता बोला — "क्या तुम्हें मालूम नहीं कि आज हमारे मालिक मरने जा रहे हैं? उनकी पत्नी ने यह जिद पकड़ रखी है कि वह अपना भेद उसको बतायें और अगर उन्होंने उसको वह भेद बताया तो फिर वह मर जायेंगे।

[23] Vazoo and Namaaz are the parts of a Muslim's daily worship which a Muslim does normally five times a day. hile doing Vazoo he cleanses himself with water and then worships Allah.

हम कुत्ते तो उनके लिये दुख मना रहे हैं और तुम खुशी मना रहे हो। यह समय क्या खुशी मनाने का है यह समय तो दुखी होने का है।"

मुर्गा ज़ोर से हॅसा और बोला — "तब फिर ऐसा लगता है कि हमारे मालिक में अक्ल की कमी है। अगर वह अपने मामले एक पत्नी के साथ नहीं सिलट सकता तो उसकी पत्नी इस लायक ही नहीं है कि उसके साथ आगे रहा जा सके।

मुझे देखो, मेरे पास **50** मुर्गियॉ हैं। मैं एक को खुश करता हूॅ तो दूसरी को छेड़ता हूॅ, एक को भूखा रखता हूॅ तो दूसरी को ज़्यादा खिलाता हूॅ। और मेरे शासन में सब मुर्गियॉ मेरी बात मानती हैं। वह बेवकूफ है जो एक पत्नी को भी ठीक से नहीं रख सकता।"

इस पर कुत्ता बोला — "पर तुम क्या सोचते हो कि इस समय उसको क्या करना चाहिये।"

मुर्गा बोला — "उसको शहतूत[24] के पेड़ की कुछ डंडियॉ लेनी चाहिये और उसकी पीठ पर उसको उससे रोज मारना चाहिये जब तक कि वह रो रो कर यह न कहने लगे — "मेरे स्वामी, मुझसे गलती हो गयी। मैं वायदा करती हूॅ कि अब

[24] Translated for the word "Mulberry bush" – see its picture above.

जब तक में ज़िन्दा रहूँगी तब तक ऐसे सवाल मैं फिर कभी नहीं पूछूँगी।"

उसके बाद भी उसे उसको एकाध बार और मारना चाहिये तभी वह आजादी से रह सकता है और ज़िन्दगी का आनन्द ले सकता है। पर क्या करें, इस हमारे मालिक के पास न तो अक्ल है और न ही वह कुछ सोच सकता है।"

यह सुन कर सौदागर एक शहतूत के पेड़ के पास गया, उसकी कुछ डंडियाँ तोड़ीं और उनको अपनी पत्नी के कमरे में छिपा दिया।

फिर उसने उसको बुलाया — "आओ यहाँ आओ इस कमरे में, मैं तुमको वह भेद यहाँ बताता हूँ ताकि कोई मुझे देखे नहीं और बस फिर मैं मर जाऊँगा।"

पत्नी उसके साथ उस कमरे में घुसी तो उसने दरवाजा बन्द कर लिया और उसके शरीर के हर हिस्से पर यह कहते हुए उन डंडियों से उसकी पिटाई की — "अब आगे से क्या तुम फिर ऐसे सवाल पूछोगी जिनसे तुम्हारा कोई मतलब नहीं है?"

वह उसको तब तक मारता रहा जब तक वह मार खा खा कर बेहोश नहीं हो गयी। और जब तक वह उसे मारता रहा वह बार बार यही कहती रही — "मैं सच कहती हूँ मैं अब आपसे कोई सवाल नहीं करूँगी। मुझे छोड़ दीजिये। मैं अब आपसे कुछ नहीं पूछूँगी।"

फिर पत्नी ने पति के हाथ और पैर दोनों चूमे और दोनों उस कमरे में से बाहर आ गये। अब वह एक बहुत ही अच्छे स्वभाव की औरत बन गयी थी जैसी कि उसको होना चाहिये था।

पत्नी के माता पिता अपने दामाद को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हुए और सौदागर ने इस तरह से मुर्गे से अपना घर चलाना सीखा। फिर वे मरते दम तक खुशी खुशी रहे।

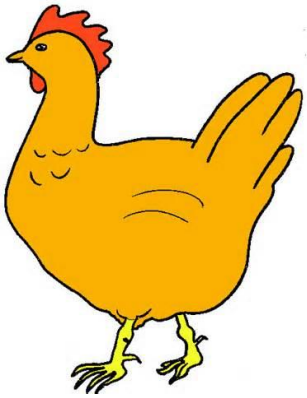

5 जानवरों की भाषा–2[25]

जानवरों की भाषा जानने की एक और लोक कथा। यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

पर यह कहानी इस लोक कथा से पहले दी जाने वाली सब कथाओं से अलग है क्योंकि इसमें जानवरों की भाषा जानने वाला जानवरों की भाषा एक हुनर के रूप में सीखता है।

अब क्योंकि यह एक हुनर है और उसने इसको खास तरीके से सीखा है तो वह इस हुनर को किसी को बताने पर मरता भी नहीं है बल्कि इससे उसका अपना भी फायदा होता है और वह इसको एक हुनर की तरह से ही इस्तेमाल करके दूसरों का फायदा भी करता है।

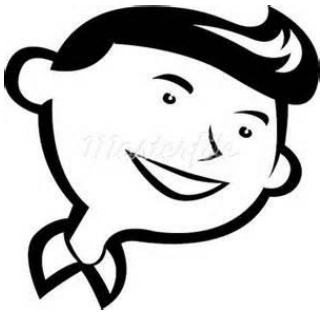

एक बार एक बहुत ही अमीर सौदागर था जिसके एक बेटा था। उस बेटे का नाम था बोबो[26]। बोबो बहुत ही तुरत बुद्धि मजाक करता था और सीखने के लिये हमेशा तैयार रहता था।

उसकी यह अक्लमन्दी देख कर उसके पिता ने उसको एक बहुत ही अक्लमन्द आदमी की देखरेख में रख दिया था और उसको उसे सारी भाषाएँ सिखाने के लिये कह दिया।

[25] Animal Speech (Story No 23) – a folktale from Italy from its Mantua area.
Adapted from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.
[26] Bobo – the name of the boy

जब बोबो की पढ़ाई ख़त्म हो गयी तो वह घर आ गया। एक दिन वह अपने पिता के साथ बगीचे में घूम रहा था। वहाँ बहुत सारी चिड़ियें एक पेड़ पर बैठी बैठी इतनी ज़ोर ज़ोर से चीं चीं चीं चीं कर रही थी कि कुछ भी सुनायी नहीं पड़ रहा था।

सौदागर अपने कानों में उँगलियाँ घुसाता हुआ बोला — "ये चिड़ियें हर शाम मेरे कानों का परदा फाड़ती हैं।"

बोबो ने पूछा — "क्या मैं आपको बताऊँ कि ये चिड़ियें क्या कह रही हैं?"

उसके पिता ने उसकी तरफ आश्चर्य से देखा और पूछा — "तुम्हें कैसे पता कि ये चिड़ियें क्या कह रही हैं। तुम तो ज्योतिषी नहीं हो न, या हो?"

बोबो बोला — "नहीं नहीं, मैं ज्योतिषी तो नहीं हूँ पर मुझे मेरे गुरू ने कई जानवरों की भाषाएँ सिखायी हैं इसलिये मैं आपको यह बता सकता हूँ कि ये क्या कह रही हैं।"

सौदागर बोला — "अब तुम मुझसे यह मत कहना कि मेरा पैसा तुमको जानवरों की भाषा सिखाने में गया है। तुम्हारे उस गुरू ने क्या सोचा कि मैंने तुमको उसके पास जानवरों की भाषा सीखने के लिये भेजा था? मेरा मतलब तो यह था कि उसको तुमको आदमियों की भाषा सिखानी चाहिये थी न कि इन गूँगे जानवरों की।"

बोबो बोला — "क्योंकि जानवरों की भाषा समझना ज़्यादा मुश्किल होता है इसलिये उन्होंने मुझे उन्हीं की भाषा से सिखाना शुरू करने का विचार किया।"

उसी समय एक कुत्ता भौंकता हुआ भागा चला गया तो बोबो बोला — "क्या मैं आपको बताऊँ कि यह कुत्ता क्या कह रहा था?"

"नहीं नहीं। मुझे अब तुम्हारे इन गूँगे जानवरों के बारे में एक शब्द भी और नहीं सुनना। उफ, लगता है कि मैंने तो तुमको वहाँ पढ़ने के लिये भेज कर अपना पैसा ही बरबाद किया।"

वे चलते रहे चलते रहे। चलते चलते वे एक खाई के किनारे आ गये। वहाँ कुछ मेंढक चिल्ला रहे थे। उनकी आवाज सुन कर पिता फिर दुखी हो कर बोला — "उफ़, ये मेंढक भी मुझे बहुत तंग करते हैं।"

"पिता जी क्या मैं बताऊँ कि ये मेंढक क्या....?"

पिता बोला — "भगवान करे शैतान तुमको और तुमको जिसने यह सिखाया है दोनों को उठा कर ले जाये।"

यह देख कर कि अपने बेटे के ऊपर उसका इतना पैसा बेकार गया सौदागर बहुत गुस्सा हो रहा था। उसको लग रहा था कि यह जानवरों की भाषा किसी जादू टोने से सम्बन्धित है।

यह सोच कर उसने अपने दो नौकरों को बुलाया और चुपचाप उनको अगली सुबह के लिये कुछ बता दिया।

बोबो को सुबह ही उठा दिया गया। एक नौकर ने उसको एक गाड़ी में बिठाया और वह खुद भी उसके साथ ही बैठ गया। दूसरा नौकर आगे बैठ गया और उसने घोड़े को चाबुक मार कर गाड़ी हॉक दी।

बोबो को पता ही नहीं था कि वे लोग कहॉ जा रहे थे। पर उसने देखा कि जो नौकर उसके पास बैठा था उसकी ऑखें सूजी हुई थीं और वह कुछ दुखी था।

बोबो ने उससे पूछा — "हम लोग कहॉ जा रहे हैं? और तुम इतने दुखी क्यों हो?" पर उस नौकर ने कोई जवाब नहीं दिया।

तभी घोड़ों ने हिनहिनाना शुरू किया तो बोबो समझ गया कि वे क्या कह रहे थे। वे कह रहे थे — "यह हमारा जाना आना अच्छा नहीं है कि हम अपने छोटे मालिक को मौत की तरफ ले कर जा रहे हैं।"

दूसरा घोड़ा बोला — "यह तो उसके पिता का बड़ी बेरहमी का हुकुम है।"

बोबो ने अपने पास बैठे वाले नौकर से कहा — "तो क्या तुम लोगों को मेरे पिता ने यह हुकुम दिया था कि तुम लोग मुझे बाहर ले जाओगे और मार डालोगे?"

नौकरों ने आश्चर्य से पूछा — "आपको कैसे मालूम?"

बोबो बोला — "इन घोड़ों ने मुझसे ऐसा कहा। ठीक है तुम मुझको अभी अभी मार दो देर तक इन्तजार करा के मुझे क्यों परेशान करते हो?"

नौकर बोले — "पर हमारा दिल नहीं करता कि हम आपको मार दें। हम उस पाप से छूटेंगे कैसे?"

जब वे यह बात कर रहे थे तो उनका अपना कुत्ता भौंकता हुआ उनके पीछे दौड़ा। असल में वह घर से ही उस गाड़ी के पीछे पीछे भागता हुआ चला आ रहा था।

बोबो ने उसकी भी सुनी कि वह क्या कह रहा था। वह कह रहा था कि मैं अपने छोटे मालिक को बचाने के लिये अपनी जान भी कुर्बान कर दूँगा।

बोबो बोला — "अगर मेरे पिता बेरहम हैं तो क्या हुआ कम से कम और दूसरे लोग तो हैं जो मेरे वफादार हैं जैसे तुम ओ वफादार नौकर और यह कुत्ता जो मेरे लिये अपनी जान तक देने को तैयार है।"

नौकर बोले — "अगर ऐसा है तो हम कुत्ते का दिल निकाल कर ले जायेंगे और जा कर बड़े मालिक को दे देंगे। छोटे मालिक, आप भाग जायें यहाँ से।"

बोबो ने अपने नौकरों को और अपने कुत्ते को गले से लगाया और वहाँ से चला गया। सारा दिन वह इधर उधर घूमता रहा। जब रात हुई तो वह एक किसान के घर आया और उससे रहने की जगह

मॉगी। जब सब लोग मेज के चारों तरफ शाम का खाना खाने बैठे तो बाहर एक कुत्ता भौंकने लगा।

बोबो उसको सुनने के लिये खिड़की के पास गया और फिर आ कर बोला — "जल्दी करो। स्त्रियों और बच्चों को सोने के लिये भेज दो और तुम लोग अपने अपने हथियार सॅभाल लो और तैयार हो जाओ। कुछ डाकू आधी रात को यहॉ हमला करने वाले हैं।"

वहॉ बैठे सब लोगों को लगा कि यह आदमी पागल हो गया है। वे बोले — "तुम ऐसा कैसे कह सकते हो? यह सब तुमसे किसने कहा?"

बोबो बोला — "मुझे यह सब इस कुत्ते ने बताया जो अभी यहॉ भौंक रहा था। बेचारा जानवर। अगर मैं यहॉ न होता तब तो इस बेचारे का भौंकना बेकार ही जाता। तुम लोग मेरी बात मानोगे तो सुरक्षित रहोगे।"

किसानों ने अपनी बन्दूकें उठा लीं और छोटे पेड़ों की एक कतार के पीछे छिप गये और उनकी पत्नियॉ और बच्चे घर के अन्दर बन्द हो कर बैठ गये।

आधी रात को पहले एक सीटी की आवाज सुनायी दी, फिर दूसरी और फिर तीसरी और फिर उसके बाद दौड़ते हुए पैरों की।

ये आवाजें सुनते ही उन छोटे पेड़ों के पीछे से दनादन गोलियॉ चलने लगीं सो सारे चोर भाग गये। उनमें से दो चोर मारे भी गये। वे अपने हाथ में अपने चाकू पकड़े हुए कीचड़ में पड़े पाये गये।

बोबो की तो इसके बाद वहॉ बड़ी आवभगत हुई। हालॉकि किसान चाहते थे कि वह वहीं उन्हीं के साथ रहे पर उसने उनको बाई बाई कहा और अपने रास्ते चल दिया।

मीलों चलने के बाद शाम को वह एक और किसान के घर आया। वह यह सोच ही रहा था कि वह उसके घर दरवाजा खटखटाये या नहीं कि उसने पास में ही कुछ मेंढकों को टर्राते हुए सुना।

उसने उनको पास से सुना तो उनमें से एक मेंढक कह रहा था — "आओ और होस्ट[27] को यहॉ फेंको। उसे यहॉ मेरे पास फेंको। अगर तुम उसे मेरे पास नहीं फेंकोगे तो मैं तुम्हारे साथ नहीं खेलूँगा।"

"पर तुम उसे पकड़ नहीं पाओगे और उसके दो टुकड़े हो जायेंगे। हमने उसे कितने सालों से पूरा का पूरा बचा कर रखा है। हम उसको तोड़ना नहीं चाहते।"

बोबो तुरन्त ही उस गड्ढे के पास गया और उसके अन्दर झॉका। उसने उस गड्ढे में देखा कि मेंढक एक पवित्र पतली सी चौरस पत्ती से एक गेंद की तरह से खेल रहे थे। बोबो ने उसको देखते ही क्रास का निशान बनाया।

[27] Host is bread or wafer consecrated in the celebration of the Eucharist (a sacred ceremony in the Church)

एक मेंढक बोला — "यह होस्ट छह साल से इस गड्ढे में है। छह साल पहले जब शैतान ने किसान की बेटी को बहकाया था तो कम्यूनियन[28] में होस्ट को निगलने की बजाय उस लड़की ने उस होस्ट को अपनी जेब में छिपा लिया था और फिर चर्च से घर जाते समय उसने उसको इस गड्ढे में फेंक दिया था।"

बोबो ने अब उस किसान के घर का दरवाजा खटखटाया तो उस किसान ने उसको शाम के खाने के लिये अन्दर बुला लिया।

वह जब किसान से बात कर रहा था तो उसको पता चला कि उसकी बेटी पिछले छह सालों से बीमार चली आ रही थी। कई डाक्टरों को दिखाया पर कोई भी यह नहीं बता सका कि उसको बीमारी क्या है और अब वह मरने वाली हो रही है।

बोबो बाला — "मुझे लगता है कि भगवान उसको सजा दे रहा है। छह साल पहले उसने चर्च का पवित्र होस्ट एक गड्ढे में फेंक दिया था। तुम लोग उस होस्ट को ढूँढो और उससे कम्यूनियन करवाओ तो वह बिल्कुल ठीक हो जायेगी।"

यह सुन कर उस किसान को बहुत आश्चर्य हुआ। वह बोला — "पर तुमसे यह सब किसने कहा?"

बोबो बोला — "मेंढकों ने।"

---

[28] Communion is a Christian worshipping activity in the Church in which the attendees eat bread and drink wine.

हालॉकि उस किसान को बोबो की बातों पर विश्वास नहीं हुआ पर फिर भी उसने उस गड्ढे में उस होस्ट को ढूँढा तो होस्ट तो गड्ढे में ही था सो वह उसको मिल गया।

फिर उस किसान ने उस लड़की का ठीक से कम्यूनियन भी करवा दिया और वह ठीक हो गयी। वह किसान तो सोच ही नहीं सका कि बोबो ने जो कुछ भी उसके लिये किया वह बोबो को इसके बदले में क्या दे।

पर बोबो को तो उससे कुछ चाहिये नहीं था सो वह उसको गुड बाई कह कर आगे चल दिया।

एक दिन जब दिन बहुत गरम हो रहा था तो बोबो को दो नौजवान मिले जो एक चेस्टनट के पेड़[29] के नीचे लेटे आराम कर रहे थे। उसने उनसे पूछा कि क्या वह भी वहॉ लेट सकता है। उन्होंने हॉ कर दी तो वह भी वहीं पैर फैला कर लेट गया।

उसने उनसे पूछा — "तुम लोग कहॉ जा रहे हो?"

"हम लोग रोम जा रहे हैं। क्या तुमको नहीं पता कि पहला पोप[30] मर गया है और अब नया पोप चुना जाने वाला है?"

[29] Chestnut is a kind of very dark brown color nut which is normally eaten after roasting on coal fire and then peeling it. It is very common in Italy but it is found in other places too. Hawkers sell them there as people sell hot roasted corn ears on streets in India – see the picture of its tree above.

[30] Pope is the Head of the Catholic Church, lives in Vatican City (a city country) where he has his everything – currency, army, administration etc, and he is the King of that city state.

तभी उनके सिरों के ऊपर उस चेस्टनट के पेड़ के ऊपर चिड़ियों का एक झुंड आ कर बैठ गया तो बोबो बोला — "ये चिड़ियें भी रोम जा रही हैं।"

उन दोनों नौजवानों ने पूछा — "तुमको कैसे मालूम?"

"मुझे इन चिड़ियों की भाषा आती है।" उसने उनको और ध्यान से सुना और बोला — "ज़रा सोचो तो कि वे और क्या कह रही हैं।"

"क्या कह रही हैं?"

"वे कह रही हैं कि हममें से एक को पोप चुन लिया जायेगा।"

उन दिनों पोप का चुनाव इस तरह से होता था कि एक फाख्ता को सेन्ट पीटर्स स्क्वायर[31] के ऊपर उड़ा दिया जाता था जहाँ बहुत सारी भीड़ इकट्ठी रहती थी और वह फाख्ता जिस किसी के सिर पर भी जा कर बैठ जाती थी वही पोप होता था।

सो वे तीनों रोम चल दिये और जा कर सेन्ट पीटर्स स्क्वायर में भीड़ के साथ खड़े हो गये। फाख्ता को छोड़ दिया गया और वह फाख्ता चारों तरफ घूम कर बोबो के सिर पर आ बैठी।

खुशी की तालियों और प्रार्थनाओं के बीच बोबो को ऊपर उठा लिया गया और पोप के कपड़े पहना कर उसके सिंहासन के ऊपर बिठा दिया गया।

[31] St Peter's Square – a part of Vatican City where Pope lectures and shows himself to the public – see its picture in the end of this folktale.

फिर बोबो भीड़ को आशीर्वाद देने के लिये उठा तो भीड़ के शोर के बीच में एक चिल्लाहट उठी। भीड़ में एक बूढ़ा बेहोश हो कर गिर पड़ा था। वह बूढ़ा एक मरे हुए के बराबर सा पड़ा था।

नया पोप उसकी तरफ दौड़ा तो उसने उसको पहचान लिया। वह तो उसका अपना पिता था। वह बूढ़ा तो अपने आपको नफरत से देख रहा था और अपने बेटे की बॉहों में मरने से पहले उससे माफी मॉगना चाहता था।

बोबो ने उसे माफ कर दिया। बोबो बाद में चर्च का एक बहुत ही अच्छा पोप साबित हुआ।

6 सॉप की भेंट जानवरों की भाषा[32]

जानवरों की भाषा की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के सरबिया देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार की बात है कि एक जगह एक गड़रिया[33] रहता था जो अपने मालिक की बड़ी वफादारी और ईमानदारी से सेवा करता था।

एक बार जब वह जंगल में भेड़ चरा रहा था तो उसने हिस्स्स्स्स्स की आवाज सुनी। इसने सोचा कि यह आवाज किसकी हो सकती थी सो वह इस बात को पता करने के लिये जंगल में कुछ दूर और आगे चला गया।

उसने देखा कि जंगल में तो आग लगी है और एक सॉप उस आग में घिरा हुआ चिल्ला रहा है। गड़रिये ने कुछ देर रुक कर देखा कि वह सॉप अब क्या करेगा क्योंकि वह सॉप आग में काफी घिरा हुआ था और आग उसके पास और और पास आती जा रही थी।

---

[32] Snake's Gift: animal's language (Tale No 3) - a folktale from Serbia, Europe.
Taken from the Web Site :
https://books.google.ca/books?id=lC4CAAAAIAAJ&pg=PR4&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false From the book : "Serbian Folk-Lore: popular tales", by Madam. 1874.
[Author's Note: "Thiersprache" Grimm's No 3 "

[33] Translated for the word "Shepherd"

गड़रिये को देख कर सॉप चिल्लाया — "ओ भले गड़रिये। मेहरबानी करके मुझे इस आग से बचाओ।"

सो गड़रिये ने अपना हुक आग में फेंका तो सॉप जल्दी से उससे लिपट गया और उसके कन्धे पर आ गया। फिर वह उसकी गरदन के चारों तरफ लिपट गया।

यह देख कर तो गड़रिये की जान ही निकल गयी। उसके मुँह से निकला — "ओह अब मैं क्या करूँ। मैं भी कितना बेवकूफ हूँ। मैंने तो तुम्हें बचाया और तुम मुझको मारे डाल रहे हो।"

सॉप बोला — "तुम डरो नहीं। तुम बस मुझको मेरे पिता के घर ले चलो। मेरे पिता सॉपों के राजा हैं।"

पर गड़रिया तो पहले से ही बहुत डरा हुआ था सो उसने वहॉ न जाने के बहाने बनाने शुरू कर दिये कि वह अपने मालिक की भेड़ें वहॉ इस तरह से छोड़ कर नहीं जा सकता।

इस पर सॉप बोला — "तुम मुझे मेरे घर छोड़ आओ तुम्हारी भेड़ों को कुछ नहीं होगा। तुम उनकी चिन्ता मत करो। बस तुम मुझे जल्दी से मेरे घर छोड़ आओ।"

अब गड़रिये के पास उसको उसके घर छोड़ने जाने के अलावा और कोई चारा नहीं था सो वह उसको ले कर जंगल से हो कर उसके घर चल दिया जब तक कि वे एक दरवाजे के पास नहीं आ गये। वह दरवाजा पूरा का पूरा सॉपों का बना हुआ था।

उसको देख कर गड़रिये के गले में पड़े हुए सॉप ने हिस्स्स्स्स की आवाज की जिससे दरवाजे पर बने हुए सॉप खुल गये ताकि वह गड़रिया उसके अन्दर जा सके।

जैसे ही वे दरवाजे के अन्दर गये तो सॉप ने गड़रिये से कहा — "जब तुम मेरे पिता के घर पहुँचोगे तो मेरे पिता तुमको कुछ भी देने के लिये कहेंगे – सोना चॉदी जवाहरात आदि।

पर तुम इनमें से कोई भी चीज़ मत लेना बल्कि उनसे तुम जानवरों की भाषा मॉग लेना। पहले तो वह उसे तुम्हें देने से हिचकिचायेंगे पर आखीर में वह तुमको वह दे ही देंगे।"

यह बात करते करते वे सॉपों के राजा के महल में आ गये। अपने बच्चे को देखते ही सॉपों के राजा ने रोते हुए कहा — "मेरे बच्चे तुम कहॉ थे।"

इस पर सॉप ने उनको सारी कहानी सुना दी कि किस तरह वह आग में घिर गया था और किस तरह इस गड़रिये ने उसकी जान बचायी। सॉपों के राजा ने गड़रिये से कहा — "तुम्हारी क्या इच्छा है जो मैं तुम्हें अपने बेटे की ज़िन्दगी बचाने के लिये पूरी करूँ।"

गड़रिया बोला — "मुझे कुछ नहीं चाहिये बस जानवरों की भाषा चाहिये।"

सॉपों का राजा बोला — "यह तुम्हारे लिये ठीक नहीं है क्योंकि मैं यह अगर तुम्हें दे दूँ और तुम अगर इसे किसी से कह दोगे तो तुम

तुरन्त ही मर जाओगे। इसलिये तुम्हारे लिये यही अच्छा होगा कि तुम कुछ और माँग लो।"

पर गड़रिया फिर वही बोला — "अगर आप मुझे कुछ देना ही चाहते हैं तो मुझे जानवरों की भाषा दे दीजिये। अगर आप मुझे वह नहीं देना चाहते तो फिर मुझे आपसे कुछ नहीं चाहिये। नमस्ते।"

यह कह कर वह वहाँ से चल दिया। यह देख कर साँपों के राजा ने उसको बुलाया और कहा — "अगर तुम सचमुच में उसी को लेना चाहते हो तो लो। अपना मुँह खोलो।"

गड़रिये ने अपना मुँह खोल दिया तो साँपों के राजा ने उसके मुँह में एक फूँक मारी और उससे कहा कि वह भी अपने मुँह से एक फूँक उसके मुँह में मारे। सो गड़रिये ने भी उसके मुँह में एक फूँक मारी। ऐसा उन्होंने तीन बार किया।

इसके बाद साँपों के राजा ने उससे कहा — "अब तुमको जानवरों की भाषा मिल गयी है। जाओ और भगवान के लिये दुनियाँ में किसी को यह बात बताना नहीं। क्योंकि अगर तुमने यह बात किसी को भी बतायी तो तुम तुरन्त ही मर जाओगे।"

गड़रिया वहाँ से जंगल वापस चला आया। जब वह जंगल में से हो कर आ रहा था तो वह सब जानवरों और चिड़ियों की बोली समझ पा रहा था। यहाँ तक कि पेड़ पौधे भी आपस में जो बात कर रहे थे वह भी वह समझ रहा था।

जब वह अपनी भेड़ों के पास आया तो उसने अपनी सब भेड़ों को सुरक्षित पाया सो वह आराम करने के लिये कुछ देर के लिये लेट गया। जैसे ही वह वहॉ लेटा तो उसके पास वाले पेड़ पर दो तीन रैवन[34] आ कर बैठ गये।

वे आपस में बात कर रहे थे — "काश यह गड़रिया यह जानता कि जहॉ इसकी काली भेड़ लेटी हुई है वहॉ उसके नीचे जमीन के नीचे एक गड्ढा है जो सोने और चॉदी से भरा हुआ है।"

अब गड़रिया क्योंकि जानवरों की भाषा समझता था सो उसने उनकी बातें समझ लीं। वह उठा और जा कर उसने यह बात अपने मालिक को बतायी तो मालिक ने अपनी गाड़ी उठायी और जा कर वहीं गड्ढा खोदा तो वहॉ तो सच में ही बहुत सारा सोना चॉदी पाया। उसने वह सारा खजाना निकाला और उसको ले कर घर चला गया।

पर उस गड़रिये का मालिक बहुत ही ईमानदार आदमी था। उसने उसमें से एक पैसा भी अपने लिये नहीं रखा। उसने सारा खजाना गड़रिये को यह कह कर दे दिया — "लो मेरे बेटे। यह सारा खजाना तुम्हारा है क्योंकि भगवान ने यह तुम्हें दिया है। इससे तुम अपने लिये एक मकान बनवाओ शादी करो और इस खजाने की सहायता से अपनी ज़िन्दगी गुजारो।"

[34] Raven is a crow-like bird. It has its own importance all over the world.

सो गड़रिये ने वह ख़जाना लिया अपने लिये एक मकान बनवाया शादी की और उस शहर का सबसे ज़्यादा अमीर आदमी बन गया। अब उसके पास अपनी भेड़ें हो गयीं अपने गड़रिये हो गये। थोड़े में कहो तो उसके पास बहुत सारी सम्पत्ति हो गयी और उसने बहुत सारा पैसा बना लिया।

एक बार क्रिसमस के मौके पर उसने अपनी पत्नी से कहा — "थोड़ी शराब और खाना तैयार रखो कल हम लोग अपने गड़रियों को दावत देंगे।"

उसकी पत्नी ने ऐसा ही किया। अगले दिन वे अपने खेत पर चले गये। शाम को मालिक ने अपने गड़रियों से कहा — "तुम सब लोग आज यहॉ आओ, खाओ पियो और आनन्द करो और आज की रात भेड़ों की देखभाल मैं करूँगा।"

सो मालिक तो भेड़ों की देखभाल करने चला गया और गड़रिये दावत खाने और पीने के लिये आ गये। करीब करीब आधी रात को भेड़ियों ने अपनी भाषा में चिल्लाना शुरू किया "क्या हम भी आ कर तुम्हारी दावत खा सकते हैं। तुमको भी शिकार का कुछ हिस्सा मिल जायेगा।"

यह सुन कर कुत्तों ने अपनी भाषा में उन्हें जवाब दिया — "हॉ हॉ क्यों नहीं। हम भी कुछ खाने के लिये तैयार हैं।"

पर उन कुत्तों में एक बूढ़ा कुत्ता भी था जिसके केवल दो दॉत रह गये थे। यह कुत्ता गुस्से से चिल्लाया — "ओ नीच। तुम ज़रा

आ कर तो देखो। जब तक मेरे ये दो दॉत कायम हैं तुम मेरे मालिक की किसी चीज़ को कोई नुकसान नहीं पहुॅचा सकते।"

मालिक उनकी ये सब बातें सुन भी रहा था और समझ भी रहा था सो अगले दिन उसने उस बूढ़े कुत्ते को छोड़ कर बाकी सब कुत्तों को मरवा दिया। उसके नौकरों ने उससे कहा भी कि यह ठीक नहीं है पर उसने उन सबको यह कह कर मना कर दिया कि उनसे जो कहा जाये वे लोग वही करें। और यह कह कर वह अपनी पत्नी के साथ अपने घर चला गया।

मालिक अपने एक सुन्दर घोड़े पर सवार था और उसकी पत्नी एक सुन्दर घोड़ी पर सवार थी। पर मालिक का घोड़ा इतना तेज़ भाग रहा था कि उसकी पत्नी उससे पीछे रह गयी। तो मालिक के घोड़े ने पत्नी की घोड़ी से कहा — "जल्दी जल्दी आ न। तू इतनी पीछे क्यों रह गयी।"

घोड़ी बोली — "तुम्हारे लिये तो यह बहुत आसान है क्योंकि तुम तो केवल एक ही आदमी का बोझा ढो रहे हो पर मैं तो तीन आदमियों का बोझा उठा रही हूॅ।"

यह सुन कर मालिक ने पीछे देखा और हॅस दिया। पत्नी ने उसको हॅसते देखा और घोड़ी को मारा ताकि वह थोड़ा जल्दी जल्दी चले और वह अपने पति के पास पहुॅच जाये। जब वह अपने पति के पास आ गयी तो उसने उससे पूछा कि वह क्यों हॅस रहा था।

पति ने कहा कि वह किसी वजह से हॅस रहा था पर पत्नी तो इस जवाब से सन्तुष्ट होने वाली थी नहीं सो उसने उससे फिर पूछा कि वह क्यों हॅस रहा था।

इस पर वह बोला — "मुझसे सवाल पूछना बन्द करो। तुमने क्या सोचा कि मैं क्यों हॅस रहा था। मैं तो भूल ही गया कि मैं क्यों हॅसा था।"

आखिर में मालिक ने कहा — "अगर मैंने तुम्हें यह बता दिया कि मैं क्यों हॅसा था तो में तुरन्त ही मर जाऊॅगा।"

पर यह जवाब भी उसको शान्त नहीं कर सका। वह उससे पूछती ही रही — "तुम मुझे बताओ न।"

इस बीच वे घर पहुॅच गये। घर पहुॅचने पर उस आदमी ने एक ताबूत बनाने के लिये कहा और जब वह तैयार हो गया तो उसको अपने घर के सामने रखने के लिये कहा। फिर वह उसके अन्दर लेट गया। उसमें लेट कर उसने अपनी पत्नी से कहा — "अब मैं तुम्हें बताता हूॅ कि मैं क्यों हॅसा था। क्योंकि जैसे ही मैंने तुम्हें यह बताया कि मैं क्यों हॅसा था मैं मर जाऊॅगा।"

कह कर एक बार उसने अपने चारों तरफ देखा तो उसने देखा कि उसका बूढ़ा कुत्ता जिसे उसने मारने से छोड़ दिया था खेत पर से दौड़ा चला आ रहा है। वह उसके सिर की तरफ आ कर खड़ा हो गया और भौंकने लगा।

जब आदमी ने यह देखा तो अपनी पत्नी से कहा — "इस बेचारे कुत्ते के लिये कुछ रोटी ला दो।" पत्नी ने उसके लिये रोटी ला दी और उसकी तरफ फेंक दी पर उसने रोटी की तरफ ऑख उठा कर भी नहीं देखा।

इतने में एक मुर्गा आया और उस रोटी में अपनी चोंच मारने लगा। कुत्ता मुर्गे से बोला — "तुम तो केवल खाने के बारे में ही सोचते हो। क्या तुमको पता है कि हमारा मालिक मरने वाला है।"

मुर्गा बोला — "मरने दो उसको क्योंकि वह तो है ही बेवकूफ। मेरे सौ पत्नियॉ हैं। अक्सर रात को मैं उन सबको मक्का के एक दाने के चारों तरफ इकट्ठा कर लेता हूॅ और जब वे सब वहॉ मौजूद होती हैं तो मैं उस दाने को उठा कर खा जाता हूॅ।

अगर उनमें से कोई भी गुस्सा होता है तो मैं उसको अपनी चोंच मार मार कर काबू में कर लेता हूॅ। इस तरह से मैं उन सबको शान्त रखता हूॅ। जबकि तुम हमारे मालिक को देखो उसके पास तो केवल एक पत्नी है और वह उसको भी काबू में नहीं रख पाता।"

यह सुन कर आदमी की ऑखें खुल गयीं। वह ताबूत में से उठ कर खड़ा हो गया। उसने एक डंडा उठाया और अपनी पत्नी को अपने पास बुलाया और उससे कहा — "इधर आओ। अब बताता हूॅ मैं तुमको जो तुम जानना चाहती हो।"

जब पत्नी ने यह देखा तो उसको लगा कि उसको पीटे जाने का खतरा है तो उसने उससे पूछना छोड़ दिया और फिर कभी उससे यह नहीं पूछा कि वह क्यों हॅसा था।

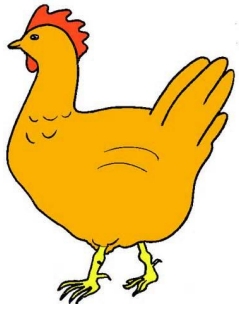

7 मारो लेकिन सुनो भी[35]

जानवरों की भाषा जानने की यह कहानी हमने तुम्हारे लिये एशिया महाद्वीप के भारत देश के बंगाल प्रान्त की लोक कथाओं से ली है। असल में इस कथा में दो कहानियॉ हैं जिसमें से एक कहानी जानवरों की भाषा जानने वाली कहानी है।

यह कथा भी इस पुस्तक में दी गयी पहली चार कथाओं से बिल्कुल अलग है। इसमें एक स्त्री के पास यह ताकत है कि वह जानवरों की भाषा समझती है।

हालॉकि इस कथा में यह नहीं बताया गया कि उसके पास यह ताकत कहॉ से आयी पर उसकी इस ताकत का किसी को पता नहीं है इसलिये गलतफहमी की वजह से वह बेचारी मारी जाती है न कि इसलिये कि उसको यह बात किसी को बताने के लिये मना कर रखा है।

एक बार की बात है कि किसी देश में एक राजा राज करता था। उसके तीन बेटे थे।

एक दिन उसकी जनता उसके पास आयी और बोली — "हे न्याय के अवतार, राज्य में चोर और डाकू बहुत हो गये हैं। हम

[35] Strike But Hear (Tale No 10) – a folktale from India, Asia. Taken from the Web Site : https://en.wikisource.org/wiki/Folk-tales_of_Bengal/Strike_but_Hear
Adapted from the book: "Folk-tales of Bengal", by Lal Behari Dey. London, Macmillan & Co Limited. 1912. 1st ed 1883. 22 Tales. This book is available at the above Web Site.

लोगों के घर भी अब सुरक्षित नहीं रह गये हैं। हम योर मैजेस्टी से यह प्रार्थना करने आये हैं कि इनको पकड़ा जाये और सजा दी जाये।"

राजा ने अपने तीनों बेटों को बुलाया और कहा — "बच्चों, देखो मैं तो अब बूढ़ा हो गया हूँ पर तुम तो अपनी जवानी में अभी अपने कदम ही रख रहे हो। ऐसा कैसे हो रहा है कि हमारे राज्य में इतने सारे चोर डाकू हैं। तुम लोग जाओ और उनको पकड़ो।"

यह सुन कर तीनों बेटों ने सोचा कि वे हर रात शहर में घूमेंगे और चोर डाकुओं को पकड़ने की कोशिश करेंगे। ऐसा सोच कर उन्होंने शहर के बाहर अपने लिये एक ठहरने के लिये जगह बना ली और वहाँ उन्होंने अपने घोड़े भी रख लिये।

रात के शुरू के हिस्से में सबसे बड़े बेटे ने अपना घोड़ा उठाया और सारे शहर का चक्कर लगा आया पर उसको कहीं कोई चोर या डाकू दिखायी नहीं दिया।

आधी रात को बीच वाले बेटे ने अपना घोड़ा उठाया और वह भी सारे शहर का चक्कर लगा आया पर उसको भी कहीं कोई चोर या डाकू दिखायी नहीं दिया। वह भी ऐसे ही अपने ठहरने की जगह वापस आ गया।

आधी रात के कुछ घंटों बाद सबसे छोटा बेटा उठा। उसने भी अपना घोड़ा लिया और वह भी शहर का चक्कर लगाने चल दिया।

जब वह अपने पिता के महल के दरवाजे के पास आया तो उसने महल में से एक बहुत सुन्दर स्त्री को बाहर निकलते देखा।

राजकुमार उस स्त्री की तरफ बढ़ा और उससे पूछा — "तुम कौन हो और इस समय रात को कहाँ जा रही हो?"

उस स्त्री ने जवाब दिया — "मैं राजलक्ष्मी हूँ। मैं इस महल की देखभाल करने वाली देवी हूँ। आज की रात राजा मारा जायेगा अब मेरी यहाँ कोई जरूरत नहीं है इसलिये मैं यहाँ से जा रही हूँ।"

राजकुमार समझा नहीं कि वह स्त्री क्या कह रही थी और उसके कहे का वह क्या मतलब समझे।

पर एक पल सोचने के बाद ही वह उस देवी से बोला — "पर मान लो कि राजा अगर आज की रात नहीं मारा जाता तो क्या तुम्हें इसमें कोई ऐतराज है कि तुम फिर राज्य में लौट जाओगी और फिर वहीं रहोगी?"

देवी बोली — "नहीं। मुझे इसमें कोई ऐतराज नहीं है। अगर राजा ज़िन्दा रहेगा तो मैं राज्य में ही रहूँगी।"

तब राजकुमार ने देवी से प्रार्थना की कि अभी वह महल के अन्दर जाये और वहीं रहे। वह अपनी पूरी कोशिश करेगा कि राजा आज की रात न मरे। सो वह देवी महल के अन्दर चली गयी और राजकुमार को पता भी नहीं चला कि वह पल भर में ही किधर चली गयी।

राजकुमार वहॉ से सीधा अपने पिता के सोने के कमरे में गया। वहॉ जा कर उसने देखा कि उसका पिता तो गहरी नींद में सोया हुआ है। राजा की दूसरी पत्नी यानी राजकुमार की सौतेली मॉ भी उसी कमरे में एक दूसरे पलंग पर सोयी हुई थी। कमरे में एक बहुत हल्की सी रोशनी जल रही थी।

उस हल्की सी रोशनी में राजकुमार ने देखा कि एक कोबरा सॉप राजा के सोने के पलंग के चारों तरफ घूम रहा है। यह देख कर उसको बहुत आश्चर्य हुआ। उसने तुरन्त ही अपनी तलवार निकाली और उस सॉप के दो टुकड़े कर दिये।

लेकिन सॉप के दो टुकड़े करके भी जब राजकुमार सन्तुष्ट नहीं हुआ सो उसने उनके भी सैंकड़ों टुकड़े कर दिये और उन टुकड़ों को पान रखने की थाली में रख दिया जो वहीं कमरे में रखी हुई थी।

जब राजकुमार सॉप को काट रहा था तो उस सॉप के खून की एक बूँद उसकी सौतेली मॉ के सीने पर गिर पड़ी जो वहीं पास में सो रही थी। राजकुमार सोचने लगा कि अब वह क्या करे। उसने सोचा कि मैंने अपने पिता को तो बचा लिया पर मॉ को मार दिया। यह तो ठीक नहीं है।

यह सोच कर उसने अपनी जीभ पर सात तह करके एक कपड़ा लगाया और सॉप का खून चाट लिया। पर जब वह खून चाट रहा था तो उसकी सौतेली मॉ जाग गयी और उसने देखा कि उसका

सौतेला बेटा उसके ऊपर झुका हुआ है – उसका सबसे छोटा सौतेला बेटा। राजकुमार यह देख कर कमरे में से बाहर भाग लिया।

रानी उस राजकुमार से बहुत नफरत करती थी सो उसने यह सब देख कर यह सोचा कि अब तो वह राजकुमार को मरवा करके ही रहेगी चाहे कुछ हो जाये।

उसने राजा को जगाया — "क्या आप जागे हुए हैं? ज़रा उठिये तो। यहाँ आपके लिये एक बहुत ही अच्छा काम है।"

राजा उठा तो रानी से उसने पूछा कि क्या बात है।

रानी बोली — "क्या बात है? आपका लायक बेटा, सबसे छोटा राजकुमार, जिसके बारे में आप इतना अच्छा बोलते हैं वह अभी अभी यहीं था। मैंने उसको अपने सीने पर झुका हुआ देखा।

मुझे पूरा विश्वास है कि वह यहाँ किसी बुरे इरादे से आया था। क्या यही आपका लायक बेटा है? क्या लायक बेटे ऐसे ही होते हैं?"

राजा तो यह सुन कर दंग रह गया। राजकुमार तुरन्त ही जंगल में वहीं चला गया जहाँ वह अपने दोनों भाइयों के साथ ठहरा हुआ था। मगर उसने वहाँ जा कर उनसे कुछ कहा नहीं।

अगले दिन राजा ने अपने सबसे बड़े बेटे को बुलाया और उससे कहा — "अगर किसी आदमी में मैं अपनी ज़िन्दगी और अपनी

इज़्ज़त रख देता हूँ और फिर वह आदमी मेरा विश्वास तोड़ देता है तो उसकी क्या सजा होनी चाहिये?"

राजकुमार बोला — "बेशक उसका सिर तो उसके धड़ से अलग कर देना चाहिये। पर इससे पहले कि आप उसे मारें आपको पक्के तरीके से यह देख लेना चाहिये कि उसने वाकई में आपका विश्वास तोड़ा है कि नहीं।"

राजा ने पूछा — "तुम कहना क्या चाहते हो?"

राजकुमार बोला — "योर मैजेस्टी इसके लिये आप यह कहानी सुनें।

एक बार की बात है कि एक सुनार था जिसका एक बेटा था जो बड़ा था। उसके एक पत्नी भी थी। उसकी इस पत्नी के पास एक अजीब ताकत थी कि वह जंगली जानवरों की भाषा समझती थी। पर यह बात न तो उसको पति को और न ही किसी और को पता थी कि उसके पास यह ताकत थी।

उनका घर एक नदी के पास था। एक रात जब वह अपने घर में अपने बिस्तर में लेटी हुई थी तो उसने एक गीदड़ के चिल्लाने की आवाज सुनी जो यह कह रही थी — "एक लाश नदी के ऊपर तैरी जा रही है। क्या कोई ऐसा है जो उसकी उँगली से हीरे की अँगूठी निकाल कर मुझे वह लाश खाने के लिये देगा?"

उसकी पत्नी ने गीदड़ की भाषा समझ ली। वह तुरन्त अपने बिस्तर से उठी और नदी की तरफ चल दी।

उसका पति अभी सोया नहीं था सो वह भी उसके पीछे पीछे कुछ दूरी रख कर चल दिया ताकि वह अपनी पत्नी से छिप कर यह जान सके कि वह इस समय घर से बाहर कहॉ जा रही थी क्यों जा रही थी और क्या करने जा रही थी।

उसने देखा कि वह नदी की तरफ चली जा रही थी। नदी के पास जा कर उसकी पत्नी पानी में चली गयी। वहॉ उसको एक तैरती हुई लाश मिल गयी तो वह उसको खींच कर नदी के किनारे ले आयी।

उसकी पत्नी ने देखा कि उसकी एक उॅगली में तो वाकई एक हीरे की अॅगूठी थी।

उसने उसे निकालने की कोशिश की पर क्योंकि लाश पानी में पड़े पड़े फूल गयी थी और उसकी उॅगली मोटी हो गयी थी सो वह उसकी उॅगली में से वह अॅगूठी निकाल नहीं सकी।

उसने अपने दॉत से उसकी उॅगली काटी उसकी अॅगूठी निकाली और लाश को किनारे पर ही छोड़ कर घर आ गयी। वहॉ से आ कर वह अपने बिस्तर पर लेट गयी और सो गयी। उसका पति वहॉ उससे पहले ही आ गया था और लेटा हुआ था।

यह सब देख कर वह बेटा सुनार डर के मारे जमा हुआ सा पड़ा था। उसने यह देख कर यह सोच लिया था कि उसकी पत्नी कोई आदमी नहीं थी बल्कि कोई राक्षसी थी। वह सारी रात यही सोचता

रहा और सो नहीं सका। वह सारी रात उसने करवटें बदल बदल कर ही काटी।

अगले दिन सुबह वह जल्दी ही उठा और सारा किस्सा अपने पिता को इस तरह बताया — "पिता जी जिस स्त्री से आपने मेरी शादी की है वह मुझे लगता है कि असली औरत नहीं है बल्कि राक्षसी है।

कल रात जब मैं सो रहा था तो मैने घर के बाहर नदी के किनारे एक गीदड़ की आवाज सुनी। यह सोचते हुए कि मैं सो रहा था वह बिस्तर से उठी और घर का दरवाजा खोल कर नदी के किनारे चली गयी।

मैं तो आश्चर्यचकित रह गया कि वह इतनी रात में अकेली वह जा कहॉ रही है सो मैंने उसका पीछा किया और ऐसे किया कि वह मुझे न देख सके। क्या आप सोच सकते हैं पिता जी कि उसने वहॉ जा कर क्या किया? उफ़ बहुत ही भयानक काम किया पिता जी आप तो सोच ही नहीं सकते।

वह नदी में चली गयी वहॉ से एक लाश किनारे पर खींच लायी जो वहीं पास में ही तैर रही थी। उसने उसे खाना शुरू कर दिया। यह तो मैंने अपनी ऑखों से देखा।

जब वह उसे खा रही थी तो मैं उसे और नहीं देख सका और घर लौट आया और आ कर बिस्तर में लेट गया। कुछ मिनट बाद

वह भी लौट आयी। पिता जी मैं ऐसी राक्षसी के साथ कैसे रह सकता हूँ? एक रात वह मुझे भी मार देगी और खा जायेगी।"

पिता सुनार तो यह सुन कर सकते में आ गया। पर फिर पिता और बेटे दोनों ने मिल कर यह तय किया कि उस स्त्री को जंगल ले कर जाया जाये और उसको वहाँ जंगली जानवरों को खाने के लिये छोड़ आया जाये।

सो बेटे सुनार ने अपनी पत्नी से कहा — "तुम आज की सुबह कुछ ज़्यादा खाना मत बनाना। बस केवल थोड़े से चावल उबाल लेना और एक बैंगन भून लेना। आज मैं तुमको तुम्हारे माता पिता से मिलाने ले जाऊँगा। तुमको उनसे मिले हुए बहुत दिन हो गये हैं वे तुम्हें देखने के लिये बहुत तरस रहे हैं।"

अपने पिता के घर का नाम सुन कर उसकी पत्नी बहुत खुश हो गयी और उसने अपना खाना भी बहुत जल्दी बना लिया। पति पत्नी ने जल्दी से नाश्ता किया और दोनों पत्नी के माता पिता के घर की तरफ चल पड़े।

रास्ते में एक बहुत घना जंगल पड़ता था। बेटे सुनार ने अपनी पत्नी को उसी जंगल में छोड़ देने का विचार बना रखा था। पर जब वे उस घने जंगल से हो कर जा रहे थे तो उसकी पत्नी ने एक साँप की फुंकार सुनी।

अब जैसा कि उसने उस फुंकार से समझा वह साँप कह रहा था "ओ जाने वाले मैं तुम्हारा बहुत बहुत ऋणी रहूँगा अगर तुम वह

टर्राता हुआ मेंढक पकड़ लो जो तुम्हारे पास वाले गड्ढे में पड़ा है। उस गड्ढे के अन्दर सोना और जवाहरात भरे हुए हैं। वह सोना और जवाहरात तुम ले लो और मेंढक मुझे खाने के लिये दे दो।"

सो वह स्त्री उस मेंढक के गड्ढे की तरफ चली गयी और वहॉ जा कर एक डंडी से उस छेद को और खोदने लगी। वह नौजवान बेटा सुनार यह देख कर बहुत डर गया कि बस अब उसकी राक्षसी पत्नी उसको मार कर खा जायेगी।

पर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने अपने पति को पुकार कर कहा — "लीजिये ज़रा यह सोना और जवाहरात तो सॅभालिये।"

बेटा सुनार अपने खयालों में इतना डूबा हुआ था कि पहले तो उसकी समझ में ही नहीं आया कि उसकी पत्नी कह क्या रही थी सो वह सकुचाता हुआ उस जगह की तरफ गया जहॉ उसकी पत्नी बैठी थी पर फिर यह देख कर आश्चर्य से भर गया कि वहॉ तो बहुत सारा सोना और जवाहरात थे।

उन्होंने जितना सोना और जवाहरात उनसे उठाये जा सकते थे उठा लिये। इसके बाद पति ने पत्नी से पूछा कि उसको यह कैसे पता चला कि वहॉ सोना और जवाहरात थे।

तो पत्नी ने उसको बताया कि उसको जानवरों की भाषा आती थी। सॉप जो वहॉ पास में ही कुंडली मार कर बैठा हुआ था उसने ही उसको बताया।

यह सुन कर सुनार तो बहुत खुश हो गया कि उसको कितनी गुणवान पत्नी मिली है।

वह बोला — "प्रिये अब बहुत देर हो चुकी है। अब शाम से पहले तुम्हारे माता पिता के घर पहुँचना नामुमकिन है और फिर इस घने जंगल में जंगली जानवर हमको खा भी सकते हैं इसलिये अभी हम लोग घर वापस चलते हैं वहाँ फिर कभी चलेंगे।"

उन लोगों को घर वापस आने में काफी समय लग गया क्योंकि उन दोनों के पास सोना और जवाहरात बहुत सारे थे।

जब वे घर के पास आ गये तो बेटा सुनार बोला — "तुम पीछे के दरवाजे से आओ और मैं सामने के दरवाजे से चलता हूँ। मैं जरा दूकान में अपने पिता जी से मिलता हुआ और उनको यह सोना और जवाहरात दिखाता हुआ आता हूँ।"

सो सुनार की पत्नी घर के पिछले दरवाजे से घर के अन्दर घुसी और बेटा सुनार घर के बाहर के दरवाजे की तरफ चला गया।

जैसे ही वह घर में घुसी तो उसको उसका ससुर मिल गया। वह उस समय किसी काम से घर आ रहा था उसके हाथ में हथौड़ा था। पिता सुनार ने जब अपनी राक्षसी बहू को देखा तो उसने सोचा कि वह उसके बेटे को मार कर खा कर अब मुझे खाने के लिये घर आ गयी है।

उसने तुरन्त ही अपना हथौड़ा उसके सिर पर दे मारा जिससे वह तुरन्त ही मर गयी। उसी समय बेटा सुनार भी आ गया। वह अपने

पिता को अपने लाये हीरे जवाहरात दिखाता और अपनी पत्नी के बारे में कुछ बताता पर अब उसके लिये तो बहुत देर हो चुकी थी।

इसी लिये पिता जी मैं आपसे कहता हूँ कि आप जब भी किसी का गला काटें उससे पहले यह पक्का कर लें कि उस आदमी ने वाकई ऐसा जुर्म किया है या नहीं जिसकी वजह से आपको उसका गला काटना ही है। कहीं ऐसा न हो कि बाद में आपको पछताना पड़े।"

यह सुन कर राजा ने अपने तीसरे सबसे छोटे बेटे को बुलाया और उससे कहा — "अगर किसी आदमी में मैं अपनी ज़िन्दगी और अपनी इज़्ज़त रख देता हूँ और फिर वह आदमी मेरा विश्वास तोड़ देता है तो उसकी क्या सजा होनी चाहिये?"

राजकुमार बोला — "बेशक उसका सिर तो उसके धड़ से अलग कर देना चाहिये। पर इससे पहले कि आप उसे मारें आपको पक्के तरीके से यह देख लेना चाहिये कि उसने वाकई में आपका विश्वास तोड़ा है कि नहीं।"

राजा ने पूछा — "तुम कहना क्या चाहते हो?"

राजकुमार बोला — "योर मैजेस्टी इसके लिये मैं आपको यह कहानी सुनाता हूँ। आप इसको सुन कर जरूर ही खुश होंगे।

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके पास एक बहुत ही आश्चर्यजनक शुक जाति[36] का चिड़ा था।

एक दिन वह चिड़ा बाहर घूमने गया तो वहॉ उसने अपने माता पिता को देखा। उन्होंने उससे जिद की कि वह उनके पास उनके घर में जो वहॉ से कुछ ही दूरी पर था कुछ दिन के लिये आ कर रहे।

शुक बोला कि उसको उनके साथ रहने में बहुत खुशी होगी पर वह बिना राजा की इजाज़त के उनके पास नहीं आ सकता। उसने उनसे यह भी कहा कि वह इस बारे में राजा से उसी दिन बात करेगा और अगर वे अगले दिन उसी जगह फिर आये तो वह उनके साथ खुशी से चलेगा।

राजा शुक को बहुत चाहता था। वह उसको अपने से एक दिन भी अलग करना नहीं चाहता था। उस दिन शुक ने जब राजा से अपने माता पिता के घर जा कर वहॉ उनको साथ थोड़े दिन रहने की इजाज़त मॉगी तो राजा उसको अपने से अलग करना तो नहीं चाहता था पर उसने उसको अनमनेपन से जाने की इजाज़त दे दी।

अगले दिन शुक अपने माता पिता से अपनी तय की जगह मिला और उनके साथ उनके घर चला गया। उनका घोंसला थोड़ी दूर जगह जा कर एक ऊॅचे से पेड़ की चोटी पर था।

[36] Shuk species birds are special. Shuk means Parrot. Parrots can be trained to speak and talk easily. Many people keep them as a pet bird for the same reason.

तीनों चिड़ियें वहॉ पन्द्रह दिन खूब हॅसी खुशी रहे। पन्द्रह दिन बाद शुक ने अपने माता पिता से कहा — "मॉ और पिता जी, राजा ने मुझे केवल पन्द्रह दिन की ही छुट्टी दी थी। आज मेरे पन्द्रह दिन खत्म हो गये हैं कल मुझे राजा के पास चले जाना चाहिये।"

शुक के माता पिता को यह सुन कर अच्छा लगा कि उनका बेटा समझदारी की बात करता है सो उन्होंने उसको जाने की इजाज़त दे दी। पर उन्होंने कहा कि वह राजा के लिये कुछ भेंट भी ले कर जाये।

कुछ देर तक आपस में सोचने विचारने के बाद उन चिड़ियों ने निश्चय किया कि राजा के लिये "अमर फल"[37] भेजना चाहिये। सो अगले दिन शुक ने अमर पेड़ से एक अमर फल तोड़ा और बहुत सावधानी से उसको अपनी चोंच में दबा कर अपनी यात्रा पर निकल पड़ा।

क्योंकि वह अमर फल भारी था शुक उसी दिन राजा के शहर नहीं पहुॅच सका और उसको रात को सड़क पर ही रुकना पड़ा।

उसने एक पेड़ पर रात को शरण ली पर वह यह नहीं सोच पाया कि वह उस फल को कहॉ रखे। अगर उसने उसे अपनी चोंच में ही पकड़े रखा तो यकीनन जब वह सो जायेगा तो वह उसकी चोंच से नीचे गिर जायेगा। तो फिर वह उसे कहॉ रखे।

[37] Fruit of Immortality

खुशकिस्मती से उस पेड़ में उसको एक छेद दिखायी दे गया सो वह फल उसने उस छेद में रख दिया।

अब उस छेद में एक सॉप रहता था। उस सॉप ने रात को किसी समय उस फल में अपने जहरीले दॉत घुसा दिये और इस तरह वह फल जहरीला हो गया।

शुक को तो इस बारे में कुछ पता नहीं था। अगले दिन उसने सुबह सवेरे जल्दी ही उठ कर और कौए के कॉव कॉव करने से भी पहले ही वह अमर फल वहॉ से अपनी चोंच में उठाया और फिर अपनी यात्रा पर चल दिया।

शुक राजा के महल में तभी पहुॅच गया जबकि राजा अपने मन्त्रियों के साथ बैठा हुआ था। राजा अपनी पालतू चिड़िया को देखते ही बहुत खुश हो गया।

उसने उस फल की भी बहुत तारीफ की जो शुक उसके लिये ले कर आया था। वह फल देखने में बहुत सुन्दर था – वह धरती का सबसे सुन्दर फल था। और जैसा उसका नाम था वह फल खाने वाले को अमर कर देता।

राजा उसको तभी खाने वाला था कि उसके दरबारियों ने कहा कि राजा को वह फल इस तरह से नहीं खाना चाहिये क्योंकि वह फल जहरीला भी हो सकता था।

अपने दरबारियों की बात मान कर उसने उस फल को एक कौए के सामने फेंका जो वहीं एक दीवार पर बैठा था। कौए ने वह

फल देख कर उसमें एक चोंच मारी और उसका एक छोटा सा टुकड़ा खाया तो वह तुरन्त ही नीचे गिर गया और मर गया।

यह देख कर राजा को लगा कि शुक इस फल को उसे खिला कर उसकी जान लेना चाहता था। बस उसने उसको पकड़ लिया और उसको मार दिया।

राजा ने उस जहरीले फल की गुठली को शहर के बाहर के एक बागीचे में बोने का हुकुम दे दिया। समय बीतने पर उस गुठली से एक पेड़ निकला और फिर कुछ समय बीतने पर वह पेड़ एक बहुत ही बड़ा पेड़ हो गया और उस पर बहुत सुन्दर सुन्दर फल आने लगे।

अब राजा ने उसके चारों तरफ एक बाड़ा लगाने का हुकुम दे दिया और साथ में वहॉ पर एक चौकीदार भी तैनात कर दिया कि कहीं ऐसा न हो कि कोई उस पेड़ का जहरीला फल खाये और मर जाये।

उसी शहर में एक बूढ़ा ब्राह्मण अपनी पत्नी के साथ रहता था जो भीख मॉग कर अपना गुजारा करता था।

एक दिन वह ब्राह्मण अपनी बदकिस्मती पर बहुत दुखी था कि उसने अपनी पत्नी से कहा — "बजाय इस तरह की भिखारी की ज़िन्दगी जीने के वह उस जहरीले फल को खाना ज़्यादा पसन्द करेगा जो राजा के बागीचे में लगा है। इस तरह वह अपनी ज़िन्दगी

खत्म कर लेगा और इस तरह की गरीबी की ज़िन्दगी जीने से बच जायेगा।"

सो उसी रात वह राजा के बागीचे से उसका वह जहरीला फल लेने के लिये अपने बिस्तर से उठा और बाहर की तरफ चल दिया।

जैसे ही वह उठा तो उसकी पत्नी भी उसका इरादा जान कर अपने बिस्तर से उठ गयी और उसके पीछे पीछे चल दी कि वह भी अपने पति के साथ साथ वह फल खा कर अपनी जान दे देगी।

रात काफी जा चुकी थी। चौकीदार भी उस समय यह सोच कर सो रहा था कि इस समय इस पेड़ के फल तोड़ने कौन आयेगा।

ब्राह्मण ने एक फल तोड़ा और खा लिया।

ब्राह्मणी की पत्नी उसके पीछे ही थी। वह बोली — "जब आप ही नहीं रहेंगे तो मैं जी कर क्या करूँगी। मैं भी इस फल को खाती हूँ और मैं भी मर जाती हूँ।" कह कर उसने भी एक फल तोड़ा और खा लिया।

यह सोचते हुए कि जहर का असर थोड़ा समय तो लेगा वे दोनों घर चले गये और जा कर अपने बिस्तरों में लेट गये। उन्होंने सोचा कि अब वे कभी नहीं उठेंगे।

आश्चर्य की बात कि अगले दिन जब वे उठे तो वे न केवल ज़िन्दा थे बल्कि और दिनों से ज़्यादा जवान और ज़्यादा ताकतवर भी थे। वे इतने ज़्यादा बदल गये थे कि उनके पड़ोसी तो उनको पहचान ही नहीं पा रहे थे।

वह बूढ़ा ब्राह्मण तो बहुत सुन्दर और तेज़ी से काम करने वाला हो गया था। उसके सारे सफेद बाल गायब हो गये थे। उसके गालों की सारी झुर्रियॉ खत्म हो गयी थीं। और जहॉ तक उसकी पत्नी का सवाल है वह भी इतनी सुन्दर हो गयी थी जितनी राजा के घर में कोई स्त्री हो सकती थी।

राजा ने जब ब्राह्मण के इस बदलाव के बारे में सुना तो उसने ब्राह्मण को बुलवा भेजा। उसने आ कर राजा को अपने हालात बताये कि किन हालात में उन दोनों ने वह फल खाया था। और फिर उस फल खाने का उनके ऊपर क्या असर हुआ।

यह सब सुन कर राजा अपनी पालतू चिड़िया के बारे में सोच सोच कर बहुत दुखी हुआ। उसने अपने आपको ही उसकी मौत का जिम्मेदार ठहराया क्योंकि उसने उसको बिना किसी जॉच पड़ताल के ही मार डाला था।"

राजकुमार आगे बोला — "इसलिये इससे पहले कि किसी आदमी का गला काटा जाये उसके बारे में यह पक्का कर लेना चाहिये कि वाकई उसने वह जुर्म किया है या नहीं जिस जुर्म के लिये उसका गला काटा जा रहा है।

मुझे मालूम है कि कल रात के बारे में योर मैजेस्टी सोच रहे हैं कि मैं आपको कमरे में किसी बुरे इरादे से घुसा था पर जब आप मेरी कहानी सुनेंगे तो जरूर खुश होंगे।

कल रात जब मैं अपना पहरा दे रहा था तो मैंने एक स्त्री को आपके महल से बाहर आते देखा। मैंने उससे पूछा कि तुम कौन हो और रात के इस समय में कहॉ जा रही हो।

उसने कहा कि मैं राजलक्ष्मी हूॅ और इस महल की देखभाल करने वाली देवी हूॅ। पर क्योंकि आज रात राजा मर जाने वाला है इसलिये अब मेरा यहॉ कोई काम नहीं है। मैं यह महल छोड़ कर जा रही हूॅ। मैंने उससे कहा कि वह अन्दर चले और मैं आज की रात राजा को मरने से बचाऊॅगा।

मैं सीधा आपके सोने वाले कमरे में गया तो देखा कि एक बहुत बड़ा कोबरा सॉप आपके सोने के पलंग के चक्कर काट रहा है। मैंने तुरन्त ही उसके सैंकड़ों टुकड़े कर डाले और उनको आपकी पान की थाली में रख दिया।

पर जब मैं सॉप को काट रहा था तो उसके खून की एक बूॅद मेरी मॉ के सीने पर गिर पड़ी। मैंने सोचा कि यह मैंने क्या किया अपने पिता को बचाने के लिये अपनी मॉ को ही मार दिया।

तुरन्त ही मैंने एक कपड़े की सात तह कीं उसको अपनी जीभ पर लपेटा और वह खून की बूॅद चाटने के लिये उनके सीने पर झुका। जब मैं वह खून की बूॅद चाट रहा था कि उनकी ऑख खुल गयी।

मैंने बस यही किया है अब अगर आप मेरा गला काटना चाहते हैं तो खुशी से काट सकते हैं।"

यह सुन कर राजा खुशी और कृतज्ञता से अपने बेटे को गले लगा लिया और उस दिन के बाद से वह उसको पहले से भी ज़्यादा प्यार करने लगा।

8 चिड़ियों की भाषा[38]

जानवरों की भाषा की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये एशिया के रूस देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार की बात है कि पवित्र रूस के किसी शहर में एक बहुत ही अमीर सौदागर अपनी पत्नी के साथ रहता था। उसके एक अकेला बेटा था जो बहुत ही प्यारा होनहार और बहादुर था। उसका नाम था इवान।

एक दिन इवान अपने माता पिता के साथ खाने की मेज पर बैठा हुआ था। उसी कमरे में खिड़की के पास एक पिंजरा टॅगा हुआ था जिसमें एक मैना और एक मीठा बोलने वाली भूरे रंग की चिड़िया बन्द थीं।

मैना ने अपनी ऊॅची आवाज में अपना मीठा गाना गाना शुरू किया। सौदागर ने उसका गाना सुना और सुना और सुन कर बोला — "काश मैं सब चिड़ियों के गानों के मतलब समझ सकता। तो मैं उस आदमी को अपनी आधा पैसा दे देता अगर कहीं कोई ऐसा आदमी होता तो जो मुझे सारी चिड़ियों के सारे गानों के मतलब समझा देता।"

---

[38] The Language of the Birds – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/ftr/chap03.htm#page_66
From the Book "Folk Tales from the Russian", by Verra Xenofontovna Kalamatiano de Blumenthal. 1903. 9 tales.

इवान ने अपने पिता के ये शब्द अपने दिमाग में रख लिये और इस बात से उसे कोई मतलब नहीं वह कहॉ गया, कोई मतलब नहीं वह कहॉ था, कोई मतलब नहीं उसने क्या किया वह हमेशा यही सोचता रहा कि वह किस तरह से चिड़ियों की भाषा सीख सकता था

कुछ समय बाद की बात है कि एक दिन इवान एक जंगल में शिकार खेलने के लिये गया कि तेज़ हवा बह निकली बादल आसमान पर छा गये बिजली चमकने लगी बादल गरजने लगे और बहुत ज़ोर से बारिश होने लगी।

इस तूफान से बचने के लिये इवान एक बड़े पेड़ के नीचे आ गया। वहॉ उसने उस पेड़ की शाखाओं मे एक घोंसला देखा। उस घोंसले में चार छोटी छोटी चिड़ियें बैठी थीं। वे वहॉ अकेली ही थीं क्योंकि वहॉ उनके माता पिता कहीं दिखायी नहीं दे रहे थे। वहॉ कोई उनको ठंड और पानी से बचाने वाला भी नहीं था।

भले इवान को उन पर दया आ गयी। वह पेड़ पर चढ़ गया और अपने काफ्तान से उन बच्चों को ढक दिया। काफ्तान रूसी किसानों और सौदागरों के पहनने का एक लम्बा सा कोट होता है।

कुछ देर बाद तूफान थम गया तो एक बड़ी चिड़िया वहॉ उड़ती हुई आयी और घोंसले के पास की एक शाख पर बैठ गयी।

वह बड़े प्यार से इवान से बोली — "इवान तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद कि तुमने ठंड और बारिश से मेरे छोटे छोटे बच्चों की रक्षा

की। इसके बदले में मैं तुम्हारे लिये कुछ करना चाहती हूँ। कहो तुम्हारी क्या इच्छा है।"

इवान बोला — "मुझे किसी चीज़ की कमी नहीं है। मेरी अपनी सुख सुविधा के लिये मेरे पास सब कुछ है पर तुम मुझे चिड़ियों की भाषा सिखा दो तो तुम्हारी बड़ी मेहरबानी होगी।"

वह चिड़िया बोली — "तुम मेरे साथ तीन दिन ठहरो तो तुम उसके बारे में सब जान जाओगे।"

इवान तीन दिन जंगल में रहा उसने उस बड़ी चिड़िया का सिखाया हुआ सब कुछ ठीक से सीख लिया। और इस तरह वह घर पहले से कहीं ज़्यादा होशियार हो कर लौटा।

एक दिन जब वह अपने माता पिता के साथ फिर से बैठा हुआ था तो मैना ने कुछ गाया। उसका गाना बहुत दुख का था इतने दुख का था कि उसका गाना सुन कर सौदागर और उसकी पत्नी भी दुखी हो गये।

और उनका बेटे भले इवान पर जो उसका गाना बड़े ध्यान से सुन रहा था उस पर तो उसका और भी ज़्यादा असर पड़ा। उसके तो ऑसू ही बहने लगे।

इवान के माता पिता ने इवान से पूछा — "प्यारे बेटे तुम क्यों रो रहे हो क्या बात है?"

रोते रोते इवान बोला — "ऐसा इसलिये है कि मैं इस मैना के गीत का मतलब समझता हूँ। इस गीत का मतलब हम सबके लिये दुख का है।"

उसके माता पिता ने कहा — "क्या मतलब है इसके गीत का बेटा? तुम हमको सब कुछ सच सच बताओ। कोई बात हमसे छिपाना नहीं।"

इवान बोला — "कितने दुख की बात है। कितना अच्छा होता कि वह कभी पैदा ही न हुआ होता।"

माता पिता ने कहा — "बेटा अब तुम हमें और ज़्यादा डराओ नहीं। अगर तुम सचमुच में ही इस गीत का मतलब समझते हो तो हमको तुरन्त ही बतलाओ कि यह मैना क्या गा रही है।"

इवान बोला — "क्या आपको खुद पता नहीं चल रहा है कि यह मैना यह कह रही है कि वह समय आने वाला है जब सौदागर का बेटा इवान एक राजा का बेटा इवान बन जायेगा और उसका पिता उसके यहाँ एक सादा से नौकर की हैसियत से काम करेगा।"

सौदागर और उसकी पत्नी दोनों ही यह सुन कर परेशान हो गये और उन्होंने अपने भले बेटे इवान का विश्वास नहीं किया। पर फिर भी उनके मन में कहीं कुछ खटका लगा रहा।

सो एक दिन उन्होंने अपने बेटे को सुलाने वाला एक पेय पिला दिया और जब वह गहरी नींद सो गया तो वे उसको नाव में रख

कर समुद्र में ले गये। वहॉ ले जा कर उन्होंने नाव की पाल खोल दीं और उसको समुद्र में धकेल दिया।

काफी समय तक नाव समुद्र में बहती रही। आखीर में वह एक सौदागर के जहाज़ के पास आ गयी और उससे टकरा गयी। वह इतनी ज़ोर से टकरायी कि इवान की ऑख खुल गयी।

उधर उस बड़े जहाज़ पर काम करने वालों ने भी इवान को देखा तो उन्हें उस पर दया आ गयी। उन्होंने उसको अपने साथ ले जाने का निश्चय किया सो उन्होंने उसको अपने जहाज़ पर चढ़ा लिया।

फिर उन्होंने आसमान में बहुत ऊॅचे उड़ते हुए सारस देखे तो इवान उन लोगों से बोला — "सावधान रहना। ये सारस तूफान आने की भविष्यवाणी कर रहे हैं। हमको किसी बन्दरगाह पर चले जाना चाहिये वरना हम खतरे में पड़ जायेंगे और हमारे जहाज़ को बहुत नुकसान पहुॅचेगा। हमारे पाल फट जायेंगे और मस्तूल टूट जायेंगे।"

पर इवान के कहने पर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया और वे चलते रहे। कुछ ही देर में तूफान आ गया। हवा ने जहाज़ तोड़ दिया और उनको अपना जहाज़ मरम्मत करने में काफी मेहनत करनी पड़ी।

जब उन्होंने अपना काम खत्म कर लिया तब उन्होंने बहुत सारे जंगली हंस अपने ऊपर उड़ते हुए देखे और आपस में बात करते हुए सुने।

इस बार जहाज़ के लोगों ने बड़ी रुचि से इवान से पूछा कि वे जंगली हंस क्या कह रहे थे।

इवान ने कहा — "वे कह रहे हैं कि सावधान रहना। वे क्या कह रहे है यह मैं साफ तरीके से सुन सकता हूँ कि समुद्री डाकू पास ही हैं और अगर हम पास के किसी बन्दरगाह में जा कर शरण नहीं ले लेते तो वे हमें बन्दी बना लेंगे और फिर मार देंगे।"

इस बार जहाज़ के लोगों ने बिल्कुल भी देर नहीं की वे तुरन्त ही बन्दरगाह की तरफ मुड़ गये। जैसे ही वे बन्दरगाह में पहुँचे कि समुद्री डाकुओं की नावें उनके सामने से गुजर गयीं। उन्होंने उन डाकुओं को कई और नावों को पकड़ते हुए और लूटते हुए देखा।

जब समुद्री डाकुओं का खतरा टल गया तो जहाज़ के लोग इवान के साथ और आगे तक चलते चले गये। अन्त में उनके जहाज़ ने एक शहर में अपना लंगर डाला। यह शहर बड़ा था और सौदागरों के लिये अनजाना था।

इस शहर के राजा को तीन काले कौओं ने तंग कर रखा था। वह उनसे बहुत परेशान था। ये तीन कौए हमेशा ही राजा के महल की खिड़की पर बैठे रहते थे और कुछ कुछ बोलते रहते थे।

किसी को नहीं पता था कि उनको वहॉ से कैसे भगाया जाये और कोई उनको मार भी नहीं सकता था।

राजा ने अपने शहर हर चौराहे पर और हर मुख्य इमारत पर यह नोटिस लगवा दिया था कि जो भी कोई इन शोर मचाने वाली चिड़ियों को राजा के महल से हटाने में कामयाब होगा उसकी शादी राजा की सबसे छोटी कोरोलेवना[39] यानी बेटी से कर दी जायेगी।

और जो कोई इस काम को करने का साहस करेगा और महल से उनको हटाने में नाकामयाब रहेगा उसका सिर कटवा दिया जायेगा।

इवान ने यह नोटिस बड़े ध्यान से पढ़ा एक बार, दो बार, तीन बार... । आखीर में उसने क्रास का निशान बनाया और महल की तरफ चल दिया। वहॉ जा कर उसने नौकरों से कहा "खिड़की खोलो मैं ज़रा सुनना चाहता हूँ कि वे क्या बात करते हैं।"

नौकरों ने वैसा ही किया जैसा इवान ने उनसे करने के लिये कहा था। उन्होंने खिड़की खोल दी। बे कौए तभी भी बहीं बैठे हुए थे और शोर मचा रहे थे। इवान ने कुछ देर तक उनको सुना और फिर नौकरों से कहा कि वे उसको राजा के पास ले चलें।

नौकर उसको राजा के पास ले गये। जब वह राजा के कमरे में पहुँचा तो राजा अपनी राजगद्दी पर बैठा हुआ था। इवान ने उसको

[39] Korolevna – Princess, the daughter of a King

सिर झुकाया और कहा — "योर मैजेस्टी यहॉ तीन कौए बैठे हैं। एक पिता कौआ है एक माता कौवी है और एक बेटा कौआ है।

अब मुश्किल यह है कि वे इस बारे में आपका शाही हुकुम लेना चाहते हैं कि बेटे कौए को अपने पिता कौए की बात माननी चाहिये या माता कौवी की।"

राजा ने जवाब दिया कि बेटे कौए को तो अपने पिता कौए की ही बात माननी चाहिये।

जैसे ही राजा ने अपना यह शाही हुकुम सुनाया पिता कौआ और बेटा कौआ दोनों एक तरफ को उड़ गये। और मॉ कौवी दूसरी तरफ को गायब हो गयी। उसके बाद से उन कौओं को फिर कभी किसी ने वहॉ नहीं देखा।

राजा ने इवान को अपना आधा राज्य दे दिया और सबसे छोटी कोरोलेवना ब्याह दी।

इधर इवान की मॉ चल वसी और उसका पिता भी गरीब हो गया। अब उसके पिता की देखभाल करने वाला भी कोई नहीं रह गया था। अब वह बूढ़ा बेचारा सब जगह भीख मॉग मॉग कर गुजारा करता था। वह एक घर से दूसरे घर जाता एक गॉव से दूसरे गॉव जाता और एक शहर से दूसरे शहर जाता।

एक दिन वह उस शहर में आ निकला जिसमें इवान रहता था। वह महल के पास से भीख मॉगता गुजर रहा था कि इवान ने उसे देख लिया। उसने उसको पहचान लिया और अन्दर आने का हुकुम

दिया। उसने उसको बहुत अच्छा खाना खिलाया और उसको पहनने के लिये अच्छे कपड़े दिये।

फिर उसने उससे पूछा — "मैं आपके लिये क्या कर सकता हूँ।"

गरीब पिता ने अपने बेटे को पहचाना नहीं और कहा — "अगर तुम इतने ही अच्छे हो तो तुम मुझे यहाँ रहने की जगह दे दो और अपने वफादार नौकरों के साथ मुझे भी अपना नौकर रख लो।"

तब इवान बोला — "मेरे प्यारे पिता जी, वह मैना उस समय जो गाना गा रही थी तो उस समय तो आपने उस पर शक किया और आज आप वही होता देख रहे हैं।"

यह सुन कर वह बूढ़ा डर गया और अपने बेटे के पैरों में पड़ गया। पर उसका बेटा इवान अभी भी पहले जैसा ही अच्छा बेटा रहा। उसने अपने पिता को अपनी बाँहों में ले कर अपने गले लगा लिया। दोनों अपने अपने दुखों पर कुछ देर तक रोते रहे।

पिता को वहाँ रहते रहते कई दिन हो गये तो एक दिन उसने हिम्मत करके अपने बेटे कोरोलेविच[40] से पूछा — "बेटा ज़रा बताओ तो कि ऐसा कैसे हुआ कि तुम उस नाव में मरे नहीं।"

[40] Korolevich – Prince

इवान कोरोलेविच बहुत ज़ोर से हॅसा और बोला — "मुझे लगता है पिता जी कि वह मेरी किस्मत में था ही नहीं कि मैं उस नाव में मर जाऊॅ।

मेरी किस्मत में तो यह था कि मैं अपनी सुन्दर पत्नी कोरोलेवना से शादी करूॅ और अपने पिता का बुढ़ापा सुखी करूॅ।

9 चार राजकुमार[41]

जानवरों की भाषा जानने वाली यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के भारत देश के काश्मीर प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह बहुत पुरानी बात है कि एक राजा था जो बहुत होशियार था बहुत ही संत स्वभाव का और बहुत ही अक्लमन्द था। इस तरह वह एक आदर्श राजा था। उसका दिमाग हमेशा अपने देश का और अपनी जनता का भला चाहने में लगा रहता था।

उसका दरबार हर एक के लिये हर समय खुला रहता था। वह नीचे से नीचे आदमी की भी हर बात सुनने के लिये हमेशा तैयार रहता था। उसने हर तरीके के व्यापार को बढ़ावा दिया था। उसने बीमारों के लिये अस्पताल बनवाये। यात्रियों के लिये सराय बनवायीं और पढ़ने वालों के लिये बड़े बड़े स्कूल खोले। ये और ऐसे ही कई और काम उसने अपने लोगों के लिये किये।

ऐसे अक्लमन्द होशियार न्यायप्रिय और भला चाहने वाले राजा की देखरेख में लोग बहुत खुश थे और फल फूल रहे थे। गरीब अज्ञानी और नीच आदमियों का मिलना वहाँ मुश्किल था।

---

[41] The Four Princes (Tale No 60) – a folktale of Kashmir, India. Taken from the book "Folk-Tales of Kashmir", by James Hinton Knowles. 2nd edition. London, Kegan Paul. 1887.
This book is available on Internet
https://books.google.ca/books?id=ChaBAAAAMAAJ&pg=PR3&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false .

पर इस इतने बड़े और अच्छे राजा के कोई बेटा नहीं था। इस बात से वह बहुत दुखी रहता था। यही ऐसा एक काला बादल था जो उसकी खुश और शानदार जिन्दगी पर छाया रहता था। वह रोज शिव जी[42] की प्रार्थना करता कि वह उसको एक बेटा दे दें जो उसके बाद उसकी राज गद्दी पर बैठे।

वह बहुत दिनों तक अपनी प्रार्थना के जवाब का इन्तजार करता रहा कि एक दिन शिव जी एक जोगी के वेश में उसके पास आये और उसके अच्छे व्यवहार से इतने खुश हुए कि वह उससे बोले — "बच्चा मॉग तेरी क्या इच्छा है मैं तुझे वही दूँगा।"

राजा बोला — "महाराज मुझे किसी चीज़ की इच्छा नहीं है। भगवान ने मुझे पैसा इज़्ज़त ताकत शान शान्ति सन्तोष सब कुछ दे रखा है केवल एक चीज़ के। और वह मुझे कौन देगा।"

जोगी ने पूछा — "क्या तू उस चीज़ को मुझसे मॉगने में डरता है? ओ राजा क्या तू जानता है कि तू क्या कह रहा है?"

राजा बोला — "आप सच कह रहे हैं। मैं एक ऐसे आदमी की तरह से बात कर रहा हूँ जो धार्मिक तरीके से पागल होता है। ओ महात्मा आप मुझे माफ करें पर अगर आपकी किसी देवता के ऊपर

[42] One of the three main Gods of Hindus – Brahmaa, Vishnu and Shiv. Shiv is the great representative of Jogi or Tapaswi (ascetic), the ideal of what can be attained by keeping of the body in subjection and by exclusive contemplation of divine things, hence he Mahajogi. And in this character he is depicted with ash-covered body, matted locks and in a most emaciated condition

ताकत है तो मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप उनसे मेरी तरफ से कहें।"

जोगी बोला — "तू खुश रह बच्चा। तेरे कई बेटे होंगे। ले ये चार फल ले और इन्हें अपनी पत्नी को खाने के लिये दे देना और उससे कहना कि वह इनको रविवार की सुबह सूरज निकलने से पहले खाये। इससे उसके चार बेटे होंगे जो बहुत होशियार और बहुत अच्छे होंगे।"[43]

राजा ने जोगी से वे चारों फल ले लिये और उन्हें बहुत धन्यवाद दिया। जोगी राजा को चारों फल दे कर वहाँ से चले गये।

जोगी के जाने के बाद वे फल ले कर राजा अपने महल में गया और अपनी पत्नी को जोगी के आने की और उनके फल देने की बात बतायी। यह अच्छी खबर सुन कर रानी तो बहुत ही खुश हो गयी। वे दोनों अब आने वाले रविवार का बड़ी उत्सुकतापूर्वक इन्तजार करने लगे। अगले रविवार को रानी ने सूरज निकलने से पहले वे चारों फल खा लिये।

जैसा जोगी ने कहा था वैसा ही हुआ। फल खाने के बाद रानी को बच्चे की आशा हो हो गयी और समय आने पर उसने चार बेटों को जन्म दिया। बच्चों के होने के समय का कष्ट उसके लिये कुछ

[43] Among other extraordinary powers of Jogi or Fakir seem to be able to grant sons to the barren. Some special fruit eating is the general remedy. In Indian folktales mangoes, Lychi, apple, a drug to be swallowed with the juice of pomegranate flowers, barley corn can be cited.

ज़्यादा ही हो गया सो जैसे ही उसने चौथे बेटे को जन्म दिया उसने एक चीख मारी और मर गयी। बेचारी रानी, जब उसकी इच्छा पूरी हुई तो वह खुद चल बसी।

बेचारे राजा की भी यह इच्छा तो पूरी हुई कि उसको उसका वारिस मिल गया पर किस कीमत पर – अपनी प्रिय पत्नी को खोने के बाद। महल पर दुख के बादल एक बार फिर बहुत दिनों तक छाये रहे। राजा इतना ज़्यादा दुखी था कि उसको तसल्ली देना मुश्किल हो गया।

चारों बच्चों को चार धायों की देखभाल में रख दिया गया। बड़े हो कर वे बहुत मजबूत तन्दुरुस्त चतुर और सुन्दर लड़के बन गये। राजा उन सबको बहुत प्यार करता था।

उसने उनको पढ़ना लिखना सिखाने के लिये अच्छे से अच्छे मास्टर रख दिये। वह उनको मॅहगी से मॅहगी और अद्भुत से अद्भुत चीज़ें ला कर देता था। वह अपने चारों सुन्दर और होशियार बेटों के लिये कोई भी मुश्किल उठाने के लिये हमेशा तैयार रहता था।

इस बीच राजा ने दूसरी शादी कर ली। पर वह दिन बहुत बुरा दिन था जब उसने दूसरी शादी की। जब उसकी दूसरी पत्नी ने राजा की पहली पत्नी के बच्चों को इतना सुन्दर और होशियार होते देखा तो वह उन चारों बच्चों से बहुत जलने लगी क्योंकि उसको लगा कि

राजा उन्हीं को चाहेंगे और राजा के बाद वे ही राजा की गद्दी के मालिक होंगे उसके अपने बच्चे नहीं।

सो उसने अपने पति की नजरों में उनकी जिन्दगी खराब करने का निश्चय किया। उसने उनको कुछ ऐसा काम देने का तय किया जिसे या तो वे न कर सकें या फिर उसको करने में उनकी मौत हो जाये।

यह तो हम पहले ही कह चुके हैं कि राजा अपने लोगों और देश की उन्नति में लगा रहता था। पर इस काम को करने में अब उसको अपनी पोजीशन बाधा डाल रही थी क्योंकि उसके पास बहुत काम थे।

हालॉकि राजा इस काम के लिये अपने मन्त्रियों और अपने नीचे काम करने वालों पर निर्भर करता था क्योंकि वह यह समझता था कि अधिकतर वे सब न्यायपूर्ण और ईमानदार थे फिर भी उसने यह निश्चय किया कि वह खुद इन सब कामों को जा कर देखेगा और जानने की कोशिश करेगा कि लोग उसके बारे में क्या सोचते हैं और देखेगा कि उसके बारे में सबका सोचना ठीक है या नहीं।

इसलिये वह अक्सर वेश बदल कर गॉव गॉव शहर शहर दिन और रात में जा कर यह देखा करता था कि लोगों को उसका राज कैसा लग रहा है। इस तरीके से वह अपने लोगों की जरूरतों को भॉपता था और उनको पूरी करने की कोशिश करता था और लोग इस बात पर आश्चर्य करते थे कि राजा इतना होशियार कैसे है।

यह सब कुछ समय तक चलता रहा कि एक दिन सुबह को जल्दी ही जब राजा एक पड़ोस के गॉव का चक्कर काट कर घर लौट रहा था बहुत ज़ोर की बारिश शुरू हो गयी। राजा को इतनी भारी बारिश का उस समय आशा ही नहीं था सो वह उसके लिये तैयार नहीं था।

अब क्योंकि वह लम्बी सवारी करके आ रहा था तो कीचड़ की वजह से उसका हुलिया बहुत खराब हो गया था। जब वह अपने महल में घुसा तो वह राजा की बजाय एक मजदूर जैसा लग रहा था। दरवाजे पर जो सन्तरी आदि खड़े रहते हैं उन्होंने भी उसको नहीं पहचाना सो उन्होंने उसको वह शाही सैल्यूट भी नहीं मारा जो राजा को दिया जाता है।

रानी ने जब राजा की हालत के बारे में सुना तो जब राजा ने अपने गीले और कीचड़ भरे कपड़े बदल लिये और वह उसके कमरे में गया तो वह उससे बहुत गुस्से में मिली।

राजा ने पूछा — "प्रिये तुम इतना गुस्सा किसलिये हो।"

वह बोली — "माई लौर्ड और राजा, मैं यह बिल्कुल नहीं चाहती कि आप यह सब काम करें। ये काम अब आपके इस उम्र और ओहदे के लायक करने के नहीं हैं। आप अपने बेटों को अब यह काम क्यों नहीं सौंप देते।

वे अब बड़े हो गये हैं। वे काफी अक्लमन्द भी हैं और अच्छे भी हैं। मैं आपसे विनती करती हूॅ कि अब ऐसे काम आप बच्चों

को दे दीजिये। इससे मेरी आपके लिये चिन्ता भी कम हो जायेगी और राज्य के काम का भी नुकसान नहीं होगा। इसके अलावा वे लोग भी राज्य का काम करना सीखेंगे।"

राजा बोला — "यह तुमने ठीक ही कहा है प्रिये। यही ज़्यादा ठीक रहेगा कि मैं ये सब काम अब उन जवान हाथों को दे दूँ जो मुझसे भी ज़्यादा अक्लमन्द और मेहनती हैं। वे भी किसी दिन राजा और राज करने वाले बनेंगे। उनको भी यह सब काम सीखना चाहिये।

जब तक मैं जिन्दा हूँ तब तक कम से कम मैं उनको बताता रहूँगा और उनकी सहायता करता रहूँगा कि जब वे राज करें तब उनको क्या करना चाहिये। मैं अभी उन्हें बुलाता हूँ और अपनी इच्छा बताता हूँ।"

सो राजा ने अपने चारों बेटों को तुरन्त बुलाया और जब वे आ गये तो उसने रानी से हुई अपनी बातचीत उनको बतायी कि उसने अपना यह रात को घूमने वाला काम अब उनको देने का फैसला किया है।

चारों राजकुमारों को यह जान कर बहुत खुशी हुई कि राजा को उन पर पूरा विश्वास है और वे भी अब राजकाज में राजा का हाथ बँटाने के काबिल हो गये हैं। उन्होंने राजा को विश्वास दिलाया कि राजा उनके काम में कभी भी कोई ढील या कमी नहीं पायेगा जिससे उसके विश्वास को ठेस पहुँचे।

उसी दिन से रात को उन्होंने अपना काम शुरू कर दिया यानी उस रात से अब वे वेश बदल कर गॉव गॉव शहर शहर यह देखने के लिये चक्कर काटने लगे कि उनके राज्य में कोई दुखी तो नहीं था या किसी को किसी चीज़ की जरूरत तो नहीं थी।

उनमें से हर एक को इस तरह चक्कर काटना था और अगर कोई खास बात देखे तो वह बात आ कर राजा को बतानी थी। अब इस तरह की सख्त निगरानी में राज्य का खुशहाल और शान्तिपूर्ण रहना तो जरूरी था।

पर इन राजकुमारों के खिलाफ धोखाधड़ी के बीज तो राजमहल में बोये जा रहे थे। रानी की जलन राजकुमारों के लिये रोज ब रोज बढ़ती ही जा रही थी। उससे जितना भी हो सकता था वह उतने तरीके से उनके खिलाफ जालसाजी करती रहती थी।

पहले तो राजा ने उसके झूठे इलजाम और बेरहम इच्छाऐं सुनी नहीं पर बाद में उसकी चतुरायी और सुन्दरता का जादू उस पर चल गया क्योंकि रानी बहुत सुन्दर भी थी और चतुर भी। राजकुमारों ने देखा कि राजा अब उनकी तरफ से काफी बदल गया था। राजा ने अपने चारों बेटों से कठोरतापूर्वक बोलना शुरू कर दिया था। अक्सर वह उन पर शक भी करने लगा था।

इस विश्वास की कमी ने राजा का उनके लिये प्यार भी कम कर दिया और इसी वजह से राजकुमारों की मेहनत भी कम होने लगी। वे अब अपना काम ठीक से नहीं कर पाते थे।

यह सब काफी समय तक चलता रहा। आखिर वे दिन के झगड़ों से और रात के पहरे से तंग आ गये तो एक दिन वे चारों आपस में मिले कि इस बारे में उन्हें क्या करना चाहिये। उन्होंने अपनी यह मीटिंग आधी रात को की और जंगल के ऐसे हिस्से में की जहॉ कोई आता जाता नहीं था।

हर राजकुमार ने अपनी दुखभरी कहानी सुनायी और सिवाय सबसे बड़े भाई के सब भाइयों ने यह नतीजा निकाला कि "मेरी सलाह यह है भाइयो कि हम देश के इस हिस्से से कहीं और चले जायें जहॉ भी परमेश्वर हमें ले जाये और फिर जो होगा सो देखा जायेगा भुगतेंगे।"

सबसे बड़े राजकुमार ने कहा — "ऐसा नहीं करो मेरे भाइयो। तुम सब यहीं रुको। यह क्या बेवकूफी तुम लोगों ने अपने दिल में पाल रखी है। ऐसा नहीं करो। मैं तुम्हें बताता हूॅ कि हमें क्या करना चाहिये। तुम लोग जानते ही नहीं कि तुम लोग क्या कह रहे हो। अगर तुम समझदारी से काम लो तो तुम लोगों को ऐसी बात करनी ही नहीं चाहिये। सो नहीं पाने की वजह से तुम्हारी अक्ल भी चली गयी है। समझदारी की हालत में तुमको ऐसी बातें नहीं करनी चाहिये।

क्या एक बहुत बड़े और अच्छे राजा के जो राजगद्दी पर बैठा हो उसके बच्चों को इस तरह उसका हुकुम न मान कर नीच लोगों की तरह से भाग जाना चाहिये। नहीं कभी नहीं। मैं तुमसे फिर

कहता हूँ कि इस देश को छोड़ कर कहीं नहीं जाना। कभी ऐसा विचार अपने मन में भी नहीं लाना।

जाओ अब तुम सब अपने घर जाओ और जा कर सो जाओ। इस रात मैं पहरा दूँगा। कल को कोई दूसरा पहरा देगा परसों को तीसरा और फिर चौथा। इस तरह हम लोगों को काफी आराम मिल पायेगा और इस पहरे काम भी हमेशा ठीक से होता रहेगा।"

कह कर सबसे बड़े राजकुमार ने सबको विदा कहा और अपने पहरे पर चला गया बाकी सब अपने अपने घर चले गये। वे अपने बड़े भाई की सलाह से बहुत प्रभावित थे सो उनका भी दुख जाता रहा और वे भी जा कर तुरन्त ही सो गये।

अगली रात दूसरा राजकुमार पहरे पर गया और पहले राजकुमार ने आराम किया। तीसरी रात तीसरा राजकुमार पहरे पर गया और चौथी रात को सबसे छोटा राजकुमार पहरे पर गया जबकि दूसरे राजकुमार सोते रहे।

यह सब भी कई महीने तक चला और सफलतापूर्वक चला। राजकुमार अपने पिता की बेरहमी को बहादुरी से सहते रहे और वैसे ही करते रहे जैसा कि राजा चाहता था।

उनकी पवित्रता अच्छाई और लोगों की परेशानियों की तरफ ध्यान की सब लोग बड़ाई करते थे सिवाय राजा और रानी के जो उनकी बुराई करते थे।

यह कितना सच है कि "जिनमें सच्चे गुण होते हैं देवता हमेशा उनको इनाम देते हैं।"

एक रात सबसे बड़ा राजकुमार अपने पहरे पर था तो वह एक मकान के पास पहुँचा जिसमें एक ब्राह्मण अपनी पत्नी के साथ रहता था। राजकुमार ने उनको उनकी खुली हुई खिड़की से देखा। जब वह उनको देख रहा था तभी ब्राह्मण ने उठ कर दरवाजा खोला और बाहर आया।

उसने रोज की तरह से आसमान की तरफ देखा और जैसे ही उसने ऐसा किया कि वह घर के अन्दर "त्राहि त्राहि"[44] कहता हुआ भाग गया। उसकी पत्नी ने परेशान हो कर पूछा "क्या हुआ।"

ब्राह्मण बोला — "मैने अपने राजा का तारा किसी और तारे से लड़ता हुआ देखा।"

पत्नी ने पूछा — "तो इसका क्या मतलब हुआ।"

ब्राह्मण बोला — "इसका मतलब यह है कि आज से सातवें दिन हमारा राजा मर जायेगा।"

यह सुन कर ब्राह्मणी की ऑखों में ऑसू आ गये। वह रोती हुई बोली — "क्या? राजा मर जायेगा? राजा कैसे मर जायेगा बीमारी से या किसी दुश्मन के मारने से?"

ब्राह्मण बोला — "आज से सातवें दिन रात के पहले प्रहर के बाद एक जहरीला काला सॉप आसमान से उतरेगा और राजा के

[44] Means "Have mercy, Please pardon"

सोने के कमरे के पूर्व की तरफ के ऑगन में खुलने वाले दरवाजे से कमरे में घुसेगा। यह सॉप राजा के कमरे में घुस कर राजा के पैर के ऑगूठे में काट लेगा और राजा मर जायेगा।"

ब्राह्मणी बोली — "पर यकीनन ऐसा नहीं होना चाहिये। क्या राजा को इस तरह की मौत से बचाया जा सकता है। अगर इसका कोई तरीका हो तो मुझे बताओ। सच पूछो तो ऐसे न्यायपूर्ण और चतुर राजा को इस तरह से नहीं मरना चाहिये।"

ब्राह्मण बोला — "देवता ही ऐसे भयानक नुकसान को बचा सकते हैं। मुझे कुछ घी[45] और कुछ लकड़ी दो ताकि मैं उसके लिये देवताओं को कोई भेंट दे सकूॅ।

क्योंकि शास्त्रों में लिखा है कि अगर किसी आदमी को राजा की बदकिस्मती का पता चल जाये और अगर वह उस समय देवताओं को भेंट दे तो उस राजा को उसकी बदकिस्मती से बचाया जा सकता है नहीं तो राजा नहीं बचेगा। कौन जाने कि हमारा राजा हमको वापस मिल जाये।"

ऐसा कह कर ब्राह्मण ने कुछ लकड़ियॉ लीं उनमें आग जलायी और उसमें ग्यव डाला। उसने बहुत सारी प्रार्थनाऐं कीं और बहुत सारी आहुतियॉ दीं फिर उठ कर अपनी पत्नी से बोला — "राजा की

[45] Translated for the word "Gyav" – Ghee or clarified butter. It is used in Havan also as the Brahman is talking about the offerings to Devtaa.

जान बच जायेगी अगर उसका कोई सम्बन्धी इन बातों का पालन करेगा।

वह आदमी जो भी इस काम को करना चाहे महल के पूर्व की तरफ वाले ऑगन में कुछ गड्ढे खोदे। उनमें से कुछ वह पानी से भर दे और बाकी बचे गड्ढे दूध से भर दे। फिर वह इन सब गड्ढों में और उस रास्ते पर जो राजा के सोने के कमरे तक जाता है बीच बीच में फूल डाल दे।

इसके बाद जब सॉप के आने का समय हो तो वह तलवार ले कर दरवाजे पर खड़ा हो कर वहॉ उसका इन्तजार करे।

सॉप वहॉ जरूर आयेगा। वह पानी और दूध के गड्ढों में तैरता हुआ रास्ते पर आयेगा जहॉ वह फूलों के ऊपर से हो कर दरवाजे तक पहुँचेगा। तब तक वह किसी को नुकसान पहुँचाने लायक नहीं रहेगा।

जब सॉप दरवाजे पर आये वह आदमी जिसने इस काम को करने का जिम्मा ले रखा है और जो तलवार लिये दरवाजे पर खड़ा है तुरन्त ही उसे तलवार से मार दे। सॉप को मारने के बाद वह उसका थोड़ा सा गरम खून ले और राजा के कमरे में जा कर उसे राजा के पैर के अँगूठे पर मल दे।

इस तरीके से राजा इस बदकिस्मती से बच जायेगा। पर अफसोस यह काम करेगा कौन?"

राजकुमार जिसकी उत्सुकता पल पल बढ़ती जा रही थी वहीं खिड़की के पास खड़ा हुआ यह सब सुन रहा था। उसे यह सब सुन कर बहुत आश्चर्य हुआ।

सुबह को जब वह घर आया तो उसने रात की बात अपने तीनों भाइयों को बतायी पर उन्होंने इस बात की भनक भी राजा के कानों तक नहीं पहुँचने दी। अगली छह रात राजकुमार बारी बारी से पहरे पर जाते रहे। पर सातवीं रात सबसे बड़े राजकुमार ने पहरे पर जाने की इच्छा प्रगट की हालाँकि उस दिन उसकी बारी नहीं थी। वह केवल अपने पिता को बचाना चाहता था।

सो वह पहरे के लिये गया और राजा के सोने के कमरे के पूर्व की तरफ के आँगन में उसने कुछ गड्ढे खोदे। कुछ को उसने पानी से भरा और कुछ को दूध से। फिर उसने उस रास्ते पर जो राजा के कमरे तक जाता था फूल बिखेर दिये।

जब सब कुछ तैयार हो गया तो वह नंगी तलवार ले कर राजा के कमरे के पूर्वी दरवाजे पर खड़ा हो कर साँप का इन्तजार करने लगा। यह सब उसने तब किया जब राजा और रानी सोने चले गये।

रात का पहला प्रहर मुश्किल से ही गुजरा होगा जब राजकुमार ने जो दरवाजे पर चौकन्ना खड़ा था एक आवाज सुनी जैसे ऊपर से कुछ गिरा हो। फिर उसने किसी जानवर के पानी और दूध भरे गड्ढों में से चलने की बहुत धीमी सी आवाज सुनी। और उसके

बाद किसी के उन फूलों में से दौड़ने की आवाज जो उसने राजा के कमरे तक आने वाले रास्ते पर बिछाये थे।

और तब उसने देखा कि एक सॉप उसकी तरफ लहराता हुआ चला आ रहा था। उसको देखते ही राजकुमार की पकड़ तलवार पर मजबूत हो गयी और पल भर में ही उसने उससे सॉप के दो टुकड़े कर दिये।

फिर उसने तुरन्त ही उसका गरम खून लिया और अपनी ऑखों पर पट्टी बॉध कर बिना किसी आवाज के राजा के सोने के कमरे का दरवाजा खोला और उसमें घुसा। उसने अपनी ऑखों पर पट्टी इसलिये बॉध रखी थी ताकि वह अपने पिता के प्राइवेट कमरे को न देख सके।

सावधानी से उसने राजा के पैर की उॅगलियों को महसूस किया और जब उसने उन्हें पकड़ लिया जैसा कि उसने सोचा कि वे राजा के पैर की उॅगलियॉ थीं उसने उनमें से कुछ पर वह खून मल दिया। पर वह यह देख नहीं सका कि वह क्या कर रहा था। उसमें से कुछ उॅगलियॉ रानी की थीं।

जैसे ही उसने रानी की उॅगलियों को छुआ तो रानी की ऑख खुल गयी। रानी की नींद बहुत हल्की थी वह बहुत जल्दी जाग जाती थी। जब उसने देखा कि एक आदमी उनके सोने के कमरे से बाहर निकल रहा था तो वह चीख पड़ी। इससे राजा की ऑख खुल गयी।

फिर रानी ने देखा कि कुछ खून उसके पैरों की उँगलियों पर लगा है तो उसको लगा कि शायद कोई राक्षस उसके कमरे में आया था। वह डर के मारे पागल सी हो गयी। राजा की भी ऑख ठीक उसी समय खुली जब उसका बड़ा बेटा कमरे से बाहर जा रहा था सो उसने भी किसी को बाहर जाते देखा।

राजा चिल्लाया — "हॉ जैसा तुमने कहा यह ठीक है। मुझे अब अपने बेटों की धोखाधड़ी और नीचता पर विश्वास हो गया है। कल ही मैं उन चारों को मरवाने का हुकुम देता हूँ। ऐसे नीच लोगों को ज़िन्दा रहने का कोई अधिकार नहीं है।"

रानी ने भी मौका देख कर राजा की हॉ में हॉ मिलायी। जब वह इस धक्के से ठीक से बाहर आ गयी तो उसने राजा को वह सब बताया जो उसने सुना था और साथ में उसने उसमें कुछ और भी मिर्च मसाला मिला दिया। उसने राजा को खून लगे अपने पैर भी दिखाये।

यह सब सुन कर और राजा ने खुद भी जो कुछ देखा था उसे मिला कर उसने निश्चय किया कि वह इन चारों को जल्दी से जल्दी सजा देगा। उसने कहा — "बेशक जब मेरे लड़कों ने देखा कि वे अपनी ज़िन्दगी में खुद मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचा पा रहे हैं तो उन्होंने राक्षसों की सहायता ली। अच्छा हुआ भगवान ने हमें बचा लिया।"

यह सुन कर रानी की खुशी की कोई हद नहीं थी। उसने सोचा आखिर उसकी इच्छा पूरी हो ही गयी। उसकी ऑखों में चमकीले सपने तैरने लगे।

उसने देखा कि उसके अपने बेटे बड़े चतुर और अक्लमन्द हो कर उस देश पर राज कर रहे हैं। देश के सारे लोग उनकी बड़ाई कर रहे हैं और दूसरे देश उनकी इज़्ज़त कर रहे हैं।

वह बड़े उतावलेपन से उस दिन का इन्तजार करने लगी जब उसकी इस इच्छा को पूरी होने में जो जो कठिनाइयॉ हैं वे दूर हो जायेंगी।

अगली सुबह ही राजा अपने काउन्सिल वाले कमरे में गया अपने दोस्तों रिश्तेदारों और सलाहकारों को बुलवाया और अपने चारों बेटों को जो अब बन्दी थे अपने सामने लाने के लिये कहा। उनके शाही कपड़े उतरवा लिये गये थे। उनके हाथ जेल की सीली और गन्दी दीवारों को छूने से गन्दे हो गये थे जहॉ वे करीब करीब सारी रात बन्द थे।

वे बहुत दयनीय हालत में लग रहे थे पर फिर भी वे दुखी नहीं थे। उनके चेहरों पर आशा की मुस्कुराहट खेल रही थी।

जब चारों राजकुमार उस कमरे में घुसे तो उस कमरे में चुप्पी छायी हुई थी। वे उस जगह की तरफ बढ़े जहॉ उनको खड़े हो कर अपना फैसला सुनना था। कुछ मिनटों बाद ही राजा ने गुस्से में भर कर कॉपते हुए कहा कि जो कुछ भी उन्होंने किया उसकी सजा मौत

है इसलिये उनको माफ नहीं किया जा सकता और उसने उनको मारने की सजा सुना दी।

सजा सुनने के बाद सजा देने वाले राजकुमारों की तरफ बढ़े और उन्होंने उन्हें पकड़ा तो वहाँ बैठे कुछ मन्त्रियों और लोगों ने पूछा कि राजकुमारों का अपराध क्या था। पर राजा ने उनकी कोई बात नहीं सुनी। उसने कहा — "अभी तो इनको मार दो इनका अपराध मैं बाद में बताऊँगा।"

इसी पल एक राजकुमार ने अपना हाथ उठा कर इशारा किया और सिंहासन के सामने लेट गया जैसे वह कुछ कहना चाहता हो। राजा बोला — "इसको बोलने दो। शायद यह अपने दिल के बुरे भेदों को खोल देना चाहता है। बोलने दो इसको बोलने दो।"

राजकुमार बोला — "ओ बड़े और दयालु राजा मेरे पिता। इससे पहले कि मैं मरूँ आप मेरी सुनें। बहुत पुरानी बात है कि एक व्यापारी था जिसके एक अकेला बेटा था। वह बहुत ही अच्छा था हर काम में बहुत होशियार था।

एक दिन उसके पिता ने सोचा कि उसको दुनियाँ का अनुभव कराया जाये सो उसने उसको एक लम्बी विदेश यात्रा के लिये तैयार किया। वह उसको कुछ माल ले कर विदेश भेजना चाहता था।

एक हफ्ते के अन्दर अन्दर वह लड़का अपनी यात्रा के लिये तैयार हो गया और यात्रा पर चल दिया। अपनी यात्रा में वह बहुत

सारे अजीब अजीब लोगों से मिला और उसने बहुत सारी अजीब अजीब चीज़ें देखीं।

मैं राजा और यहॉ पर मौजूद लोगों का बहुत सारा समय उस यात्रा का हाल बताने में लगा सकता हूँ पर इस समय यहॉ मैं केवल एक घटना को ही बताने की इजाज़त चाहूँगा।

अपनी यात्रा के बीच वह नौजवान व्यापारी चार आदमियों से मिला जो एक कुत्ते के ऊपर आपस में बहुत ज़ोर से लड़ रहे थे। वे उस कुत्ते को बहुत ही बेरहमी से अपनी अपनी तरफ खींच रहे थे।

उसने पूछा — "आप लोग इस तरह से क्यों लड़ रहे हैं।"

उनमें से एक ने कहा — "हम चारों भाई हैं। हमारे पिता अभी कुछ दिन हुए मर गये हैं। हम लोग उनके छोड़े हुए सामान को आराम से बॉटने के इन्तजाम में लगे हुए हैं। बाकी सब सामान तो ठीक से बॅट गया बस अब यह कुत्ता रह गया बॉटने के लिये।

हम लोगों ने एक एक गाय ले ली बराबर चावल ले लिया दूसरे अनाज भी बॉट लिये भेड़ बकरियॉ भी बराबर बराबर बॉट लीं पर इस कुत्ते को हम नहीं बॉट सकते ताकि यह हमें बराबर बराबर मिल जाये।

इसलिये सबसे बड़ा भाई कहता है कि इसे मैं लूँगा और उसको पकड़ने की कोशिश करता है। मैं चाहता हूँ कि इसे मैं लूँ सो मैं इसे अपनी तरफ खींचता हूँ। मेरे दूसरे दोनों भाई भी इसको लेना चाहते हैं सो वे भी इसको लेने के लिये इसको अपनी तरफ खींचते हैं।

तुम सोच रहे होगे कि ये चारों इस छोटी सी बात पर क्यों लड़ रहे हैं पर बात यह है कि यह कोई मामूली कुत्ता नहीं है। हम लोगों में से कोई भी अपना हक इस कुत्ते पर से छोड़ देता अगर उसको यह पता न होता कि यह कोई मामूली कुत्ता नहीं है।

हमारे पिता ने जब वह मरे थे तो हमसे कहा था कि हम इसे बीस हजार रुपये का बेचें पर कोई भी हमें इस कुत्ते का इतना पैसा देने को तैयार नहीं है।

हम इसको बाजार ले कर गये और इसकी कीमत बतायी तो लोग हम पर हॅसने लगे। कुछ ने सोचा कि हम पागल हैं। कुछ ने कहा कि क्या हम मजाक कर रहे हैं। और कुछ ने हमारी इस बेवकूफी के लिये हमें मारा भी।"

नौजवान व्यापारी बोला — "बड़ी अजीब सी कहानी है। क्या तुम लोग इसे कुछ कम दाम में नहीं बेच सकते?"

चारों भाइयों ने एक आवाज में कहा — "नहीं। हम अपने मरे हुए पिता की आज्ञा को नहीं टाल सकते जिन्होंने हमें इस बारे में खास हिदायत दी थी।"

नौजवान व्यापारी ने उन पर विश्वास किया और यह सोचते हुए कि यह कुत्ता किसी न किसी तरीके से मामूली कुत्ता नहीं होगा वह बोला — "ठीक है मैं इसको खरीद लेता हूॅ।"

इसके अलावा उसके पिता ने उसको चेतावनी भी दी थी कि वह अपने पहले सौदे के मौके को खोये नहीं चाहे वह उसके फायदे का

हो या उसमें उसको कोई नुकसान हो। उसने तुरन्त ही उनको पैसे दिये और वह कुत्ता उनसे ले लिया। आगे के पूरे रास्ते वह अपने व्यापार में फलता फूलता रहा।

कुछ साल बाद वह अपने पिता के पास एक बहुत ही अमीर और अनुभवी व्यापारी बन कर लौटा। उसको अपनी यात्रा से लौटे हु अभी कुछ ही समय हुआ था कि उसके पिता चल बसे। बिजनैस के हिसाब किताब में कुछ घपला होने की वजह से वह कुछ ही दिनों में बहुत गरीब हो गया। उसके पास पहने हुए कपड़ों के अलावा और कुछ भी नहीं बचा सिवाय उस कुत्ते के जो उसने इतना मॅहगा खरीदा था।

इस दुख की घड़ी में वह एक और व्यापारी के पास गया जो उसके परिवार का बड़ा अच्छा दोस्त था। उससे उसने उस कुत्ते के ऊपर पन्द्रह हजार रुपये उधार मॉगे। इस व्यापारी ने उसको तुरन्त ही रुपये दे दिये। यह पैसा ले कर नौजवान व्यापारी ने कुछ व्यापार किया और कुछ ही दिनों में थोड़ा पैसा कमा लिया।

इस बीच दूसरा व्यापारी उस कुत्ते को बहुत प्यार करने लगा। वह उसको दिन भर अपने साथ रखता और रात को उसे अपने ऑगन में गड़ी एक खूँटी से बॉध देता। कुत्ता भी अपने नये मालिक से बहुत प्यार करता था और जब वह उसके साथ नहीं होता था तो खुश नहीं रहता था।

एक रात उस जानवर की वफादारी का इम्तिहान हो गया। जब हर आदमी सोया हुआ था और चारों तरफ घनघोर अँधेरा छाया हुआ था कुछ डाकू उस व्यापारी के घर में आ गये। हालाँकि वे बड़ी चुपचाप उसके घर में आये थे लेकिन कुत्ते के कानों ने उनके आने की आवाज सुन ली।

उसने बड़ी ज़ोर ज़ोर से भौंक कर घर के लोगों को जगाने की कोशिश की पर कोई नहीं जागा। वह भौंकता रहा ज़ोर ज़ोर से भौंकता रहा जब उसने देखा कि डाकू घर में घुस गये तो वह बहुत ज़ोर से अपनी जंजीर को अपनी पूरी ताकत से तोड़ने के मतलब से उनकी तरफ दौड़ा।

आखिर जब डाकू उस व्यापारी का सामान ले कर वहाँ से बाहर जा रहे थे कुत्ते की जंजीर टूट गयी। कुत्ता भागा भागा गया और वह उन पर कूद पड़ता कि उनके हाथों में हथियार देख कर रुक गया। उसको लगा कि इस तरह तो वह मारा भी जा सकता है। पर उसके मारे जाने से तो उसका उद्देश्य पूरा नहीं होता था। उसने सोचा कि इससे अच्छा तो यह है कि वह उनका पीछा करे और यह देखे कि उन्होंने उसके मालिक की चीज़ें कहाँ छिपायी हैं।

डाकू लोग जल्दी जल्दी चल कर बहुत दूर एक जंगल में चले गये और वहाँ जा कर एक बड़ा सा गड्ढा खोद कर उस व्यापारी का सामन उन्होंने उसमें गाड़ दिया। उन्होंने सोचा जब डाके की

खबर कुछ शान्त पड़ जायेगी तब वे फिर कभी वहॉ आयेंगे और उन चीज़ों को निकाल लेंगे।

सामान गाड़ कर डाकू तो चले गये पीछे से कुत्ता वहॉ आया और अपने पंजों से वहॉ की जमीन खरौंची ताकि वह उस जगह को फिर पहचान सके और वहॉ से चला गया।

अगली सुबह जब व्यापारी उठा तो उसने देखा कि उसका सामने का दरवाजा तो चौपट खुला पड़ा है। उसके बक्से और आलमारियॉ भी खुले पड़े हैं। उनमें रखी चीज़ें इधर उधर बिखरी पड़ी हैं।

उनको इस हालत में देख कर वह रो पड़ा और बोला कि लगता है कि रात को डाकू आये थे और उसका सारा सामान ले गये। उसके चिल्लाने की आवाज सुन कर उसके पड़ोसी भी आ गये वे भी उसके साथ साथ रोने लगे।

उनमें से एक आदमी बोला — "अफसोस हमने कुत्ते के भौंकने पर ध्यान दिया होता।"

दूसरा बोला — "यकीनन उसने तुम्हें जगाया भी होगा।"

बेचारा व्यापारी बोला — "नहीं।"

जब कुत्ते का जिक्र आया तो व्यापारी ने कुत्ते को अपने सामने बिठा कर उसे पागलों की तरह प्यार करते हुए उससे कहा — "काश तू बोल सकता और मुझे बता सकता कि कौन मेरा सामान ले गया।"

इस पर कुत्ता व्यापारी के कुरते की दॉयी आस्तीन अपने दॉतों में पकड़ कर खींचते हुए उसे दरवाजे की तरफ ले जाने लगा। यह देख कर एक पड़ोसी बोला — "शायद यह कुत्ता जानता है कि उन्होंने तुम्हारा सामान कहॉ छिपाया है। मेरी मानो तो तुम इसके पीछे पीछे जाओ।"

व्यापारी मान गया और कुत्ते के पीछे पीछे चल दिया। कुत्ता उसको बहुत दूर जंगल में वहॉ ले गया जहॉ डाकुओं ने उसका सामान गाड़ा था। वहॉ जा कर उसने जमीन खरोंचनी शुरू की और उसकी मिट्टी निकाल कर ज़ोर ज़ोर से बाहर फेंकने लगा।

व्यापारी ने भी अपने दोस्तों के साथ उस जगह को खोदा तो उसको वहॉ अपनी चुरायी हुई चीज़ें मिल गयीं। व्यापारी तो यह देख कर बहुत ही खुश हो गया।

जैसे ही उसको अपनी चीज़ें वापस मिलीं उसने उनको घर में ला कर एक सुरक्षित जगह ला कर रख दिया और उस नौजवान व्यापारी जिसका यह कुत्ता था उसको लिखा — "ओ अक्लमन्दी बहादुरी और अच्छाई के घर और सबके प्यारे आदमी तुमको मेरा सलाम। यह कहने के बाद कि मैं तुमसे मिलने के लिये बहुत उत्सुक हूॅ मैं यह कहना चाहता हूॅ कि मैं तुम्हारा हमेशा कृतज्ञ रहूॅगा।

कुछ समय पहले तुमने मुझे एक कुत्ता दिया था। उस कुत्ते ने आज मुझे बरबाद होने से बचा लिया। मैं तुमसे एक विनती करता हूॅ कि तुम उसे मुझे बेच दो। तुम उसे मुझे तीस हजार रुपये में दे

दो। पन्द्रह हजार तो मैं तुम्हें दे ही चुका हूँ पन्द्रह हजार का एक चैक मैं तुम्हें इस चिट्ठी के साथ भेज रहा हूँ। अगर तुम मेरी यह विनती मान लोगे तो मैं तुम्हारे लिये आशीर्वाद की हमेशा दुआ माँगता रहूँगा।"

यह चिट्ठी लिख कर उसने बन्द की और उस कुत्ते के मुँह में दे कर उसके पुराने मालिक के पास भेज दिया। जब नौजवान व्यापारी ने अपने कुत्ते को अपने घर की तरफ आता हुआ देखा तो उसने सोचा कि वह कुत्ता उस व्यापारी के घर से भाग आया है। अब उसका मालिक भी उसके पीछे पीछे जल्दी ही आता होगा और अपना पैसा माँगेगा जो उसके लिये अभी देना आसान नहीं होगा सो उसने उसे मारने का फैसला किया।

उसने सोचा कि जब वह व्यापारी उससे पैसे माँगने आयेगा तो वह उससे कहेगा कि पहले मेरा कुत्ता दो तब में तुम्हारा पैसा दूँगा। वह तुरन्त ही अपनी बन्दूक निकाल लाया और उस पर गोली चला दी। कुत्ता वहीं मर गया।

पर अफसोस बहुत अफसोस। जैसे ही उसने कुत्ता मारा और वह उसको गाड़ने के लिये ले जाने वाला था कि उसके मुँह से व्यापारी की दी हुई चिट्ठी गिर पड़ी। उसने उसे उठा कर खोल कर पढ़ा तो वह तो बेहोश हो कर नीचे गिर पड़ा।

राजकुमार ने यह कहानी इतने भावपूर्ण ढंग से सुनायी कि राजा और वहाँ बैठे सभी लोगों की आँखों में आँसू आ गये। दरबार में चुप्पी छा गयी।

कुछ पल बाद राजकुमार ने फिर कहा — "राजा साहब आपने हमारी सजा सुनाने में कुछ जल्दी की है। हम लोग उस कुत्ते की तरह ही सीधे सादे हैं। आप उस नौजवान व्यापारी की तरह जिसके बारे में मैंने अभी आपसे कहा अपने इस काम पर पछतायें नहीं इसलिये आप अपने फैसले को दोबारा से सोच समझ लें।"

राजा बोला — "मेरा हुकुम अटल है। मुझे किसी से कुछ नहीं सुनना।"

तब दूसरा राजकुमार राजा के सिंहासन के सामने झुका और राजा से विनती की कि उसको भी कुछ कहने की इजाज़त दी जाये।

राजा ने धीरे से अपना हाथ हिलाते हुए कहा — "बोलो इजाज़त है।"

तब दूसरे राजकुमार ने शुरू किया — "राजा साहब बहुत पहले की बात है कि एक शिकारी रहता था जो अपना गुजारा जंगल में केवल जंगली जानवर मार कर ही करता था। एक दिन ऐसा हुआ कि उसको जंगल में कोई शिकार नहीं मिला। इससे वह बहुत दुखी था क्योंकि अब उसके घर में कल के लिये कोई खाना नहीं था।

सो वह तीन दिन तक जंगल में इस आशा में इधर उधर घूमता रहा कि शायद उसको कहीं कुछ मिल जाये। आखिर वह एक मकान के सामने आ गया जहॉ कुछ शिकारी बैठे हुए थे।

उन्होंने उससे पूछा कि वह कौन था और कहॉ से आया था। जब उन्होंने यह सुना कि वह खाने की तलाश में था और उसने तीन दिनों से कुछ खाया पिया नहीं था तो उन्होंने उसको कुछ मॉस और रोटी खाने के लिये दी और उससे वायदा किया कि वे उसको एक ऐसी जगह ले जायेंगे जहॉ उसको शिकार बहुतायत से मिल जायेंगे।

अच्छा खाना खाने के बाद और खूब सो लेने के बाद जब वह ताजादम हुआ तो एक शिकारी उसको एक तरफ ले कर गया। वहॉ जा कर उसने एक बारहसिंगा मारा और कुछ छोटे शिकार किये। एक दो चिड़िया भी मारीं जिनको दूसरे शिकारी छूना भी पसन्द नहीं करते।

उन्होंने कहा "नहीं नहीं ये तुम्हारे हैं। तुम इनको अपने घर अपनी पत्नी और बच्चों के पास ले जाओ जो अब तक बेचारे भूख से बिलख रहे होंगे। हम तुम्हें अपने साथ देर तक नहीं रखना चाहते क्योंकि तुम अपने घर जाने के लिये बहुत बेचैन होगे। फिर भी हम आशा करते हैं कि हम तुमसे बहुत जल्दी ही मिलेंगे।"

शिकारी ने उनको बहुत बहुत धन्यवाद दिया और कहा कि बेशक मैं तुम लोगों से अक्सर मिलता रहूॅगा और तुम जैसे दोस्तों की सहायता करने के लिये हमेशा तैयार रहूॅगा। अगर तुम सबने मेरी

यह छोटी सी सहायता न की होती तो मेरा परिवार तो आज मर ही गया होता। हम तुम फिर मिलेंगे। कह कर वह वहॉ से चला गया।

जब वह अपने घर पहुँचा तो भूख से उसने अपने परिवार को करीब करीब मरा हुआ ही पाया। वे उसके लौटने का इन्तजार कर रहे थे। इन्तजार करते करते वे बीमार से हो गये थे सो उसने तुरन्त ही आग जलायी और कुछ मॉस उस पर भूना और उन्हें खाने को दिया।

अगले दिन वे कुछ ठीक हो गये थे तो उन्होंने एक दूसरे को अपना अपना हाल बताया। शिकारी ने बताया कि जंगल में उसको कुछ शिकारी मिल गये थे जिन्होंने उसकी सहायता की।

कुछ दिन बाद शिकारी ने अपनी पत्नी से कहा कि वह अपने उन शिकारी दोस्तों से मिलने जंगल जाना चाहता है जैसा कि उसने उनसे वायदा किया था कि वह उनसे मिलने जरूर आयेगा।

सो उसने उनके लिये कुछ भेंटें लीं और उनसे मिलने चल दिया। वे शिकारी उस शिकारी को देख कर बहुत खुश हुए और उससे बड़ा अच्छा बरताव किया। वह उनके पास कई दिन ठहरा वहॉ उसने इस बीच बहुत सारे शिकार भी मारे।

वहॉ यह भी तय हुआ कि उस शिकार पार्टी के सरदार की लड़की की शादी उसके लड़के से कर दी जाये क्योंकि इस तरह से दोनों परिवार दोस्ती के अलावा रिश्तेदारी में भी बॅध जायेंगे।

कुछ समय बाद दोनों की शादी हो गयी और दुलहा अपने ससुर के घर सोने गया। वह वहॉ गया और जा कर सो गया। बीच रात में गीदड़ के चिल्लाने की आवाज सुन कर दोनों की ऑख खुल गयी।

अब ऐसा हुआ कि दुलहिन जानवरों की बोली समझती थी सो वह जागी हुई उनका बोलना सुनती रही। उसने सुना कि एक गीदड़ दूसरे गीदड़ से कह रहा था कि एक लाश नदी में बही जा रही है। उसकी बॉह पर एक ब्रेसलैट है जिसमें पॉच कीमती रत्न जड़े हुए हैं। ऐसा आदमी कहॉ है जो उस लाश को किनारे पर खींच ले और उसका वह कीमती रत्नों वाला ब्रेसलैट निकाल ले।

इस तरह वह तीन अच्छे काम करेगा। एक तो वह नदी को गन्दा होने से बचायेगा। दूसरे वह उन पॉच कीमती रत्नों को नदी में बेकार ब्हने से बचायेगा और तीसरे हम जैसे गरीब जानवरों को खाना देगा।

दुलहिन ने जब यह सुना तो वह तुरन्त ही अपने बिस्तर से उठी और नदी की तरफ चल दी। उसके पति को उत्सुकता हुई कि वह कहॉ जा रही थी सो वह भी उठ कर उसके पीछे पीछे छिप कर चल दिया। जब वह नदी किनारे पहुॅची तो वह पानी में कूद गयी और लाश की तरफ तैर गयी जो चॉदनी में बहुत ही धुॅधली दिखायी दे रही थी।

उसने लाश को पकड़ा और पकड़ कर नदी के किनारे ले आयी। उसने उसका वह सुन्दर ब्रेसलैट निकाल लिया जो उसकी एक बॉह पर बँधा था और घर आ गयी।

उसका पति पहले ही घर आ गया था क्योंकि उसने उसका लाश की बॉह से ब्रेसलैट उतारने तक इन्तजार नहीं किया। दुलहिन भी घर आ कर सो गयी। दुलहे ने सोचा कि यह इतनी रात गये वहॉ नदी के किनारे क्या करने गयी थी। यह सोचते सोचते वह रात भर सो नहीं सका पर उसकी पत्नी खूब गहरी नींद सोती रही।

जैसा कि रिवाज था पति सुबह उठ कर नदी पर नहाने गया तो उसकी तो डर के मारे जान ही निकल गयी। वह डर और घृणा से देखता रह गया कि वहॉ एक आदमी की आधी खायी हुई लाश उसी जगह पड़ी हुई थी जहॉ कल रात उसकी पत्नी पानी में कूदी थी। उसके मुँह से निकला कि क्या उसकी पत्नी राक्षसी थी। उसने उसके शरीर का कुछ हिस्सा खा लिया था और यकीनन वह आज रात को इस बचे हुए हिस्से को खाने वापस आयेगी।

यह सोच कर वह उसके पास जाने से डरने लगा और वह उसके घर न जा कर फिर अपने पिता के घर लौट गया। घर पहुँच कर उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी आपने मेरी शादी एक राक्षसी से क्यों की। मुझे पूरा यकीन है कि वह एक राक्षसी है क्योंकि कल रात वह एक आदमी को मार कर उसे खा कर आयी थी।

अगर आपको इस बात का यकीन न हो तो आप नदी के किनारे जा कर वहॉ पड़ी हुई एक आदमी की आधी खायी हुई लाश देख सकते हैं। ओह मैं भी कितना बदकिस्मत हूँ।"

जब शिकारी ने यह सुना तो उसे लगा कि या तो उसका बेटा सच नहीं बोल रहा या फिर वह पागल हो गया है सो उसने जल्दी से जल्दी ही इस मामले की छानबीन करनी शुरू की।

वह अपनी बहू के घर गया। जब वह उसके घर से थोड़ी ही दूर पर था तो उसकी बहू का पिता और परिवार के कुछ और लोग उसका स्वागत करने के लिये वहॉ तक आये। उन्होंने उससे उसके बेटे के वहॉ से अचानक चले जाने की वजह भी पूछी।

जब तक कि बहू के बारे में सच न पता चल जाये शिकारी ने बात को टालने के ख्याल से उनको अपने बेटे के बारे में कोई भी चिन्ता करने से मना कर दिया क्योंकि वह तो सुरक्षित रूप से उसके घर पर ही मौजूद था।

उसने कहा कि लड़का बहुत बड़ा नहीं था इसलिये उसने उसे जल्दी ही घर वापस आने के लिये कह दिया था। उसने कहा कि उसको आशा थी कि वह उसके इस अजीब व्यवहार के लिये उसे माफ करेंगे और बहू को उसके साथ भेज देंगे।

दूसरे शिकारी इस बात से सन्तुष्ट हो गये और उन्होंने बहू को उस शिकारी के साथ उसकी ससुराल भेज दिया। थोड़ा सा खाना

खाने के बाद लड़के का पिता शिकारी बहू को साथ ले कर घर चल दिया।

उसने बहुत जल्दी ही उसके पीछे पीछे चलना शुरू कर दिया क्योंकि वह उसके बराबर चलने से डर रहा था ताकि कहीं वह सचमुच में ही राक्षसी न हो और उसे न खा जाये।

इस तरीके से वे कुछ दूर चलते रहे कि लड़की चलते चलते थक गयी और पानी के एक छोटे से तालाब के पास एक बड़े से पेड़ की छाया में बैठ गयी। शिकारी ने अपने इस विचार को बढ़ावा दिया कि शायद उसके बेटे ने कोई बुरा सपना देखा होगा सो वह भी उसके पास ही बैठ गया। उसने लड़की के पिता का दिया हुआ कुछ खाने का सामान निकाला और दोनों खाने लगे।

जब वे इस तरह बैठे हुए थे खा रहे थे और आराम कर रहे थे तो कुछ कौए वहॉ आ कर इकट्ठा हो गये और बहुत ज़ोर ज़ोर से शोर मचाने लगे। वे एक शाख से दूसरी शाख पर और एक पत्थर से दूसरे पत्थर पर कूद रहे थे पर उनकी ऑखें उन दोनों के पास रखे हुए मॉस पर लगी थीं जैसे जैसे ही उनको मौका मिलेगा वे उसको ले जायेंगे।

उनमें से एक कौआ जो बूढ़ा था कुछ दोस्ती सी दिखाना चाह रहा था। उसने कहा कि कौन है वह जो हमारी भाषा सुन सकता है और समझ सकता है। इस पेड़ की जड़ के पास एक बरतन भर कर

कीमती पत्थर हैं और इस बरतन के नीचे हजारों चींटियॉ हैं जो इस पेड़ को खाये जा रही हैं।

ओह वह आदमी कहॉ है जो इस पेड़ की जड़ के पास से खोद कर वह बरतन निकाल ले। इससे यह पेड़ भी बच जायेगा और हम भी इस पेड़ की शाखों पर अपना घोंसल बना सकेंगे। इसके अलावा वह खुद भी बहुत अमीर बन जायेगा।

लड़की यह सुन कर एक बार रो लेती और एक बार हॅस लेती। यह देख कर उसका ससुर डर गया। उसने सोचा कि वह हॅस और रो इसलिये रही थी क्योंकि वह एक राक्षसी थी और इस तरह से उसे खाने के लिये ध्यान कर रही थी।

डर के मारे वह कॉपती आवाज में उससे बोला — "तुम किस तरह की औरत हो। अगर तुम राक्षसी हो तो मैं तुमसे प्रार्थना करता हूॅ कि तुम मुझे छोड़ दो।"

ससुर के ये शब्द सुन कर लड़की को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बाली — "पिता जी मैं किसी बुरे स्वभाव की नहीं हूॅ। आपने मुझमें ऐसा क्या देखा या मेरे बारे में ऐसा क्या सुना जिसकी वजह से आपने मुझसे यह सवाल किया।"

उसने पूछा — "फिर वह आधी खायी हुई लाश नदी के किनारे कहॉ से आयी और अभी तुम रोयी और हॅसी क्यों।"

बहू बोली — "अब मैं आपको क्या बताऊॅ। क्या आप केवल इन्हीं वजहों से मुझे राक्षसी समझ रहे हैं। क्या इसी वजह से आपका

बेटा और मेरे पति मेरे घर से बिना बताये चले गये। क्या इसीलिये आप मेरे पीछे पीछे चल कर यहॉ तक आये।

क्या बेवकूफी थी यह भी। अब आप सच्चाई सुनें। जिस दिन आपका बेटा मेरे पिता के घर रात को आया था उस रात गीदड़ बहुत चिल्ला रहे थे और वे इतना चिल्लाये कि हम दोनों की ऑख खुल गयी। वे बहुत देर तक बहुत लम्बी बात करते रहे।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि उन्होंने एक लाश नदी में तैरती देखी थी जिसकी एक बॉह पर एक पॉच कीमती रत्न जड़ा ब्रेसलैट था। मैंने उनकी भाषा समझ ली तो मैंने सोचा क्यों न मैं वहॉ जा कर उस नदी से वह लाश खींच लाऊॅ और उसकी बॉह से वह ब्रेसलैट निकाल लूॅ। देखिये यह है वह ब्रेसलैट।"

कह कर उसने वह ब्रेसलैट जो एक मैले से कपड़े में लिपटा हुआ था अपने ससुर को दिखाया। उसने आगे कहा — "वह लाश मैं वहीं छोड़ आयी। हो सकता है कि वे गीदड़ वहॉ बाद में आये हों और उन्होंने उसको खा लिया हो। आप यकीन रखें यह काम मेरा नहीं है।

वही आधी खायी हुई लाश शायद आपके बेटे ने अगली सुबह नदी के किनारे देखी होगी जब वह वहॉ नहाने गये होंगे। क्योंकि मुझे लगता है कि उन्होंने रात को नदी पर मेरा जाना भी देख लिया था। सो उन्होंने सोचा कि मैं राक्षसी हूॅ और मैंने ही वह लाश खायी है और यही सोच कर वह भाग गये।"

यह कह कर वह बहुत ज़ोर से हॅस पड़ी। शिकारी भी उसकी इस बात पर हॅसे बिना न रह सका।

वह फिर बोली — "और अब फिर से। अभी अभी एक कौआ यहॉ एक शाख पर बैठा था और कॉव कॉव करके यह कह रहा था कि इस पेड़ की जड़ के पास एक बहुत बड़ा खजाना छिपा है। चिड़ियों की भाषा समझ पाने की वजह से ही मैं खुशी से हॅसी भी और रोयी भी कि मुझे लगा कि मुझे फिर खजाना मिल जायेगा जिससे मैं अपने परिवार में खुशी भी लाऊॅगी और खुशहाली भी।

क्या यह बात ठीक नहीं है। मेहरबानी करके आप यह न सोचें कि मैं राक्षसी या वैसी ही कोई और हूॅ। मैं आपके बेटे की वफादार पत्नी बनना चाहती हूॅ और आप सबका भला करना चाहती हूॅ।"

शिकारी यह सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने अपनी बहू की बात पर विश्वास कर लिया। उसके बाद उन दोनों ने मिल कर पेड़ की जड़ के पास खोदा तो उनको वहॉ बहुत सारे कीमती रत्न और दूसरा खजाना मिला।

यह देख कर शिकारी इतना खुश हुआ कि उसने अपनी बहू को गले लगा लिया और उन दोनों को माफ करने के लिये कहा कि उनको उसके बारे में गलतफहमी हो गयी थी।

खजाना निकाल कर दोनों अपने घर की तरफ चले। वे एक बहुत सुन्दर सड़क से हो कर जा रहे थे। सारे रास्ते छायादार पेड़

खड़े थे। सड़क के किनारे फूल भी लगे हुए थे। इधर उधर से झरने निकल कर बह रहे थे।

शिकारी को प्यास लगी थी सो उसने अपनी बहू से उन झरनों में से एक झरने से पानी लाने के लिये कहा। वह तुरन्त ही उसकी बात मान कर पानी लाने चली गयी। वह पानी लेने के लिये झुकी कि तभी एक मेंढक टर्राया — "भगवान के नाम पर क्या कोई सुन रहा है। इस पानी के नीचे एक खजाना दबा है इसलिये इस पानी में इतने कीड़े हैं।

जो कोई मुझे सुन रहा है तो क्या वह यह खजाना निकालेगा जिससे यह पानी पीने लायक हो जायेगा और यात्री लोग इस पानी को पी पायेंगे। मेंढक भी इस पानी में रह कर आनन्द करेंगे और उनका पेट भी खराब नहीं होगा और जो इस खजाने को निकालेगा वह तो अमीर हो ही जायेगा।"

यह सुन कर बहू तुरन्त ही अपने ससुर के पास गयी और जा कर उसको सब बताया तो उन दोनों ने उस पानी में से खजाना निकाल लिया। वह खजाना निकाल कर शिकारी और उसकी बहू ने अपनी कमर में बॉधा[46] और अपनी यात्रा पर चल दिये।

जब वे अपने घर के पास पहुॅचे तो शिकारी ने अपनी बहू से कहा कि वह आगे आगे चले वह उसके पीछे आता है। उसने ऐसा

[46] Kashmiris have various devices for carrying their money or other little valuables. Sometimes they hide it in their turbans, sometimes in their Kamarband, sometimes in their sleeve-cuffs, sometimes in their ears if the thing is small, sometimes tied up in the small knot in the end of their wrap.

ही किया। जब उसके पति ने उसको अकेले आते देखा तो उसके दिमाग में तुरन्त ही एक विचार आया कि लगता है इसने मेरे पिता को खा लिया है और अब यह मुझे खाने आयी है।

सो उसने अपनी तलवार उठायी और जैसे ही वह इस आशा में अन्दर घुसी कि उसका पति उसका स्वागत करेगा और वह उसको खजाना दिखायेगी। सो बजाय स्वागत करने के उसने उसके ऊपर तलवार चला दी और उसे मार दिया।

एक घंटे बाद उसका पिता घर पहुँचा तो उसको देखते ही बेटा बोला — "अल्लाह की मेहरबानी है कि आप ज़िन्दा हैं। आपको उस राक्षसी ने नहीं मारा। पर अब आप खुश हो जाइये मैंने उसे मार दिया है। देखिये उसके खून के निशान दरवाजे पर पड़े हैं।"

जब शिकारी ने दरवाजे पर खून के निशान देखे तो वह तो बेहोश हो कर गिर पड़ा। बहुत देर बाद वह होश में आया। उसको बहुत दुख था पर इससे भी बड़ा दुख तो उसके पति को हुआ जिसने जल्दी में अपनी पत्नी की हत्या कर दी थी।"

जब राजकुमार यह कहानी सुना रहा था तो दरबार में पूरी चुप्पी छायी हुई थी। इस कहानी से ऐसा लगा जैसे राजा का दिल कुछ नरम हुआ।

राजकुमार ने बाद में कहा — "इसलिये राजा साहब हम आपसे विनती करते हैं कि हमको मारने में आप जल्दी न करें। कहीं ऐसा न हो कि आपको भी हमको मारने के बाद पछताना पड़े।"

पर राजा ने अपना दिल पक्का कर लिया था और वह कुछ सुनने के लिये तैयार नहीं था।

तब तीसरा राजकुमार उठा और राजा के सिंहासन के सामने झुक कर उससे बोलने की इजाज़त मॉगी। इजाज़त मिलने पर उसने बोलना शुरू किया — "राजा साहब अब मेरी बात सुनिये। बहुत दिन पहले की बात है कि किस देश में एक राजा रहता था। उसका एक ही शौक था बाज़ पालना। एक बार वह एक जंगल में गया तो ऐसी जगह पहुॅच गया जहॉ वह पहले कभी नहीं गया था। वह जगह उसको इतनी सुन्दर लगी कि उसने वहॉ अपने तम्बू गाड़ने का हुकुम दे दिया।

जब यह सब हो गया तो राजा को प्यास लगी तो उसने अपने नौकरों को पानी लाने के लिये कहा। रीति रिवाज के अनुसार राजा के दॉये हाथ में एक तलवार थी उसके बॉये हाथ पर एक बाज़ बैठा हुआ था और उसके सामने उसका शाही झंडा था।

नौकर पानी ले कर आया तो जैसे ही राजा पानी पीने को हुआ कि बाज़ ने अपने पंख फड़फड़ाये जिससे उसका पानी का गिलास हिल गया और उसका पानी बिखर गया। नौकर पानी भर कर दूसरा गिलास ले आया पर बाज़ ने फिर से अपने पंख फड़फड़ाये और राजा के गिलास का पानी फिर से बिखेर दिया।

इस बार राजा बहुत गुस्सा हो गया और ज़ोर से चिड़िया को डॉटा। नौकर फिर गया और राजा के लिये एक गिलास पानी का

फिर से ले आया। जैसे ही राजा उससे गिलास ले कर उसे अपने मुँह से लगाने को था कि बाज़ ने फिर पंख फड़फड़ाये और पानी फिर से बिखेर दिया। अबकी बार राजा बहुत गुस्सा हो गया। उसने अपनी तलवार उठायी और बाज़ को मार दिया।

जब ऐसा कई बार हो गया तो एक वजीर जो यह सब ध्यान से देख रहा था बोला — "राजा साहब ऐसा लगता है कि बाज़ की इस लगातार फड़फड़ाहट की जरूर कोई वजह रही होगी। शायद इस गिलास में ही कुछ खराबी हो।"

राजा को इस बात में कुछ सच्चाई लगी तो उसने उस नदी को जहाँ से उसके लिये पानी लाया गया था अच्छी तरह जाँच करने का हुकुम दिया।

कुछ दूर तक तो कुछ नहीं मिला पर फिर वे जब और आगे बढ़े तो वहाँ एक और छोटी नदी उस बड़ी नदी के पानी में मिल रही थी वहाँ उन्होंने देखा कि पानी कुछ हरे से रंग का है। सो वे उस छोटी नदी की तरफ बढ़ते गये जहाँ से वह आ रही थी। कुछ ही दूर जाने पर उन्होंने वहाँ एक अजगर देखा जिसके मुँह से हरे रंग की लार यानी जहर बह बह कर पानी में मिल रहा था।

यह देख कर वे सब डर गये और अपने कैम्प की तरफ जल्दी से भागे। जब राजा ने यह हाल सुना तो वह अपनी छाती पीट पीट कर बहुत रोया — "ओह मैंने अपने रक्षक को मार दिया। मेरा वफादार बाज़ अब नहीं रहा। ओह मुझे अपनी प्यारी चिड़िया के

इस अजीब से व्यवहार की पहले ही जॉच कर लेनी थी तभी कुछ करना था। ओह अब मैं क्या करूँ।"

बाद में राजकुमार आगे बोला — "राजा साहब हमारे पिता जी। हम आपसे विनती करते हैं कि हमको मरवाने से पहले आप इस मामले की अच्छी तरह से जॉच कर लें।"

यह सुन कर राजा कुछ नरम पड़ा। उसको रानी की कहानी पर कुछ शक सा हुआ हालॉकि उसको यह पता नहीं चला कि वह अपने और रानी के पैरों पर लगे खून का और अपने बड़े बेटे के अपने सोने के कमरे में होने का क्या मतलब निकाले।

अब वह अपने सबसे बड़े बेटे की तरफ पलटा जो अभी तक चुपचाप बैठा था और बोला — "जो कुछ भी कल की रात हुआ अगर तुम मुझे उसका ठीक ठीक जवाब दे कर सन्तुष्ट कर दो तो मैं तुमको और तुम्हारे भाइयों को छोड़ दूँगा।"

तब राजा का सबसे बड़ा बेटा सिंहासन के सामने आया और सिर झुका कर बोला — "राजा साहब और हमारे पिता, आपकी अच्छाइयॉ और मेहरबानियॉ सब लोगों को अच्छी तरह मालूम हैं। हमको आपकी इस बात का जवाब देने में कोई हिचक नहीं है क्योंकि हमारी आत्मा साफ है। और हमें यह भी यकीन है कि हमारी कहानी सुनने के बाद राजा साहब हमें फिर से अपना वफादार समझेंगे।

आपने हमें राज्य के पहरे की जिम्मेदारी सौंपी थी। सो एक दिन जब मैं पहरे पर था तो एक मकान के पास से गुजर रहा था। उस मकान में एक ब्राह्मण अपनी पत्नी के साथ रहता था। जब मैं वहॉ था तो उसी समय ब्राह्मण अपने घर से बाहर निकला और ऊपर आसमान की तरफ देख कर "त्राहि त्राहि" कह कर अपने घर के अन्दर घुस गया।

उस समय ब्राह्मण यह व्यवहार मुझे कुछ अजीब सा लगा तो उससे आकर्षित हो कर मैं उस घर के पास चला गया। वहॉ मैंने सुना कि ब्राह्मण अपनी पत्नी से कह रहा था कि राजा के तारे को कोई दूसरा तारा नष्ट करने वाला था जिसका मतलब था कि राजा उस दिन से सातवें दिन मर जायेगा।

उन दोनों में आगे जो बात हुई उससे मुझे पता चला कि एक सॉप राजा को मारने के लिये आसमान से नीचे उतरेगा और महल के पूर्वी दरवाजे से राजा के महल में घुसेगा।

ब्राह्मण ने आगे कहा कि राजा के बचने की कोई उम्मीद नहीं है जब तक कि उनका कोई रिश्तेदार महल के ऑगन में कुछ गड्ढे न खोदे और उनको पानी और दूध से न भरे। फिर वह उस रास्ते पर फूल न बिखेरे जिस पर से हो कर सॉप राजा के कमरे में घुसेगा।

जब सॉप आयेगा तो वह उन पानी और दूध भरे गड्ढों में से तैरता हुआ आयेगा फिर फूलों से हो कर आयेगा जिससे उसका जहरीलापन खत्म हो जायेगा। जो आदमी यह काम करे वह कमरे

के दरवाजे पर नंगी तलवार लिये खड़ा रहे और जब वह अन्दर आने की कोशिश करे तो वह तलवार से उसके टुकड़े कर दे। फिर उसका ताजा गरम खून राजा के पैरों की उँगलियों पर लगा दे। इससे राजा बच जायेगा।

सो हे राजा साहब हमारे पिता। मैंने खुद यह काम करने का बीड़ा उठाया। मैं ही उस समय महल के पूर्वी दरवाजे पर तलवार लिये खड़ा था। जैसा कि ब्राह्मण ने कहा था मैंने गड्ढे खोदे और उनमें पानी और दूध भरा। सड़क पर फूल बिखेरे। और जैसे ही सॉप आया मैंने तलवार से उसके दो टुकड़े कर डाले। फिर उसका गरम खून आपके पैरों की उँगलियों पर लगा दिया।

मैं आपके प्राइवेट कमरे में ऑख खोल कर नहीं जाना चाहता था सो मैंने अपनी ऑखों पर पट्टी बॉधी और तब उसके अन्दर घुसा। बस यहीं मुझसे गलती हो गयी। देख न पाने की वजह से मैंने रानी मॉ के पैरों पर खून लगा दिया। आपके कमरे में कोई राक्षस नहीं घुसा था।

हे राजा साहब हमारे पिता। आप हमारे ऊपर शक क्यों करते हैं। हम तो आपके असली बेटे हैं। आपने रानी मॉ की बात तो सुनी जो अपने बच्चों को यह राज्य दिलवाना चाहती हैं और इसीलिये उन्होंने हमारी बुराई भी की। अब आप हमारी बात भी सुनें। हमने कभी आपको धोखा नहीं दिया और न ही कभी आपको कोई नुकसान पहुँचाने की कोशिश की।"

यह सुन कर राजा का सिर दुख और शर्म से नीचे झुक गया। उसके बाद राजा अपने चारों बेटों को साथ ले कर वे गड्ढे देखने गया जो उसके बड़े बेटे ने खोदे थे और वह जगह भी देखी जहाँ उसने खून से सना कटा साँप फेंका था। उसके बाद वह उस ब्राह्मण के घर गया जिसने यह सब बताया था। उसने उससे उस रात के बारे में बहुत सारे सवाल पूछे। सब कुछ सच पाया गया।

यह सुन कर कि किस तरह चारों राजकुमार जिन्हें मौत की सजा मिलने वाली थी छोड़ दिये गये हैं उस रात शहर में बहुत खुशियाँ मनायी गयीं। इन राजकुमारों को राज्य करने के लिये दे दिया गया। सबसे बड़ा राजकुमार राजा बना और राजा के दूसरे बेटे वजीर बने। वे सब बड़े प्रेम से रहे और उनके अच्छे राज में देश खूब फला फूला।

गरीब ब्राह्मण को भी खूब पैसा दिया गया। नीच रानी को राजा ने छोड़ दिया और उसको राज्य से बाहर निकाल दिया। राजा सन्यास ले कर जंगल चला गया। वहाँ राजा बहुत बूढ़ा होने तक ज़िन्दा रहा।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**